केंद्रीय विद्यालय संगठन क्षेत्रीय कार्यालय रांची

KENDRIYA VIDYALAYA SANGATHAN
REGIONAL OFFICE RANCHI

कक्षा – बारहवीं
अध्ययन सामग्री
इतिहास (027)

2023-24

सत्र के लिए नवीनतम सीबीएसई परीक्षा पैटर्न पर आधारित

हमारे संरक्षक

श्री डी. पी. पटेल
उपायुक्त
के. वि. सं. क्षेत्रीय कार्यालय रांची

श्री सुरेश कुमार सिंह,	**श्रीमती सुजाता मिश्रा,**	**श्री बालेन्दर कुमार**
सहायक आयुक्त	**सहायक आयुक्त**	**सहायक आयुक्त**
केवीएस आरओ रांची	**केवीएस आरओ रांची**	**केवीएस आरओ रांची**

संयोजक – श्री सोमित कुमार, प्राचार्य के. वि. नामकुम
सह संयोजक – श्री प्रवीण के. माथुर, पी. जी. टी.,के. वि. पतरातू

मेरे प्रिय विद्यार्थियों के लिए दो शब्द

केन्द्रीय विद्यालय संगठन, राँची संभाग के 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों हेतु छात्र सहायता सामग्री प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। बारहवीं कक्षा के छात्रों, यह सामग्री आपकी आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए तैयार की गई है। जब आप परीक्षा की तैयारी के अंतिम चरण में होते हैं तब आप एक स्थान पर सभी संभावित प्रश्नों को देख अपने श्रम को एकाग्र कर पाते हैं। इस सहायता सामग्री से प्रश्नों को दोहराना और अभ्यास करना सहज होगा। जब आप आवंटित समय में प्रश्न पत्र पूरा करने की अपनी क्षमता का परीक्षण करना चाहते हों या जब आप अध्ययन करते समय कोई प्रश्न देखते हों तब यह सहायक सामग्री आपकी सहायता हेतु होगा। तैयारी करते समय कभी-कभी तत्काल उत्तर की आवश्यकता है, लेकिन पाठ्य-पुस्तक से खोजने और पढ़ने में समय लगेगा। वैसी स्थिति में जब आप कम समय में पूरी अवधारणा या विचार को समझना और जानना चाहते हैं तब संक्षिप्त सामग्री आपको तुरंत परेशानी से बचा लेगी। यह पिछले सीबीएसई बोर्ड परीक्षा के पेपर और प्रतियोगी परीक्षा के किसी प्रश्न को जानने और समझने में मदद करेगा।

अपने विषयों में विशेषज्ञता रखने वाले समर्पित और अनुभवी शिक्षकों की एक टीम ने कड़ी मेहनत के बाद इस सामग्री को तैयार किया है। केवल उन्हीं वस्तुओं को शामिल करने का ध्यान रखा गया है जो प्रासंगिक हैं और पाठ्य-पुस्तक के अनुरूप हैं। इस सामग्री को एनसीईआरटी पाठ्य पुस्तक के विकल्प के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए बल्कि इसे इसके पूरक के रूप में डिज़ाइन किया गया है। छात्रों की सहायता सामग्री में आपके लिए आवश्यक सभी महत्वपूर्ण पहलू हैं: प्रश्न पत्र का डिज़ाइन, पाठ्यक्रम, सभी इकाइयों/अध्यायों या बिंदुओं में अवधारणाएं, प्रत्येक अध्याय से नमूना परीक्षण आदि । मुझे यकीन है कि सहायक सामग्री का उपयोग छात्रों और शिक्षकों दोनों द्वारा किया जाएगा और मुझे विश्वास है कि यह सामग्री आपको अपनी परीक्षाओं में अच्छा प्रदर्शन करने में मदद करेगी। आनेवाली परीक्षा के लिए शुभकामनाओं के साथ आप यह अवश्य याद रखें मेहनत का कोई विकल्प नहीं है।

डी.पी.पटेल
उपायुक्त
केन्द्रीय विद्यालय संगठन
क्षेत्रीय कार्यालय राँची

सामग्री संकलनकर्ता एवं सहयोगी

क्रम सं.	शिक्षक	विद्यालय	कार्य
1	श्री प्रवीण कुमार माथुर	स्नातकोत्तर शिक्षक (इतिहास) के.वि.पतरातू	मॉडरेशन
2	श्री बिजय एक्का	स्नातकोत्तर शिक्षक (इतिहास) के. वि. रामगढ़	थीम- 1, 8
3	श्री नितेश बरनवाल	स्नातकोत्तर शिक्षक (इतिहास) के. वि. धनबाद नंबर 1	थीम - 5, 15
4	श्री कुमार राघवेन्द्र	स्नातकोत्तर शिक्षक (इतिहास) के. वि. मेघाहातुबुरु	थीम- 4, 7
5	श्री अलेक्जेंडर खान खाना	स्नातकोत्तर शिक्षक (इतिहास) के. वि. चंद्रपुरा	थीम- 2, 3
6	श्री संजय प्रसाद	स्नातकोत्तर शिक्षक (इतिहास) के. वि. हजारीबाग	थीम- 11, 13
7	श्री मुकेश कुमार साहू	स्नातकोत्तर शिक्षक (इतिहास) के. वि. नामकुम	थीम- 6, 10
8	श्री मुकेश कुमार	स्नातकोत्तर शिक्षक (इतिहास) के. वि. दीपाटोली	मॉडरेशन

कक्षा – बारहवीं : इतिहास (कोड- **027**)

भारतीय इतिहास के विषय (भाग – **I, II और III**)

क्रमांक .	थीम	वेटेज (अंकों में)
1	ईंटें, मनके और अस्थियाँ	**25**
2	राजा, किसान और नगर	
3	राजत्व, जाति और वर्ग	
4	विचारक, विश्वास और इमारतें	
5	यात्रियों की नज़र से	**25**
6	भक्ति-सूफी परंपराएँ	
7	एक शाही राजधानी – विजयनगर	

8	किसान, जमींदार और राज्य कृषि समाज और मुगल साम्राज्य	
9	उपनिवेशवाद और ग्रामीण इलाके	**25**
10	विद्रोही और राज	
11	महात्मा गांधी और राष्ट्रीय आंदोलन	
12	संविधान का निर्माण	
	मानचित्र	**05**
	कुल	**80**

प्रोजेक्ट कार्य = 20 अंक

विषय सूची

क्रम सं	पाठ का नाम	पृष्ठ सं
1	ईंटें, मोती और हड्डियाँ	7—15
2	राजा, किसान और नगर	16-23
3	राजत्व, जाति और वर्ग	24-31
4	विचारक, विश्वास और इमारतें	32-40
5	यात्रियों की नज़र से	41-48
6	भक्ति–सूफी परंपराएँ	49-57
7	एक शाही राजधानी – विजयनगर	58-65
8	किसान, जमींदार और राज्य कृषि समाज और मुगल साम्राज्य	66-73
9	उपनिवेशवाद और ग्रामीण इलाके	74-80
10	विद्रोही और राज	81-90
11	महात्मा गांधी और राष्ट्रीय आंदोलन	91-105
12	संविधान का निर्माण	106-1
12	सीबीएसई सैंपल पेपर	113- 153

QUESTION PAPER DESIGN

BOOK	MCQ		SA		LA		SOURCE BASED		MAP	TOTAL	
	NO OF Qs	**MM**	**NO OF Qs**	**MM**	**NO OF Qs**	**MM**	**NO OF Qs**	**MM**		**THEO**	**INTL**
PART I	7	1	2	3	1	8	1	4		25	
PART II	7	1	2	3	1	8	1	4		25	
PART III	7	1	2	3	1	8	1	4		25	

MAP									05	05	
PROJECT										80	20
TOTAL	**21**		**18**		**24**		**12**		**05**	**100**	

WEIGHTAGE BASED ON COMPETENCIES

Competencies	Marks	%
Knowledge Remembering previously learned material by recalling facts, terms, basic concepts, and answers, **Understanding** demonstrating understanding of facts and ideas by organizing, translating, interpreting, giving descriptions and stating main ideas.	21 18	26.25 22.50
Applying and Analyzing: applying acquired knowledge, facts, techniques and rules and solving the problems.	24	30
Formulating, Evaluating and Creating skills: Examining, making inferences and finding evidence to support generalizations; Presenting and defending opinions by making judgments about information and piling information	12	15
Map skills	05	6.25

Note: Competency based questions for the examinations to be conducted in the academic year 2023-24 will be 40 percent in class XII

PROJECT WORK: 20 Marks

The teacher will assess the progress of the project work in the following manner

Month	Periodic work	Assessment Rubrics	Marks
April-July	Instructions about Project Guidelines, Background reading Discussions on Theme and Selection of the Final Topic, Initiation/ Synopsis	Introduction, Statement of Purpose/Need and objectives of the study, Hypothesis/ Research Question, Review of Literature, Presentation of Evidence, Methodology, Questionnaire, Data	6
August - October	Planning and organization: forming an action plan, feasibility, or baseline study, Updating/modifying the action plan, Data Collection	Significance and relevance of the topic; challenges encountered while conducting the research.	5
November-January	Content/data analysis and interpretation. Conclusion, Limitations, Suggestions, Bibliography, Annexures and overall presentation of the project.	Content analysis and its relevance in the current scenario. Conclusion, Limitations, Bibliography, Annexures and Overall Presentation.	5
January - February	Final Assessment and VIVA by both Internal and External Examiners	External/ Internal Viva based on the project	4
		TOTAL	**20**

LIST OF MAPS

S. No	Page No.	Part – I Maps
1	2	**Mature Harappan sites:** Harappa, Banawali, Kalibangan, Balakot, Rakhigarhi, Dholavira, Nageshwar, Lothal, Mohenjodaro, Chanhudaro, KotDiji.
2	3	**Mahajanapada and cities:** Vajji, Magadha, Kosala, Kuru, Panchala, Gandhara, Avanti, Rajgir, Ujjain, Taxila, Varanasi.
3	33	**Distribution of Ashokan inscriptions:** • Pillar inscriptions – Sanchi, Topra, Meerut Pillar and Kaushambi. • Kingdom of Cholas, Cheras and Pandyas.
4	43	**Important kingdoms and towns:** • Kushanas, Shakas, Satavahanas, Vakatakas,Guptas • Cities/towns: Mathura, Kanauj, Puhar, Braghukachchha, Shravasti, Rajgir, Vaishali, Varanasi,Vidisha
5	95	**Major Buddhist Sites:** Nagarjunakonda, Sanchi, Amaravati, Lumbini, Bharhut, Bodh Gaya, Ajanta
S. No	**Page No.**	**Part II - Maps**
6	174	Bidar, Golconda, Bijapur, Vijayanagar, Chandragiri, Kanchipuram, Mysore, Thanjavur, Kolar, Tirunelveli
7	214	**Territories under Babur, Akbar and Aurangzeb:** • Delhi, Agra, Panipat, Amber, Ajmer, Lahore, Goa.
S. No	**Page No.**	**Part III - Maps**
8	287	**Territories/cities under British Control in1857**: Punjab, Sindh, Bombay, Madras Berar, Bengal, Bihar, Orissa, Surat, Calcutta, Patna, Allahabad
9	260	**Main centres of the Revolt of 1857**: Delhi, Meerut, Jhansi, Lucknow, Kanpur, Azamgarh, Calcutta, Benaras, Gwalior, Jabalpur, Agra, Awadh
10		**Important centres of the National Movement**: Champaran, Kheda, Ahmedabad, Benaras, Amritsar, Chauri Chaura, Lahore, Bardoli, Dandi, Bombay (Quit India Resolution), Karachi

विषय-I
ईंटें, मनके और अस्थियाँ

श्री बिजय एक्का,
स्ना. शि. के. वि. रामगढ़

❖ महत्वपूर्ण बिंदु और तिथियां

1. सिंधु घाटी सभ्यता को हड़प्पा संस्कृति भी कहा जाता है। यह सभ्यता लगभग 2600 और 1900 ईसा पूर्व के बीच की है।
2. इस सभ्यता के मुख्य केंद्र हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, धोलावीरा कालीबंगन आदि थे।
3. हड़प्पा सभ्यता में नहर सिंचाई के साक्ष्य अफगानिस्तान के शोर्तुघई नामक स्थल पर मिले हैं।
4. मोहनजोदड़ो एक सुनियोजित तरीके से बसाया गया शहर था। सड़कें और गलियां एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं। मकान ईंटों के बने होते थे और नगर के निचले भाग में होते थे।
5. मोहनजोदड़ो के किले में एक बड़ा स्नानागार, एक किला, गोदाम और अन्य महत्वपूर्ण संरचनाएं मिली हैं। इनका उपयोग सार्वजनिक उद्देश्यों के लिए किया जाता था।
6. कुछ कब्रें हड़प्पा में भी मिली हैं जहाँ मृतकों को दफनाया गया था। कुछ ऐसी कब्रें पाई गईं हैं जिनमें मिट्टी के बर्तन और आभूषण भी शव के साथ दफनाये गए थे।
7. राजस्थान के खेतरी क्षेत्र की संस्कृति को पुरातत्वविदों ने गणेश्वर-जोधपुरा संस्कृति का नाम दिया है। यहां तांबे की कई कलाकृतियां मिली हैं।
8. मेसोपोटामिया के लेखों में मगन और मेलुहा के क्षेत्र से संपर्क का उल्लेख है, शायद मेलुहा नाम हड़प्पा क्षेत्र को दिया गया है। वे उत्पादों का उल्लेख करते हैं जैसे; लाजवर्द मणि, कार्नेलियन, सोना, तांबा और लकड़ी की किस्में।
9. हड़प्पा लिपि आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है; यह निश्चित रूप से वर्णानुक्रमिक नहीं था क्योंकि इसमें बहुत सारे संकेत हैं।
10. हड़प्पा सभ्यता में शासक (राजा) का महत्वपूर्ण स्थान रहा है। सभी जटिल निर्णय उन्हीं के द्वारा लिए जाते थे। जलवायु परिवर्तन, अत्यधिक बाढ़, नदियों का सूखना या मार्ग बदलना आदि इस सभ्यता के पतन के कुछ कारण थे।

अति लघु उत्तरीय प्रश्न / बहुविकल्पीय प्रश्न

1. निम्नलिखित में से कौन सा हड़प्पा के लोगों के आहार का हिस्सा था?

(a) बाजरा (b) पशु उत्पाद (c) आम के बीज (d) दोनों (a) और (b)

उत्तर: (d)

2. निम्नलिखित में से कौन सी वस्तु हड़प्पा संस्कृति में नहीं पाई गई थी?

(a) पत्थर (b) लोहे का दर्पण (c) पत्थर की मुहरें (d) मोती के आभूषण

उत्तर: (b)

3. इनमें से कौन-सी विलासिता की वस्तु थी ?

(a) हँसिया (b) रानी पत्थर (c) फयाँस के पात्र (d) उपरोक्त सभी

उत्तर: (c)

4. लोथल के दुर्ग की इनमें से कौन-सी विशेषता है ?

(a) कम ऊँची दीवारें (b) ऊंची दीवारें (c) ऊँचाई पर निर्मित (d) नदी से दूर

उत्तर : c

5. निम्नलिखित में से कौन-सा मोहनजोदड़ो स्थल में पाया जाने वाला उल्लेखनीय पुरावस्तु नहीं है?

(a) नर्तकी की मूर्ति (b) राजमहल (c) पशुपति-मुहर (d) पुजारी-राजा

उत्तर : b

6. हड़प्पा नगरों की सबसे विशिष्ट विशेषता थी _____।

उत्तर: नियोजित जल निकासी प्रणाली

7. निम्न में से कौन सा बहुत ही मुलायम पत्थर है?

(a) लाजवर्द (b) कार्निलियन (c) जैस्पर (d) सेलखड़ी

उत्तर : d

8. हड़प्पा सभ्यता के इन स्थलों में से कौन से हरियाणा के हैं?

(a) कालीबंगा (b) लोथल (c) बनावली (d) शोर्तुघई

उत्तर: c

9. निम्नलिखित में से किस स्थल को पुरातत्वविदों द्वारा गणेश्वर-जोधपुरा संस्कृति का केंद्र कहा जाता है?

(a) मोहनजोदड़ो (b) नागेश्वर (c) खेतड़ी (d) धोलावीरा

उत्तर : c

10. हड़प्पा सभ्यता के दौरान अंतर्देशीय संचार कैसे होता था ?

(a) जलमार्ग (b) स्थलमार्ग (c) रेलवे (d)उपरोक्त सभी।

उत्तर: (a)

11. मगन संभवतः ..... का प्राचीन नाम था।

उत्तर: ओमान

12. इनमें से किस देश में सिंधु सभ्यता के स्थल मौजूद हैं?

(a) न्यूजीलैंड (b) रूस (c) अफ्रीका (d) पाकिस्तान

13. 'द स्टोरी ऑफ़ इंडियन आर्कियोलोजि' किसके द्वारा लिखित है।

उत्तर: एस. एन. रॉय

14. हड़प्पा स्थलों से इनमें से किस जानवर की हड्डियाँ मिली हैं?

(a) सिंह (b) सुअर (c) हिरण (d) दोनों (b) और (c)

उत्तर: d

15. 'माई आर्कियोलोजिकल मिशन टू इन्डिया एंड पाकिस्तान' पुस्तक किसकी रचना है?

उत्तर; आर.ई.एम. व्हीलर

16. दिए गए चित्रों को पहचानें:

(A)

(B)

(C)

उत्तर: (A) पकी मिट्टी की खिलौना गाड़ी (B) एक पुरोहित राजा (C) आद्य शिव

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 marks)

Q.1 मुहरें क्या थीं? वे किस काम के लिए इस्तेमाल किए जाते थे?

उत्तर: (i) मुहरों और मुद्रांकनों का प्रयोग लंबी दूरी के संपर्कों को सुविधाजनक बनाने के लिए होता था।

(ii) सामान से भरा थैला का मुख रस्सी से बाँधा जाता था और गाँठ पर थोड़ी गीली मिट्टी जमा कर एक या अधिक मुहरों से दबाया जाता था जिससे मिट्टी पर मुहरों की छाप पड़ जाए।

(iii) यदि इस थैले के अपने गंतव्य स्थान पर पहुँचने तक मुद्रांकन अक्षुण्ण रहा तो इसका अर्थ था कि थैले के साथ किसी प्रकार की छेड़-छाड़ नहीं की गई थी।

(iv) मुद्रांकन से प्रेषक की पहचान का भी पता चलता था।

Q2 हड़प्पा के लोगों द्वारा प्रयोग किए जाने वाले बाटों की दो महत्वपूर्ण विशेषताएँ बताइए।

उत्तर: (i) बाट सामान्यतः चर्ट नामक पत्थर से बनाए जाते थे। (ii) बाट आमतौर पर घनाकार होता था, जिसमें कोई निशान नहीं होता था। (iii) इन बाटों के निचले मानदंड द्विआधारी (1, 2, 4, 8, 16, 32 इत्यादि 12,800 तक) जबकि ऊपरी मानदंड दशमलव प्रणाली पर आधारित होते थे।

(iv) छोटे बाटों का प्रयोग संभवतः आभूषणों और मनकों को तौलने के लिए किया जाता था।

Q3. हड़प्पा सभ्यता में किस प्रकार की सरकार थी?

उत्तर: (i) हड़प्पा संस्कृति में किस प्रकार की सरकार अस्तित्व में थी, उसके बारे में अधिक जानकारी नहीं है।

(ii) हड़प्पा सभ्यता में मंदिर या किसी महल की अनुपस्थिति न तो राजा और न ही पुजारियों के शासन का संकेत देती है। (iii) साथ ही हड़प्पाकालीन शिल्पाकृतियों की असाधारण एकरूपता मिट्टी के बर्तनों, बाटों, मुहरों, ईंटों में स्पष्ट दिखाई देती है। यह एक केंद्रीकृत प्राधिकरण के अस्तित्व का संकेत देती है।

Q4. भारतीय पुरातत्व में ए एस आई के महानिदेशक जॉन मार्शल के योगदान का वर्णन कीजिए।

उत्तर: भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के महानिदेशक के रूप में जॉन मार्शल का कार्यकाल भारतीय पुरातत्व में एक व्यापक परिवर्तन का काल था ।

(i) वह भारत में काम करने वाले पहले पेशेवर पुरातत्वविद् थे, और उन्होंने ग्रीस और क्रीट में काम करने के अपने अनुभव को इस क्षेत्र में लाया ।

(ii) यद्यपि कनिंघम की तरह वह भी शानदार खोजों में रुचि रखते थे, पर उनमें रोजमर्रा की जिंदगी के बारे में भी जानने की उत्सुक थी।

(iii) उन्होंने नई सभ्यता यानी सिंधु घाटी सभ्यता की खोज की घोषणा की। उन्होंने सांची स्तूप के संरक्षण में भी मदद की।

Q5. आर. ई. एम. व्हीलर द्वारा शुरू की गई नई तकनीकें क्या थीं?

उत्तर: (i) आर ई एम व्हीलर एक ब्रिटिश पुरातत्वविद् थे। उन्हें 1944 के दौरान भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के महानिदेशक के रूप में नियुक्त किया गया था।

(ii) REM व्हीलर ने समान क्षैतिज इकाइयों के साथ खुदाई करने के बजाय स्तर विन्यास के अनुसार खुदाई की आवश्यकता को पहचाना।

(iii) इसके अलावा सेना के पूर्व ब्रिगेडियर होने के नाते, उन्होंने पुरातत्व में एक सैनिक परिशुद्धता का समावेश भी किया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8marks)

Q1. हड़प्पा सभ्यता के लोगों के लिए उपलब्ध भोजन की वस्तुओं की सूची बनाइए। उन समूहों की पहचान करें जिन्होंने इन्हें प्रदान किया होगा।

उत्तर. पुरातात्विक साक्ष्यों के आधार पर हड़प्पा के लोगों की आहार पद्धति का पुनर्निर्माण किया जा सकता है।

1. हड़प्पा सभ्यता के लोग वनस्पति और पशु उत्पादों पर निर्वाह करते थे। मुख्य अनाज थे: गेहूं, जौ, मसूर, चना और बीज, तिल और सरसों। गुजरात के आसपास बाजरा भी खाया जाता था।
2. ये पुनर्निर्माण जले हुए दानों और बीजों के अवशेषों पर आधारित हैं।
3. हड़प्पा में अनाज के भण्डार के दक्षिण में ईंटों के गोलाकार चबूतरों की दरारों से भी गेहूँ और जौ के दाने प्राप्त किए गए हैं।
4. चावल का सेवन दुर्लभ था।
5. हड़प्पावासी सूअर, हिरण, घड़ियाल, मछली और मुर्गे के मांस पर भी निर्वाह करते थे। यह धारणा पुरातत्व-प्राण विज्ञानियों द्वारा पहचान की गई हड्डियों पर आधारित है।
6. कृषि में लगे समूहों ने ये अनाज प्रदान किए।
7. जानवरों के मांस और मछली शायद शिकारी समुदायों से प्राप्त करते होंगे।

Q2. हड़प्पा सभ्यता में शिल्प उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल की सूची बनाएं और चर्चा करें कि इन्हें कैसे प्राप्त किया गया होगा।

उत्तर. मनके बनाने और अन्य शिल्प गतिविधियों के लिए विभिन्न प्रकार की सामग्रियों का उपयोग किया जाता था। इस उद्देश्य के लिए उपयोग किए जाने वाले कुछ सामान्य पत्थर कार्नेलियन, क्रिस्टल, क्वार्टज़ और सेलखडी हैं। मनके बनाने में तांबे, कांसे और सोने जैसी धातुओं और शंख, टेराकोटा और फयांस का भी प्रचलन था।

हड़प्पा के लोगों द्वारा कच्चे माल की प्राप्ति के लिए उपयोग की जाने वाली कुछ विभिन्न रणनीतियाँ हैं:

1. हड़प्पा सभ्यता के लोगों ने नागेश्वर और बालाकोट जैसे क्षेत्रों में जहाँ शंख की उपलब्धता थी, वहाँ अपनी स्थापना की।
2. हड़प्पा के कुछ अन्य स्थापित स्थल दूर अफगानिस्तान में शोर्तुघई थे। यह लापिस लाजुली का सबसे अच्छा स्रोत था।
3. हड़प्पावासी खनिजों से समृद्ध क्षेत्रों में अभियान भेजते थे। उदाहरण के लिए, उन्होंने राजस्थान में तांबे के लिए खेतड़ी और सोने से समृद्ध दक्षिण भारत में अभियान भेजे।
4. विश्व के अन्य क्षेत्रों के साथ तटीय संचार के संबंध भी थे।
5. हड़प्पा संस्कृति में वस्तुओं का आदान-प्रदान भूमि और जल मार्ग के माध्यम से होता था।

Q3. हड़प्पा में शासकों द्वारा किए जाने वाले कार्यों की चर्चा कीजिए।

उत्तर: हड़प्पा समाज पर विभिन्न मत हैं। पुरातत्वविदों का एक समूह सुझाव देते हैं कि हड़प्पा समाज में कोई शासक नहीं था और इसलिए सभी को समान स्थिति प्राप्त थी। पुरातत्वविदों के दूसरे समूह का मत है कि कोई एक शासक नहीं बल्कि कई शासक थे। तीसरा सिद्धांत सबसे उपयुक्त लगता है। यह सुझाव देता है कि यह संभावना नहीं है कि पूरे समुदाय सामूहिक रूप से इस तरह के जटिल निर्णयों को बना और लागू कर सकते थे।

साक्ष्य बताते हैं कि हड़प्पा समाज में जटिल निर्णय लिए गए और लागू किए गए। हड़प्पाकालीन शिल्पाकृतियों की असाधारण एकरूपता, जैसा कि मिट्टी के बर्तनों, मुहरों, बाटों और ईंटों से स्पष्ट है, जटिल निर्णयों को दर्शाती है। शासकों के मार्गदर्शन और पर्यवेक्षण के तहत शहर की योजनाएं तैयार किए गए थे। बड़े-बड़े भवनों, महलों, दुर्गों, तालाबों, कुओं, नहरों तथा अन्नागारों का निर्माण किया गया। सफाई शासक की जिम्मेदारी थी। सड़कों, गलियों और नालियों का भी निर्माण किया गया। शासकों ने अर्थव्यवस्था के कल्याण की भी देखभाल की। वे किसानों को कृषि उत्पादन

बढ़ाने के लिए प्रेरित करना चाहते थे। उन्होंने शिल्पकारों को विभिन्न हस्तशिल्पों को बढ़ावा देने के लिए भी प्रेरित किया। शासक द्वारा बाहरी और आंतरिक व्यापार दोनों को बढ़ावा दिया गया था। शासक सामान्य स्वीकार्य सिक्के या मुहरें, बाट और माप प्रणाली को जारी करता था। प्राकृतिक आपदा के समय शासकों से सहायता की अपेक्षा की जाती थी। बाढ़, भूकम्प, महामारी के समय शासक प्रभावित लोगों को अनाज तथा अन्य खाने-पीने की वस्तुएँ उपलब्ध कराता था। विदेशी आक्रमण के दौरान, शासकों ने शहर की रक्षा की।

Q4. "टेराकोटा की आकृतियाँ और मुहरें हड़प्पा के लोगों द्वारा अपनाई जाने वाली धार्मिक प्रथाओं पर प्रकाश डालती हैं।" चर्चा कीजिए।

उत्तर: चूंकि हड़प्पा लिपि आज तक पढ़ी नहीं जा सकी है, पुरातत्वविदों द्वारा टेराकोटा की मूर्तियों और मुहरों के आधार पर धार्मिक प्रथाओं के पुनर्निर्माण के प्रयास किए गए हैं। कई पुनर्निर्माण इस धारणा पर किए गए हैं कि बाद की परंपराएं पहले के साथ समानताएं प्रदान करती हैं।

(a) हड़प्पा में महिलाओं के कई मृण्मूर्तियां पाए गए हैं। एक मूर्ति में एक महिला के भ्रूण से पौधे को उगते हुए दिखाया गया है। संभवतः यह 'पृथ्वी देवी' का प्रतिनिधित्व करती है और पौधों की उत्पत्ति और विकास के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी हुई थी।

(b) कुछ टेराकोटा मूर्तियों को भारी आभूषणों से सजाया गया था, जिनमें से कुछ के शीर्ष पर विस्तृत प्रसाधन थे, जिन्हें मातृदेवियों के रूप में स्वीकार किया गया है। पुरुषों की मूर्तियाँ दुर्लभ हैं। इनमें से एक को 'पुजारी राजा' के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

(c) पुरातत्वविदों ने मुहरों की जांच करके धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं का पुनर्निर्माण करने का भी प्रयास किया है। कुछ मुहरों पर पेड़-पौधे के चित्र हैं जो प्रकृति पूजा का संकेत देते हैं।

(d) मुहरों पर बनाए गए कुछ जानवर-जैसे कि एक सींग वाला जानवर, जिसे आमतौर पर एक श्रृंगी कहा जाता है-कल्पित तथा संश्लिष्ट लगते हैं। कुछ मुहरों पर एक आकृति जिसे पालथी मार कर 'योगी' की मुद्रा में बैठा दिखाया गया है और कभी-कभी जिसे जानवरों से घिरा दर्शाया गया है, को 'आद्य शिव', अर्थात् हिंदू धर्म के प्रमुख देवताओं में से एक का आरंभिक रूप की संज्ञा दी गई है। इसके अतिरिक्त पत्थर की शंकाकार वस्तुओं को लिंग के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

स्रोत आधारित प्रश्न (4 Marks Questions)

1. पुरावस्तुओं की पहचान कैसे की जाती है

भोजन तैयार करने की प्रक्रिया में अनाज पीसने के यंत्र तथा उन्हें आपस में मिलाने, मिश्रण करने तथा पकाने के लिए बरतनों की आवश्यकता थी। इन सभी को पत्थर, धातु तथा मिट्टी से बनाया जाता था। यहाँ एक महत्वपूर्ण हड़प्पा स्थल मोहनजोदड़ो में हुए उत्खननों पर सबसे आरंभिक रिपोर्टों में से एक से कुछ उद्धरण दिए जा रहे हैं:

अवतल चक्कियाँ . . . बड़ी संख्या में मिली हैं . . . और ऐसा प्रतीत होता है कि अनाज पीसने के लिए प्रयुक्त ये एकमात्र साधन थीं। साधारणतः ये चक्कियाँ स्थूलतः कठोर, कंकरीले, अग्निज अथवा बलुआ पत्थर से निर्मित थीं और आमतौर पर इनसे अत्यधिक प्रयोग के संकेत मिलते हैं। चूँकि इन चक्कियों के तल सामान्यतया उत्तल हैं, निश्चित रूप से इन्हें ज़मीन में अथवा मिट्टी में जमा कर रखा जाता होगा जिससे इन्हें हिलने से रोका जा सके। दो मुख्य प्रकार की चक्कियाँ मिली हैं। एक वे हैं जिन पर एक दूसरा छोटा पत्थर आगे-पीछे चलाया जाता था, जिससे निचला पत्थर खोखला हो गया था, तथा दूसरी वे हैं जिनका प्रयोग संभवतः केवल सालन या तरी बनाने के लिए जड़ी-बूटियों तथा मसालों को कूटने के लिए किया जाता था। इन दूसरे प्रकार के पत्थरों को हमारे श्रमिकों द्वारा 'सालन पत्थर' का नाम दिया गया है तथा हमारे बावर्ची ने एक यही पत्थर रसोई में प्रयोग के लिए संग्रहालय से उधार माँगा है।

अर्नेस्ट मैके, फर्दर एक्सकैवेशन्स एट मोहनजोदड़ो, 1937 से उद्धृत

क) अवतल चक्कियों के बारे में आप क्या जानते हैं?

ख) भोजन के प्रसंस्करण में क्या आवश्यक था?

ग) किस प्रकार की अवतल चक्कियों को "सालन पत्थर" कहा जाता था?

उत्तर –(क) अवतल चक्कियाँ अनाज पीसने के लिए प्रयुक्त ये एकमात्र साधन थीं। साधारणतः ये चक्कियाँ स्थूलतः कठोर, कंकरीले, अग्निज अथवा बलुआ पत्थर से निर्मित थीं और आमतौर पर इनसे अत्यधिक प्रयोग के संकेत मिलते

ख) भोजन तैयार करने की प्रक्रिया में अनाज पीसने के यंत्र तथा उन्हें आपस में मिलाने, मिश्रण करने तथा पकाने के लिए बरतनों की आवश्यकता थी। इन सभी को पत्थर, धातु तथा मिट्टी से बनाया जाता था।

ग) उन चक्कियों को सालन चक्की की संज्ञा दी गयी है जिनका प्रयोग संभवतः केवल सालन या तरी बनाने के लिए जड़ी–बूटियों तथा मसालों को कूटने के लिए किया जाता था।

2. अब तक खोजी गई प्राचीनतम प्रणाली

नालियों के विषय में मैके लिखते हैं: ''निश्चित रूप से यह अब तक खोजी गई सर्वथा संपूर्ण प्राचीन प्रणाली है।'' हर आवास गली की नालियों से जोड़ा गया था। मुख्य नाले गारे में जमाई गई ईंटों से बने थे और इन्हें एसी ईंटों से ढँका गया था जिन्हें सफ़ाई के लिए हटाया जा सके। कुछ स्थानों पर ढँकने के लिए चूना पत्थर की पट्टिका का प्रयोग किया गया था। घरों की नालियाँ पहले एक हौदी या मलकुंड में खाली होती थीं जिसमें ठोस पदार्थ जमा हो जाता था और गंदा पानी गली की नालियों में बह जाता था। बहुत लंबे नालों में कुछ अंतरालों पर सफ़ाई के लिए हौदियाँ बनाई गई थीं। यह पुरातत्व का एक अजूबा ही है कि ''मलबे, मुख्यतः रेत के छोटे–छोटे ढेर सामान्यतः निकासी के नालों के अगल–बगल पड़े मिले हैं जो दर्शाते हैं..... कि नालों की सफ़ाई के बाद कचरे को हमेशा हटाया नहीं जाता था।''

अर्नेस्ट मैके, अर्ली इंडस सिविलाईज़ेशन, 1948

जल निकास प्रणालियाँ केवल बड़े शहरों तक ही सीमित नहीं थीं बल्कि ये कई छोटी बस्तियों में भी मिली थीं। उदाहरण के लिए, लोथल में आवासों के निर्माण के लिए जहाँ कच्ची ईंटों का प्रयोग हुआ था, वहीं नालियाँ पकी ईंटों से बनाई गई थीं।

(i) किन स्थानों के जल निकास का वर्णन किया गया है? पाठ में उल्लिखित लोथल के बारे में विशेषताएँ दीजिए।

(ii) इस स्वच्छता व्यवस्था की कमियाँ लिखिए।

(iii) जल निकास व्यवस्था को छोड़कर घर की कोई दो विशेषताएँ लिखिए।

उत्तर : (i) यहाँ सिन्धु घाटी सभ्यता के जल निकास का वर्णन किया गया है। लोथल में जहाँ घर मिट्टी की ईंटों से बनाए जाते थे, वहीं नालियाँ पकी ईंटों से बनाई जाती थीं।

(ii) स्वच्छता प्रणाली का दोष यह था मलबे, मुख्यतः रेत के छोटे–छोटे ढेर सामान्यतः निकासी के नालों के अगल–बगल पड़े मिले हैं जो दर्शाते हैं कि नालों की सफ़ाई के बाद कचरे को हमेशा हटाया नहीं जाता था।

(iii) घर की दो विशेषताएं/विशेषताएं इस प्रकार हैं–

1. प्रत्येक घर में एक आंगन, एक स्नानघर और एक कुआं होता था।
2. घर का फर्श ज्यादातर ईंटों से बना है।

मानचित्र आधारित प्रश्न

दिए गए भारत के मानचित्र में निम्नलिखित स्थानों को उपयुक्त चिह्नों के साथ अंकित करें:

(i) राखीगढ़ी: सिन्धु सभ्यता का स्थल

(ii) चान्हुदारो

(iii) लोथल

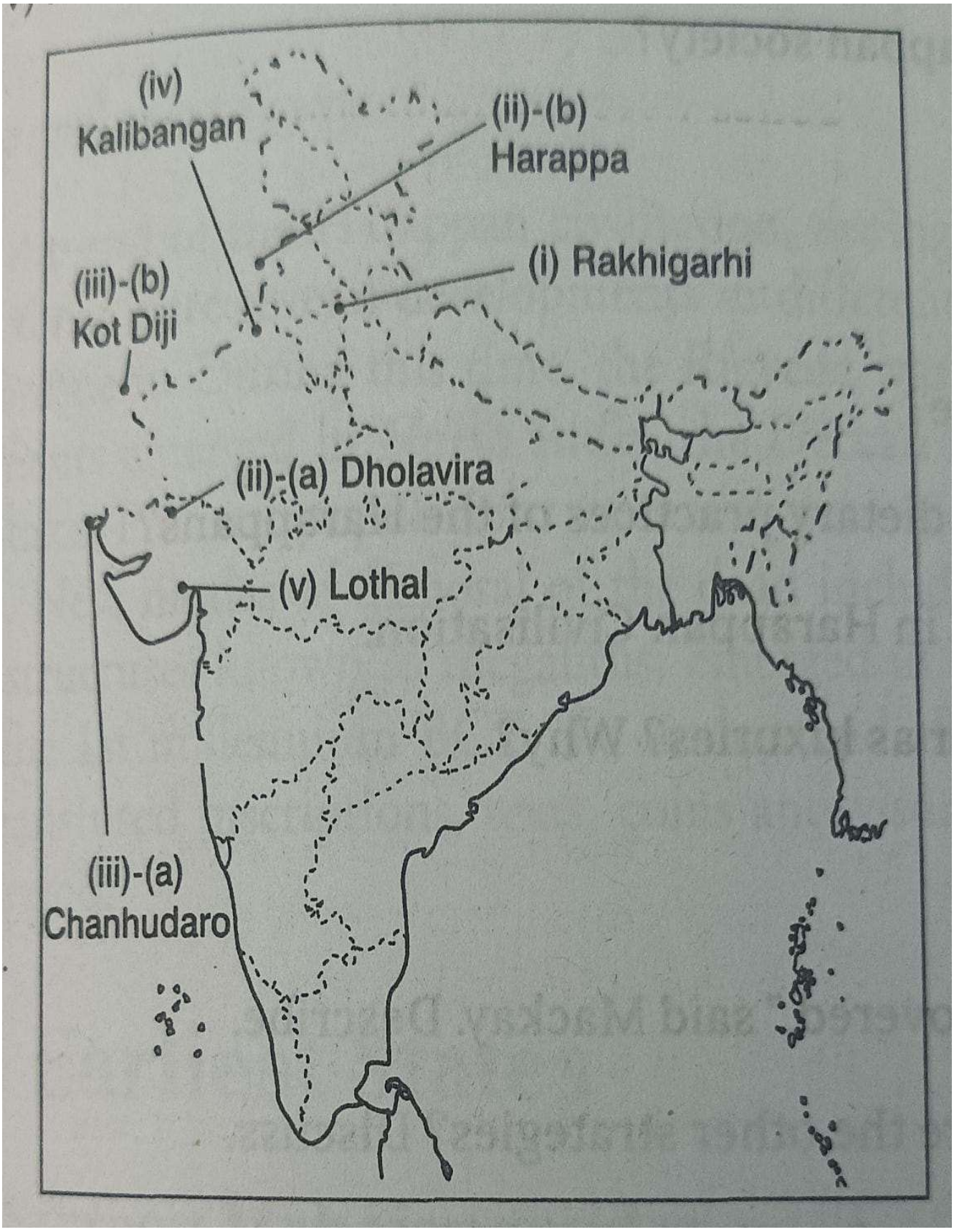
(iv)
Kalibangan
(ii)-(b)
Harappa
(i) Rakhigarhi
(iii)-(b)
Kot Diji
(ii)-(a) Dholavira
(v) Lothal
(iii)-(a)
Chanhudaro

हड़प्पाई पुरातत्व के विकास के प्रमुख चरण

उन्नीसवीं शताब्दी	
1875	हड़प्पाई मुहर पर कनिंघम की रिपोर्ट
बीसवीं शताब्दी	
1921	माधो स्वरूप वत्स द्वारा हड़प्पा में उत्खननों का आरंभ
1925	मोहनजोदड़ो में उत्खननों का प्रारंभ
1946	आर.ई.एम. व्हीलर द्वारा हड़प्पा में उत्खनन
1955	एस.आर. राव द्वारा लोथल में खुदाई का आरंभ
1960	बी.बी. लाल तथा बी.के. थापर के नेतृत्व में कालीबंगन में उत्खननों का आरंभ
1974	एम.आर. मुगल द्वारा बहावलपुर में अन्वेषणों का आरंभ
1980	जर्मन-इतावली संयुक्त दल द्वारा मोहनजोदड़ो में सतह-अन्वेषणों का आरंभ
1986	अमरीकी दल द्वारा हड़प्पा में उत्खननों का आरंभ
1990	आर.एस. बिष्ट द्वारा धौलावीरा में उत्खननों का आरंभ

विषय-II
राजा, किसान और नगर

श्री अलेक्जेंडर खान खाना
स्ना. शि. के. वि. चंद्रपुरा

संक्षेप में मुख्य अवधारणा-

1. छठी शताब्दी ई. पूर्व. को एक महत्वपूर्ण परिवर्तनकारी काल माना जाता है। इसका कारण आरंभिक राज्यों व नगरों का विकास, लोहे के बढ़ते प्रयोग और सिक्कों का प्रचलन है ।
2. छठी शताब्दी ई. पूर्व से उपज बढ़ाने के लिए लोहे के फाल वाले हलों का प्रयोग
3. इस काल में 16 महाजनपदों का उदय हुआ जिनमें मगध, कौशल, कुरू, पांचाल, गांधार, वज्जि, अवंति आदि प्रमुख थे ।
4. मगध के सबसे शक्तिशाली महाजनपद बनने के कारण: (i) उपजाऊ भूमि (ii) लोहे की खदानें (iii) योग्य तथा महत्वाकांक्षी शासक (iv) जंगलों में हाथियों की उपलब्धता (v) नदियों द्वारा यातायात सुरक्षित राजधानियाँ
5. मौर्य वंश का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य था। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार असोक सर्वाधिक प्रसिद्ध शासक।
6. मौर्य साम्राज्य में पाँच प्रमुख राजनीतिक केन्द्र थे, राजधानी पाटलिपुत्र और चार प्रांत - तक्षशिला, उज्जयिनी, तोसली और सुवर्णगिरी ।
7. मेगस्थनीज द्वारा सैनिक गतिविधियों के संचालन हेतु एक समिति और छः उपसमितियों का उल्लेख। जिनके कार्य नौसेना का, यातायात और खान-पान का, पैदल सैनिकों का अश्वारोहियों का, रथारोहियों का तथा हाथियों का संचालन ।
8. जेम्स प्रिंसेप के द्वारा 1830 के दशक में ब्राह्मी और खरोष्ठी लिपि का अर्थ निकाला गया जिनसे राजा असोक के अभिलेखों और सिक्कों का पता चला।
9. चौथी शताब्दी ई. में गुप्त साम्राज्य का उदय । सामंतवाद का उदय संभवतः इसी काल से माना जाता है।
10. दक्षिण के राजा और सरदार-चोल, चेर और पाण्ड्य जैसे समृद्ध सरदारियों का उदय ।
11. छठी शताब्दी ई. पूर्व से छठी शताब्दी के काल में व्यापार के लिए सिक्कों के प्रचलन से विनिमय आसान हो गया।
12. उच्च स्थिति प्राप्त करने के लिए राजाओं द्वारा देवी-देवताओं के साथ जुड़ना ।
13. द्वितीय शताब्दी के कई नगरों से छोटे दानात्मक अभिलेखों से विभिन्न व्यवसायों की जानकारी, जैसे धोबी, बुनकर, लिपिक, बढ़ई, कुम्हार, स्वर्णकार, लौहकार, धार्मिक गुरू, व्यापारी आदि ।
14. उत्पादकों और व्यापारियों के संघ (श्रेणी) का उल्लेख मिलता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक)

1. ब्राह्मी और खरोष्ठी का अर्थ किसने निकाला?

उत्तर: जेम्सप्रिंसेप।

2. "पियदस्सी" का साहित्यिक अर्थ क्या है?

उत्तर: मनोहर मुखाकृति वाला I

3. ओलिगार्की या समूह शासन से आप क्या समझते हैं?

उत्तर: जहां सत्ता पुरुषों के एक समूह के हाथ में होती है।

4. अर्थशास्त्र पुस्तक किसने लिखी?

उत्तर: कौटिल्य।

5. धम्ममहामत्त कौन थे?
उत्तर: धम्म का संदेश फैलाने के लिए असोक द्वारा नियुक्त विशेष अधिकारी।
6. तमिलकम क्षेत्र में शामिल राज्य का नाम क्या है?
उत्तर: आंध्र प्रदेश, केरल और तमिलनाडु।
7. "देवपुत्र" की उपाधि किसने धारण की?
उत्तर: कुषाण शासक।
8. 'प्रयाग प्रशस्ति' किसने लिखी?
उत्तर: हरिषेण।
9. हरिषेण कौन था?
उत्तर: समुद्रगुप्त का दरबारी इतिहासकार।
10. 'जातक' कब और किस भाषा में लिखे गए?
उत्तर: पाली भाषा में लगभग प्रथम सहस्राब्दी ई.पू. के मध्य में।
11. संगम ग्रंथ में बड़े जमींदारों को कहा जाता था
उत्तर: वेल्लालर
12. संगम ग्रंथ में हलवाहों को कहा जाता था
उत्तर: उझावर।
13. संगम ग्रन्थ में दासों को कहा जाता था
उत्तर: अदिमाई।
14. आहत सिक्के बनाये जाते थे
उत्तर: चाँदी और तांबा।
15. प्रारंभिक भारतीयों सिक्कों को क्या कहा जाता है?
उत्तर: आहत सिक्के
16. सबसे पहले सोने के सिक्के किसके द्वारा जारी किये गये थे?
उत्तर: कुषाण।
17. मुद्राशास्त्र से आप क्या समझते हैं?
उत्तर: सिक्कों का अध्ययन।
18. देवानाम्पिय और पियदस्सी शब्द किस राजा के लिए प्रयुक्त हुए हैं?
उत्तर: महान अशोक।
19. पुरालेखवेत्ता किसे कहते हैं?
उत्तर: जो लोग शिलालेख के बारे में अध्ययन करते हैं।
20. मौर्य साम्राज्य के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. साम्राज्य में 5 प्रमुख राजनीतिक केंद्र थे।
2. मेगस्थनीज ने सैन्य गतिविधियों के समन्वय के लिए छह उपसमितियों वाली एक समिति का उल्लेख किया है।
3.चाणक्य अशोक के मंत्री थे
4. अशोक ने धम्म का प्रचार करके अपने साम्राज्य पर नियंत्रण करने का प्रयास किया।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(a) 1,2 और 3 (b) 2,3 और 4 (C)1,2 और 4 (d)1,2,3 और 4

निर्देश: प्रश्न संख्या 21 से 23 के लिए।

(a) यदि कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और कारण (R) कथन (A) का सही स्पष्टीकरण है।

(b) यदि कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं लेकिन कारण (R) कथन (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(c) कारण (A) सत्य है लेकिन कारण (R) गलत है।

(d) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

21. कथन (A): - छठी शताब्दी के आसपास कृषि उत्पादन तेजी से बढ़ा।

कारण (R): ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि लोगों ने नई तकनीकें शुरू कीं जैसे लोहे का फालयुक्त हल, धान की रोपाई आदि।

22. कथन (A): छठी शताब्दी ईसा पूर्व को अकसर प्रारंभिक भारतीय इतिहास में एक प्रमुख मोड़ माना जाता है।

कारण: यह प्रारंभिक राज्यों, शहरों, लोहे के बढ़ते उपयोग, सिक्कों के विकास आदि से जुड़ा युग है।

23. कथन (A): तमिलकम में बड़े जमींदारों को आदिमई कहा जाता था।

कारण (R): प्रारंभिक तमिल साहित्य में गांवों में रहने वाले लोगों की विभिन्न श्रेणियों का उल्लेख है

24. मगध साम्राज्य के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से सही विकल्प चुनें।

(A) प्रारंभ में पाटलिपुत्र मगध की राजधानी थी।

(B) चंद्र गुप्त मगध के शुरुआती शासकों में से एक थे जिन्होंने 6 ईसा पूर्व में शासन किया था।

(C) छठी और चौथी ईसा पूर्व के बीच मगध सबसे शक्तिशाली महाजनपद बन गया।

(D) अशोक मौर्य वंश का संस्थापक था।

25. मध्य एशिया से आये शकों को ब्राह्मण मानते थे:

(A) अछूत (B) आर्य (C) म्लेच्छ (D) शूद्र

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक)

1. मगध शक्ति के विकास के लिए प्रारंभिक लेखकों और इतिहासकारों द्वारा क्या अलग-अलग स्पष्टीकरण दिए गए थे? व्याख्या करें। ***

उत्तर: प्राचीन भारत में महाजनपदों कि संख्या 16 थी। 16 महाजनपदों में मगध सबसे शक्तिशाली महाजनपद था। मगध के सबसे शक्तिशाली महाजनपद के रूप में उदय के लिए इतिहासकारों द्वारा दी गई व्याख्याएँ निम्नलिखित हैं:

(i) **अनुकूल भौगोलिक स्थिति**: मगध उत्तर में गंगा, पश्चिम में सोन नदी, पूर्व में चंपा नदी और दक्षिण में विंध्य से घिरा था। अत: मगध हर ओर से सुरक्षित हो था।

मगध की दो राजधानियाँ थी: राजगीर और पाटलिपुत्र। राजगीर पाँच पहाड़ियों के समूह से घिरा हुआ था जबकि पाटलिपुत्र गंगा, सोन और गंडक के संगम पर स्थित था।

(ii) **विशाल लौह भंडार की उपलब्धता**: पड़ोस में समृद्ध लौह अयस्कों की उपलब्धता ने मगध राजाओं को खुद को प्रभावी हथियारों से लैस करने में सक्षम बनाया। दूसरी ओर ये लोहे के हथियार उनके प्रतिद्वंद्वियों को आसानी से उपलब्ध नहीं थे।

(iii) **उपजाऊ भूमि**: मगध मध्य गंगा के मैदान में स्थित था। अतः उसके पास बहुत उपजाऊ भूमि थी। वहां के किसान थोड़े से प्रयास से अतिरिक्त उत्पाद पैदा करने में सक्षम थे। इस अधिशेष उत्पादन ने व्यापार और वाणिज्य को प्रोत्साहित किया। इससे मगध राजाओं के पास करों के रूप में भारी धन एकत्रित हो गया।

(iv) **सेना में हाथी का उपयोग**: मगध पहला महाजनपद था जिसने अपनी सेना इकाई में हाथी को शामिल किया था। हाथियों का उपयोग किलों पर आक्रमण करने में किया जाता था और वे दलदली क्षेत्रों में अधिक उपयोगी होते थे।

(v) **महत्वाकांक्षी राजा**: मगध में बिम्बिसार, अजातशत्रु और नंद शासकों जैसे बहुत महत्वाकांक्षी राजा थे। उन्होंने अपनी नीतियों से अपने राज्य का विस्तार और सुदृढ़ीकरण किया।

2. "इतिहासकारों ने मौर्य साम्राज्य के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए विभिन्न स्रोतों का उपयोग किया है।" स्पष्ट करें। ***

उत्तर: मगध के खंडहरों पर चन्द्रगुप्त मौर्य ने एक नये राज्य की स्थापना की, जो मौर्य साम्राज्य के नाम से जाना जाता है। यह प्राचीन भारत का पहला और सबसे बड़ा साम्राज्य था। मौर्य साम्राज्य के बारे में जानकारी प्राप्त करने के निम्नलिखित स्रोत हैं :

(i) **कौटिल्य का अर्थशास्त्र**: कौटिल्य चंद्रगुप्त मौर्य के प्रधान मंत्री थे। उन्होंने 'अर्थशास्त्र' नमक पुस्तक लिखी। यह पुस्तक हमें मौर्य प्रशासन और उस समय की राजनीतिक स्थिति के संबंध में बहुमूल्य जानकारी प्रदान करता है।

(ii) **मेगस्थनीज की इंडिका**: मेगस्थनीज चंद्रगुप्त मौर्य के दरबार में एक यूनानी राजदूत था। इंडिका में मौर्य साम्राज्य की राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक स्थिति का विशद विवरण दिया है। हालाँकि आज यह पुस्तक मूल रूप में उपलब्ध नही हैं I

(iii) **जैन और बौद्ध साहित्य**: बौद्ध साहित्य जैसे दीघनिकाय,दीपवंश, महावंश आदि और जैन साहित्य जैसे कल्पशत्रु, परिशिष्टपर्वण आदि मौर्य साम्राज्य और मौर्य शासकों के बारे में पर्याप्त जानकारी प्रदान करते हैं।

(v) **शिलालेख और सिक्के**: अशोक के शिलालेख मौर्य साम्राज्य के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं। सिक्के मौर्य साम्राज्य की आर्थिक स्थिति पर प्रकाश डालते हैं।

3. लगभग 600 ईसा पूर्व से 600 ईसा पूर्व तक उत्पादकता बढ़ाने के लिए कृषकों द्वारा अपनाई गई कृषि पद्धतियों की व्याख्या करें। ***

उत्तर: छठी शताब्दी ईसा पूर्व से छठी शताब्दी ईस्वी के दौरान कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए कई उपाय अपनाए गए।

(i) **कृषि योग्य भूमि का विस्तार**: इस काल में राज्य के प्रोत्साहन और सहायता से जंगल साफ़ करके कृषि योग्य भूमि का विस्तार किया गया। राज्यों ने कृषि योग्य भूमि के विस्तार के लिए लोगों को नए क्षेत्रों में बसने के लिए प्रोत्साहित भी किया।

(ii) **सिंचाई की व्यवस्था**: कृषि उत्पादन बढ़ाने की एक अन्य रणनीति सिंचाई की व्यवस्था करना था। इनमें कुएँ, तालाब और नहरों का निर्माण बहुत महत्वपूर्ण थीं। जूनागढ़ शिलालेख में कहा गया है कि चंद्रगुप्त के एक गवर्नर ने काठियावाड़ में गिर के पास सुदर्शन झील पर एक बांध बनवाया था।

(iii) **लोहे के हल का उपयोग**: कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए लोहे के फालयुक्त हल का उपयोग इस काल की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि हैं । किसानों ने अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में जलोढ़ मिट्टी को तोड़ने के लिए लोहे की नोक वाले हलों का उपयोग करना शुरू कर दिया।

(iv) **धान की रोपाई की शुरूआत**: गंगा घाटी के कुछ हिस्सों में धान की रोपाई की शुरूआत से धान के उत्पादन में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई।

4. भारतीय इतिहास में अशोक के शिलालेख का क्या महत्व है? ***

उत्तर:- भारतीय इतिहास में अशोक के शिलालेख का महत्व:

1. यह अशोक के साम्राज्य की सीमा निर्धारित करने में मदद करता है।
2. यह उनके धम्म और उनकी सोच के बारे में बताता है
3. यह हमें उनकी नीति के बारे में बताता है

4. यह शिलालेख अशोक द्वारा किये गये कार्यों पर प्रकाश डालता है।
5. ये मौर्यकालीन कला के सुन्दर नमूने हैं।

5. अभिलेखीय साक्ष्यों की सीमाओं का वर्णन करें। **

उत्तर: अभिलेखीय साक्ष्यों की निम्नलिखित सीमाएँ हैं:

• कभी-कभी अक्षरों को इतने हल्के ढंग से उत्कीर्ण किया जाता है जिन्हें पढ़ पाना मुश्किल होता हैं I

• शिलालेख क्षतिग्रस्त हो सकते हैं जिनसे अक्षर लुप्त हो जाते हैं। अक्षर लुप्त होने पर शब्दों का अर्थ पता लगाना आसान नहीं है।

• कुछ अर्थ किसी विशेष स्थान या समय सम्बंधित होते हैं। अत: इनका वास्तविक अर्थ ज्ञात करना कठिन हो जाता है।

• खेती कि दैनिक प्रक्रियाओं एवं रोजमर्रा कि जिंदगी के सुख -दुःख का उल्लेख शिलालेखों में नहीं मिलता है।

6. उन तरीकों की व्याख्या करें जिनसे प्राचीन काल में राजा उच्च पद का दावा करते थे? **

उत्तर:

• मौर्योत्तर काल का एक महत्वपूर्ण विकास राजत्व की दैवीय धारणा का विकास था I राजाओं ने उच्च स्थिति का दावा करने और इसे बनाए रखने के लिए विभिन्न प्रकार के साधनों का प्रयोग करना शुरू कर दिया था।

• राजत्व को अलौकिक घोषित करने के लिए उन्होंने कहना शुरू किया कि वे देवताओं के वंशज हैं।

• वास्तव में वे राजसत्ता की दैवीय धारणा की सहायता से स्वयं को विशेष और दूसरों से श्रेष्ठ घोषित करना चाहते थे।

• विशाल साम्राज्य पर शासन करने वाले कुषाण राजाओं ने इस साधन का सर्वोत्तम उपयोग किया।

• मथुरा के पास मट के एक देवस्थान पर कुषाण शासकों की विशालकाय मूर्तियाँ लगाई गईं थी I

• कुषाण शासकों ने अपने नाम के आगे 'देवपुत्र' की उपाधि भी लगाई थी।

6. जेम्स प्रिंसेप कौन थे? भारतीय पुरालेख विज्ञान के विकास में उनका क्या योगदान था?

उत्तर: जेम्स प्रिंसेप ईस्ट इंडिया कंपनी में एक अधिकारी थे।

• उन्होंने भारत के शुरुआती शिलालेखों और सिक्कों में इस्तेमाल की जाने वाली दो लिपियों ब्राह्मी और खरोष्ठी का अर्थ निकाला।

• इस शोध से प्रारंभिक भारत के राजनीतिक इतिहास के अध्ययन को एक नई दिशा मिली।

• क्योंकि यूरोपीय और भारतीय विद्वानों ने उपमहाद्वीप पर शासन करने वाले प्रमुख राजवंशों की वंशावली के पुनर्निर्माण के लिए विभिन्न भाषाओं में रचित शिलालेखों और ग्रंथों का उपयोग किया था।

7. बताएं कि खरोष्ठी का अर्थ कैसे समझा गया। **

उत्तर:

- खरोष्ठी लिपि को समझने की एक दिलचस्प कहानी है जिसका उपयोग पूर्वोत्तर में शिलालेखों में किया जाता था। ईसा पूर्व दूसरी-पहली शताब्दी में इंडो-ग्रीक राजाओं ने इस क्षेत्र पर शासन किया था।
- उन्होंने सिक्के ढाले और इन मिले सिक्कों से पहेली सुलझ गई। इन सिक्कों पर राजाओं के नाम ग्रीक (यूनानी) और खरोष्ठी लिपि में लिखे थे।
- यूनानी लिपि पढ़ने वाले विद्वानों ने यूरोपीय विद्वानों ने यूनानी और खरोष्ठी लिपि के अक्षरों की तुलना की।
- उदाहरण के लिए, अपोलोडोटस जैसे नाम लिखने के लिए दोनों लिपियों में प्रतीक 'अ' का उपयोग किया गया था। इस प्रकार यूनानी लिपि से तुलना करने से खरोष्ठी को समझने में मदद मिली।
- चूंकि जेम्स प्रिंसेप ने खरोष्ठी की भाषा प्राकृत के रूप में पहचान की, इसलिए शिलालेखों को पढ़ना भी संभव हो गया।

9. अशोक युग की ब्राह्मी लिपि को कैसे समझा गया? *

उत्तर:

- आधुनिक भारतीय भाषाओं को लिखने के लिए उपयोग की जाने वाली अधिकांश लिपियाँ ब्राह्मी लिपि से ली गई हैं। अशोक के अधिकांश शिलालेखों में इसी लिपि का प्रयोग किया गया था।
- 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से, भारतीय पंडितों की मदद से यूरोपीय विद्वानों ने समकालीन बंगाली और देवनागरी लिपि में कई पांडुलिपियों का अध्ययन किया और उनके अक्षरों की प्राचीन अक्षरों से तुलना की।
- शुरुआती शिलालेखों का अध्ययन करने वाले विद्वानों का मानना था कि ये शिलालेख संस्कृत में थे लेकिन शुरुआती शिलालेख प्राकृत में थे।
- कई अभिलेखकारों की दशकों की कड़ी मेहनत के बाद, जेम्स प्रिंसेप ने 1838 में अशोक युग की ब्राह्मी लिपि को पढ़ा।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक)

10. मौर्य प्रशासन की मुख्य विशेषताएँ बताइये।

उत्तर: मौर्य प्रशासन की मुख्य विशेषताएं इस प्रकार हैं:

(i) साम्राज्य में पांच प्रमुख राजनीतिक केंद्र थे-राजधानी पाटलिपुत्र और तक्षशिला, उज्जयिनी, तोसलि और सुवर्णगिरि के प्रांतीय केंद्र।

(ii) संभवतः राजधानी और प्रांतीय केंद्रों के आसपास प्रशासनिक नियंत्रण सबसे मजबूत था। इन केंद्रों को सावधानीपूर्वक चुना गया था, तक्षशिला और उज्जयिनी महत्वपूर्ण लंबी दूरी के व्यापार मार्गों पर स्थित थे, जबकि सुवर्णगिरि कर्नाटक की सोने की खदान के लिए महत्वपूर्ण था।

(iii) साम्राज्य के अस्तित्व के लिए भूमि और जल दोनों मार्गों से संचार महत्वपूर्ण था। केंद्र से प्रांतों तक की यात्रा में महीनों नहीं बल्कि सप्ताह लग सकते थे। अतः यात्रियों के लिए भोजन की व्यवस्था और उनकी सुरक्षा आवश्यक था। सुरक्षा और संरक्षा सुनिश्चित करने के लिए सेना महत्वपूर्ण थी

(iv) मेगस्थनीज ने सैन्य गतिविधि के समन्वय के लिए छह उप-समितियों वाली एक समिति का उल्लेख किया है। इनमें से एक नौसेना की देखभाल करता था, दूसरा परिवहन और प्रावधानों का प्रबंधन करता था, तीसरा पैदल सैनिकों के लिए जिम्मेदार था, चौथा घोड़ों के लिए, पांचवां रथों के लिए और छठा हाथियों के लिए जिम्मेदार था।

(v) दूसरी समिति की गतिविधियों में उपकरण ले जाने के लिए बैलगाड़ियों की व्यवस्था करना, सैनिकों के लिए भोजन और जानवरों के लिए चारा खरीदना और सैनिकों की देखभाल के लिए नौकरों और सहायकों की भर्ती करना शामिल था।

(vi) अशोक ने धम्म का प्रचार करते हुए अपने साम्राज्य को एकजुट रखने का भी प्रयास किया, जिसके सिद्धांत सरल और वस्तुतः सार्वभौमिक थे। धम्म के प्रचार के लिए धम्म महामत्त नाम से विशेष अधिकारियों की नियुक्ति की गई।

(vii) मेगस्थनीज के अनुसार, अधिकारियों को अलग-अलग कार्यों के लिए नियुक्त किया जाता था। जैसे कि कुछ ने नहरों का निरीक्षण किया, भूमि की माप की, उन नालों का निरीक्षण किया जिनके द्वारा मुख्य नहरों से शाखाओं में पानी छोड़ा जाता है, ताकि सभी को इसकी समान आपूर्ति हो सके। कुछ अधिकारी कर वसूल करते थे।

11. संक्षेप में वर्णन करें कि मौर्य साम्राज्य को इतिहास में एक प्रमुख मील का पत्थर क्यों माना जाता था।

उत्तर: इतिहासकार ने मौर्य साम्राज्य के उद्भव को भारतीय इतिहास में एक प्रमुख मील का पत्थर माना क्योंकि,

- मौर्य साम्राज्य प्राचीन भारत का पहला और सबसे बड़ा साम्राज्य था
- अशोक महान इसी साम्राज्य से संबंधित थे, जिनका प्रशासन लोक कल्याण के सिद्धांत पर आधारित था।

• उन्होंने न केवल जनता के बीच शांति और समृद्धि लाने के प्रयास किये बल्कि अपने लोगों को धम्म के रूप में एक 'सामान्य आचार संहिता' देने का भी प्रयास किया।

• एक शक्तिशाली और साधन संपन्न साम्राज्य का स्वामी होने के बावजूद अशोक ने अन्य देशों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए।

• हमें अशोक के द्वितीय शिलालेख से पता चलता है कि महान सम्राट ने दूसरे देश में भी मनुष्यों और जानवरों के इलाज की व्यवस्था की थी।

• मौर्य काल के दौरान प्रस्तर कला अपने चरम पर पहुँची।

• मौर्य कला की सबसे असाधारण और आश्चर्यजनक वस्तुएँ अशोक के पत्थर के स्तंभ हैं। सभी पत्थर के स्तंभों में से सारनाथ का स्तंभ सबसे भव्य है जिसके सिंह शीर्ष को आज भारत का राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में अपनाया गया है।

12. भूमि अनुदान प्रणाली की व्याख्या करें। प्राचीन भारत में भूमि अनुदान का क्या महत्व था?

उत्तर:

• ईसा की प्रारंभिक शताब्दियों से शासकों द्वारा भूमि का अनुदान दिया जाता रहा है।

• ऐसे कई भूमि अनुदानों का उल्लेख हमें समकालीन शिलालेखों में मिलता है।

• अधिकांश शिलालेख तांबे की प्लेटों पर उत्कीर्ण थे लेकिन कहीं-कहीं पत्थर पर भी थे।

• संभवतः ये भूमि अनुदान भूमि प्राप्त करने वालों के लेन-देन के रिकॉर्ड के रूप में दिए गए थे।

• भूमि अनुदान विशेष रूप से केवल ब्राह्मणों या धार्मिक संस्थाओं को ही दिया जाता था। इनमें से अधिकांश शिलालेख संस्कृत में थे।

• ब्राह्मण को दी गई भूमि को अग्रहार के नाम से जाना जाता था, ब्राह्मणों को राजा को भू-राजस्व और अन्य देय राशि का भुगतान करने से छूट दी जाती थी।

भूमि अनुदान का महत्व:

- कुछ विद्वानों का मत है कि शासक इस प्रकार भूमि अनुदान देकर कृषि योग्य भूमि का विस्तार करना चाहते थे।
- कुछ अन्य इतिहासकारों का मानना है कि शासक भूमि अनुदान देकर शक्तिशाली और प्रभावशाली व्यक्ति का समर्थन हासिल करने की कोशिश करते थे। यह उनकी कमज़ोर होती राजनीतिक शक्ति का द्योतक है।
- विद्वानों के तीसरे समूह का मानना है कि भूमि अनुदान देकर राजा स्वयं को महामानव के रूप में प्रदर्शित करना चाहते थे। वास्तव में, राजा नियंत्रण खो रहे थे, इस लिए वे अपनी शक्ति का आडम्बर प्रस्तुत करना चाहते थे।
- भूमि अनुदान के प्रचलन से किसानों और राज्य के बीच संबंध की झांकी मिलती हैं ।

स्रोत आधारित प्रश्न (4 अंक)

दिए गए उद्धरण को पढ़कर नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दें।

गुजरात की सुदर्शन झील

सुदर्शन झील एक कृत्रिम जलाशय था। हमें इसका ज्ञान लगभग दूसरी शताब्दी ई. के संस्कृत के एक पाषाण अभिलेख से होता है। इस अभिलेख को शक शासक रुद्रदमन की उपलब्धियों का उल्लेख करने के लिए बनवाया गया था।

इस अभिलेख में कहा गया है कि जलद्वारों और तटबंधों वाली इस झील का निर्माण मौर्य काल में एक स्थानीय राज्यपाल द्वारा किया गया था। लेकिन एक भीषण तूफान के कारण इसके तटबंध टूट गए और सारा पानी बह गया। बताया जाता है कि तत्कालीन शासक रुद्रदमन ने इस झील की मरम्मत अपने खर्चे से करवाई थी, और इसके लिए अपनी प्रजा से कर भी नहीं लिया था। इसी पाषाण-खंड पर एक और अभिलेख (लगभग पाँचवीं सदी) है जिसमें कहा गया है कि गुप्त वंश के एक शासक ने एक बार फिर इस झील की मरम्मत करवाई थी।

प्रश्न:

(A) हमें सुदर्शन झील के बारे में कैसे पता चलता है?
(B) इस झील की मरम्मत की आवश्यकता क्यों पड़ी?
(C) स्पष्ट करें कि शासकों ने सिंचाई की व्यवस्था क्यों की?

उत्तर: (A) सुदर्शन झील के बारे में हमें संस्कृत में एक शिलालेख (दूसरी शताब्दी ई.पू.) से पता चलता है, जो शक शासक रुद्रदामन की उपलब्धियों को दर्ज करने के लिए लिखा गया था।

(B) सुदर्शन झील की मरम्मत की आवश्यकता थी क्योंकि एक भयानक तूफान ने झील के तटबंध तोड़ दिए और झील का सारा पानी बह गया।

(C) शासकों ने सिंचाई की व्यवस्था की जिसमें झीलों का निर्माण और मरम्मत आदि शामिल थी क्योंकि सिंचाई कृषि की उन्नति और अंततः खाद्य सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण थी। झीलों, कुओं, टैंकों और नहरों के माध्यम से कृषि उत्पादन बढ़ाने के लिए सिंचाई को अपनाया गया।

2. सीमाओं का महत्त्व

मनुस्मृति आरंभिक भारत का सबसे प्रसिद्ध विधिग्रंथ है। इसे संस्कृत भाषा में दूसरी शताब्दी ई.पू. और दूसरी शताब्दी ई. के बीच लिखा गया था। इस ग्रंथ में राजा को यह सलाह दी गई है :

चूँकि सीमाओं की अनभिज्ञता के कारण विश्व में बार-बार विवाद पैदा होते हैं इसलिए उसे सीमाओं की पहचान के लिए गुप्त निशान ज़मीन में गाड़ कर रखने चाहिए जैसे कि पत्थर, हड्डियाँ, गाय के बाल, भूसी, राख, खपटे, गाय के सूखे गोबर, ईंट, कोयला, कंकड़ और रेत। उसे सीमाओं पर इसी प्रकार के और तत्व भूमि में छुपा कर गाड़ने चाहिए जो समय के साथ नष्ट न हों।

(A) सीमाओं का विवाद क्यों उत्पन्न होते थे? व्याख्या करें।
(B) सीमा समस्याओं को हल करने के तरीके सुझाएं।
(C) आज भारत के सामने आने वाली ऐसी किसी भी समस्या को उदाहरण सहित समझाइए।

उत्तर:

(A) सीमाओं की अनभिज्ञता के कारण विश्व में बार-बार विवाद पैदा होते हैं।

(B) सीमाओं की पहचान के लिए गुप्त निशान ज़मीन में गाड़ कर रखने चाहिए जैसे कि पत्थर, हड्डियाँ, गाय के बाल, भूसी, राख, खपटे, गाय के सूखे गोबर, ईंट, कोयला, कंकड़ और रेत। उसे सीमाओं पर इसी प्रकार के और तत्व भूमि में छुपा कर गाड़ने चाहिए जो समय के साथ नष्ट न हों।

(C) भारत को उन गांवों में ऐसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है जहां भूमि रिकॉर्ड खराब तरीके से बनाए और रखे जाते है और विभिन्न हितधारक विवादित भूमि पर अपने स्वामित्व का दावा करने की कोशिश करते हैं।

विषय–III
बंधुत्व; जाति तथा वर्ग

श्री अलेक्जेंडर खान खाना
स्ना. शि. के. वि. चंद्रपुरा

स्मरणीय बिन्दु :–

- समकालीन समाज को समझने के लिए इतिहासकार प्रायः साहित्यिक परम्पराओं का उपयोग करते हैं।
- यदि इन ग्रंथों का प्रयोग सावधानी से किया जाए तो समाज में प्रचलित आचारव्यवहार और रिवाजों का इतिहास – लिखा जा सकता है।
- उपमहाद्वीप के सबसे समृद्ध ग्रंथों में से एक 'महाभारत' जैसे विशाल महाकाव्य के विश्लेषण में उस समय की सामाजिक श्रेणियों तथा आचारव्यवहार के मानदंडों को जानने का प्रयास किया गया है।–
- 1919 में प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान वीसुकथांकर के नेतृत्व में महाभारत का समालोचनात्मक संस्करण .एस . तैयार करने की शुरूआत हुई। इस परियोजना को पूरा करने में सैंतालीस वर्ष लगे ।
- महाभारत की मूल कथा के रचयिता संभवतः भाट सारथी थे जिन्हें सूत कहा जाता था । ये क्षत्रिय योद्धाओं के साथ युद्ध क्षेत्र में जाते थे। साहित्यिक परंपरा के अनुसार इस बृहत रचना के रचयिता ऋषि व्यास थे जिन्होंने श्री गणेश से यह ग्रंथ लिखवाया।

- नए नगरों के उद्भव से सामाजिक जीवन अधिक जटिल हुआ –। इस चुनौती का जवाब ब्राह्मणों ने समाज के लिए विस्तृत आचार संहिता तैयार करके दिया जैसेधर्मशास्त्र –, मनु स्मृति आदि ।
- धर्म शास्त्रों व धर्मसूत्रों में चारों वर्णों के लिए आदर्श जीविका का वर्णन किया गया है।
- ब्राह्मणीय पद्धति में लोगों को गोत्रों में वर्गीकृत किया गया है। प्रत्येक गोत्र एक वैदिक ऋषि के नाम पर होता था।
- गोत्रों के दो नियम महत्वपूर्ण थे विवाह के पश्चात स्त्रियों को पिता के स्थान पर पति के गोत्र का माना जाता था तथा एक ही गोत्र के सदस्य आपस में विवाह संबंध नहीं रख सकते थे ।
- 'जाति' शब्द इस काल की सामाजिक जटिलताएँ दर्शाता है । ब्राह्मणीय सिद्धांत में वर्ण की तरह जाति भी जन्म पर आधारित थी ।
- उपमहाद्वीप में पाई जाने वाली कुछ विविधताओं की वजह से कुछ समुदायों जैसेनिषाद –, मलेच्छ आदि पर ब्राह्मणीय विचारों का कोई प्रभाव नहीं पड़ा ।
- ब्राह्मणों ने समाज में कुछ वर्गों को 'अस्पृश्य' घोषित कर सामाजिक वैमनस्य को और अधिक (जैसे चाण्डाल) प्रखर बनाया।
- मनु स्मृति में चाण्डालों के कर्तव्यों की सूची मिलती है । मनु समृति की रचना महर्षि मनु द्वारा की गई थी ।
- मनुस्मृति के अनुसार पैतृक जायदाद का मातापिता की मृत्यु क–े बाद सभी पुत्रों में समान रूप से बंटवारा किया जाना चाहिए किन्तु ज्येष्ठ पुत्र का विशेष भाग का अधिकार था।

- धर्मशास्त्र और धर्मसूत्र विवाह के आठ प्रकारों को अपनी स्वीकृति देते हैं। इनमें से पहले चार उत्तम माने जाते थे और बाकियों को निंदित माना गया।
- ब्राह्मणीय सिद्धांत में वर्ण की तरह जाति भी जन्म पर आधारित थी, किंतु वर्ण जहाँ मात्र चार थे वहीं जातियों की कोई निश्चित संख्या नहीं थी । वस्तुतः जहाँ कहीं भी ब्राह्मणीय व्यवस्था का नए समुदायों से आमनासामना हुआ–, यथा निषाद, स्वर्णकार और उन्हें चार वर्णों वाली व्यवस्था में समाहित करना संभव नहीं था, उनका जाति में वर्गीकरण कर दिया गया।
- ब्राह्मणीय वर्णव्यवस्था की आलोचनाएँ प्रारम्भिक बौद्ध धर्म में विकसित हुई । बौद्ध धर्म ने सामाजिक विषमता – की उपस्थिति को स्वीकार किया किंतु यह भेद न तो नैसर्गिक थे और न ही स्थायी । बौद्धो ंने जन्म के आधार पर सामाजिक प्रतिष्ठा को अस्वीकार किया।

<u>वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1 अंक)</u>

1. महाभारत का समीक्षात्मक संस्करण किसके नेतृत्व में तैयार किया गया था? **उत्तर**: वी. एस. सुकथांकर.
2. बहिर्विवाह को परिभाषित करें? उत्तर: गोत्र के बाहर विवाह।
3. बहुपत्नी प्रथा को परिभाषित करें? उत्तर: एक से अधिक पत्नियाँ ।
4. सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण किसने करवाया? **उत्तर**: शक शासक रुद्रदामन।
5. उस शासक का नाम बताइए जिसने स्वयं को एक अनूठा ब्राह्मण और क्षत्रियों के दर्प का हनन करने का दावा किया। उत्तर: सातवाहन शासक गौतमीपुत्त सिरीसातकनि।
6. गिल्ड या श्रेणी क्या हैं? **उत्तर**: व्यापारियों या कारीगरों का संघ।
7. मंदसौर नामक अभिलेख में किस श्रेणी का जिक्र मिलता हैं **उत्तर**: रेशम बुनकर।
8. मनुस्मृति का संकलन कब हुआ था?

(A) 200 BCE और 200 CE के मध्य (B). 400 BCE और 400 CE के मध्य
(C) 600 BCE और 600 CE के मध्य (D) कोई नहीं

उत्तर: A

9. मौर्यों के तत्काल उत्तराधिकारी कौन थे?

A. शुंग B. कुषाण C. कण्व D. गुप्त

उत्तर: A

10. चांडालों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है:

A. उन्हें गाँव से बाहर रहना पड़ता था B. वे रात में गाँवों और शहरों में घूम-फिर नहीं सकते थे

C. मृतकों के कपड़े और लोहे के आभूषण पहनना D. उन्हें पदानुक्रम के शीर्ष पर रखा गया था

उत्तर : D

11. किस प्रकार के विवाह में एक महिला के कई पति होते हैं?

(A) अंतर्विवाह (B) बहिर्विवाह (C) बहु विवाह (D) बहुपतित्व

उत्तर : D

12. मध्य एशिया से आए शकों को ब्राह्मण मानते थे: **उत्तर**: म्लेच्छ

13. महाभारत की मूल कहानी किसके द्वारा रचित थी? **उत्तर**: सूत

14. मनुस्मृति के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?

A. माता-पिता की मृत्यु के बाद पैतृक संपत्ति को बेटों के बीच समान रूप से विभाजित किया जाना था

B. सबसे बड़े के लिए एक विशेष हिस्से के साथ.

C. महिलाएं इन संसाधनों में हिस्सेदारी का दावा नहीं कर सकती थीं।

D. उपरोक्त सभी

उत्तर : D

15. निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?

(A) विवाह के बाद महिलाओं से अपेक्षा की जाती थी कि वे अपने पिता का गोत्र छोड़ दें।

(B) उन्हें अपने पति का गोत्र अपनाना होता था।

(C) एक ही गोत्र के सदस्य विवाह कर सकते थे।

(D) प्रत्येक गोत्र का नाम एक वैदिक ऋषि के नाम पर रखा गया था

उत्तर: C

16. महाभारत के आलोचनात्मक संस्करण के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. कहानी के संस्कृत संस्करणों में कई सामान्य तत्व थे।

II. कहानी में भारी क्षेत्रीय विविधताएँ हैं।

III. इन प्रक्रियाओं के बारे में हमारी समझ मुख्य रूप से संस्कृत में लिखे गए ग्रंथों से ली गई है।

IV. महाभारत का आलोचनात्मक संस्करण तैयार करने की परियोजना को पूरा होने में केवल 37 वर्ष लगे।

निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है/हैं?

A. केवल I सही है। B. I और II सही हैं। C. I, II और III सही हैं। D. उपरोक्त सभी.

उत्तर: C

निर्देश: निम्नलिखित में सही विकल्प चुनें :

(a) यदि कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं और कारण (R) कथन (A) का सही स्पष्टीकरण है।

(b) यदि कथन (A) और कारण (R) दोनों सत्य हैं लेकिन कारण (R) कथन (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(c) कारण (A) सत्य है लेकिन कारण (R) गलत है।

(d) कथन (A) और कारण (R) दोनों गलत हैं।

17. कथन (A): बृहदारण्यक उपनिषद सबसे शुरुआती उपनिषदों में से एक है।

कारण (R): इसमें शिक्षकों और छात्रों की क्रमिक पीढ़ियों की एक सूची शामिल है, जिनमें से कई को उनके मातृनामों द्वारा नामित किया गया था।

उत्तर: A

18. कथन: सातवाहन, कुषाण और शक जैसे गैर-क्षत्रिय राजाओं के कई उदाहरण थे
कारण: शास्त्रों के अनुसार राजा कोई भी वर्ण का हो सकता था।
उत्तर: C
19. कथन: इतिहासकार आमतौर पर महाभारत की सामग्री को दो खंडों के अंतर्गत वर्गीकृत करते हैं- आख्यान और उपदेशात्मक।
कारण: आम तौर पर, इतिहासकार इस बात से सहमत हैं कि महाभारत एक नाटकीय, मार्मिक कहानी थी, और उपदेशात्मक भाग संभवतः बाद में जोड़े गए थे।
उत्तर: B
20. कथन: धर्मशास्त्र और धर्मसूत्र ने विवाह के कुछ रूपों की निंदा की।
कारण: यह संभव है, इनका अभ्यास उन लोगों द्वारा किया जाता था जो ब्राह्मणवादी मानदंडों को स्वीकार नहीं करते थे।
उत्तर: A

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक)

1. महाभारत की भाषा और विषयवस्तु का वर्णन करें? ***

• मूल महाभारत को संस्कृत भाषा में लिखा गया था, हालाँकि महाभारत में प्रयुक्त संस्कृत वेदों की तरह कठिन नहीं थी।

• महाभारत की विषयवस्तु को इतिहासकार द्वारा दो मुख्य शीर्षकों -आख्यान तथा उपदेशात्मक-में वर्गीकृत किया गया है।

• आख्यान में कहानियों का संग्रह हैं जबकि उपदेशात्मक भाग में सामाजिक आचार -विचार के मानदंडों का विवरण हैं।

•अधिकतर इतिहासकार इस बात पर एकमत है कि महाभारत मूलतः एक भाग में नाटकीय कथानक था, जिसमें उपदेशात्मक अंश बाद में जोड़े गए।

2. महाभारत के लेखक और महाभारत के लेखन काल के विषय में आप क्या जानते हैं? स्पष्ट कीजिए।? ***

उत्तर: महाभारत के लेखक एवं **लेखन काल के विषय में** भिन्न-भिन्न मत हैं।

- परंपरा के अनुसार, महर्षि व्यास ने महाभारत की रचना की।
- इतिहासकारों का मानना है कि संभवतः मूल कथा के रचयिता भाट सारथी, थे जिन्हें सूत कहा जाता था। सूत आम तौर पर क्षत्रिय योद्धाओं के साथ युद्ध के मैदान में जाते थे और उनकी विजय और उपलब्धियों के बारे में कविताएं लिखते थे। ये रचनाएँ एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक मौखिक रूप से प्रेषित होती रहीं।
- पाँचवी शताब्दी ई से ब्राह्मणों ने एस कथा पर अपना अधिकार कर लिया। .पू.
- इतिहासकार का मत है कि महाभारत की रचना लंबे समय तक प्रक्रिया में रही। इसकी रचना 200 ईसा पूर्व से 200 ईस्वी के बीच शुरू हुई। उल्लेखनीय है कि यह वह काल था जब भगवान विष्णु की पूजा का महत्व बढ़ रहा था।
- ऐसा माना जाता है कि मनुस्मृति से मिलते जुलते बड़े उपदेशात्मक खंड-200 ईसा पूर्व से 400 ईस्वी की अवधि के दौरान महाकाव्य में जोड़े गए थे।

3. "धर्म सूत्रों और धर्म शास्त्रों में चारों वर्गों के लिए आदर्श जीविका से जुड़े कई नियम मिलते हैं। "इस कथन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। ***

उत्तर: धर्म सूत्रों और धर्मशास्त्रों में चारों वर्गों से जुड़े आदर्श जीविका के बारे में निम्नलिखित नियम मिलते है:

- ब्राह्मणों का कार्य अध्ययन, वेदों की शिक्षा, यज्ञ करना और करवाना था तथा उनका काम दान देना और दान लेना था।
- क्षत्रियों का कर्म युद्ध करना, लोगों को सुरक्षा प्रदान करना, न्याय करना, वेद पढ़नायज् ,ञ करवाना और दान दक्षिणा - देना था।
- वैश्यों के लिए कृषि, पशुपालन और व्यापार का कर्म अपेक्षित था।
- शूद्रों के लिए मात्र एक ही जीविका थी -तीनों 'उच्च' वर्णों की सेवा करना।

4. चांडालों के लिए मनुस्मृति में बताए गए कर्तव्यों का आलोचनात्मक परीक्षण करें। ***

उत्तर: मनुस्मृति में चांडालों के कर्तव्यों की निम्नलिखित सूची मिलती हैं:

- उन्हें गाँव के बाहर रहना पड़ता था, फेंके हुए बर्तनों का उपयोग करना पड़ता था, और मृतकों के कपड़े और लोहे के गहने पहनने पड़ते थे।
- वे रात में गांवों और शहरों में बाहर नहीं निकल सकते थे।
- उन्हें उन लोगों के शवों का निपटान करना था जिनके कोई रिश्तेदार नहीं थे और उन्हें वधिक के रूप में भी काम करना पड़ता था।
- पांचवीं शताब्दी ईस्वी में भारत आए फाशिए-न ने लिखा है कि अस्पृष्यों को सड़क पर चलते हुए "तालियां"बजा कर अपने आने की सूचना देनी होती थी जिससे अन्य जन उन्हें देखने के दोष से बच जाएं।

5. आप कैसे सिद्ध करेंगे कि महाभारत एक गतिशील ग्रन्थ था? स्पष्ट कीजिए।***

- महाभारत की एक महत्वपूर्ण विशेषता इसकी गतिशीलता है,
- महाभारत का विकास संस्कृत संस्करण के साथ ही समाप्त नहीं ही गया । इस महाकाव्य के अनेक संस्करण सदियों से विभिन्न भाषाओं में लिखे गए।
- इस महाकाव्य की केंद्रीय कहानी को कई तरीकों से दोहराया गया है ।
- महाकाव्य के कई प्रसंगों को मूर्तिकला और चित्रों के माध्यम से भी चित्रित किया गया है।
- इस महाकाव्य ने नाटकों और नृत्य कलाओं के लिए भी विषयवस्तु प्रदान की।
- आधुनिक समय में कई विद्वानों ने इस महाकाव्य के मुख्य कथाओं को रचनात्मक तरीकों से अपनी पुनर्कथन और पुन: रचनाओं में प्रस्तुत किया है।

6. महाभारत काल के द्वितीय चरण में मिलने वाले घरों के बारे में बी.बी.लाल ने क्या लिखा है? स्पष्ट कीजिए । **

- 1951-52 में जब एक भारतीय पुरातत्वविद् बीलाल ने मेरठ जिले के हस्तिनापुर गाँव में उत्खनन कार्य शुरू किया.बी., तो उन्हें पाँच स्तरों के साक्ष्य मिले। इनमें से दूसरे और तीसरे स्तर का बहुत महत्व है।
- दूसरे स्तर से प्राप्त घर के बारे में बी बी लाल ने निष्कर्ष निकाला, जिस सीमित क्षेत्र की खुदाई हुई वहाँ से आवास गृहों की कोई निश्चित योजना मिलती, किन्तु मिट्टी की बनी दीवारें और कच्ची मिट्टी की ईंटें अवश्य मिलती हैं ।
- कुछ घरों की दीवारें सरकंडों की बनी थी जिन पर मिट्टी का प्लास्टर चढ़ा दिया जाता था ।

<u>दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक)</u>

7. मनुस्मृति के अनुसार माता –पिता की मृत्यु के पश्चात्, पैतृक जायदाद का बटवारा किस प्रकार किया जाता था ?विशेष रूप से महिलाओं के अधिकारों का वर्णन कीजिए|***

- मनुस्मृति के अनुसार, **पैतृक जायदाद का** माता पिता की मृत्यु के बाद-सभी पुत्रों में समान रूप से बटवारा किया जाना चाहिए किन्तु बड़ा पुत्र विशेष भाग का अधिकारी था।
- महिलाएं पैतृक संपत्ति में हिस्सेदारी की मांग नहीं कर सकती थीं। हालाँकि, महिलाएँ अपनी शादी के अवसर पर प्राप्त उपहार को स्त्रीधन के रूप में अपने पास रख सकती थीं।
- इस संपत्ति को उनकी संतान विरासत के रूप में प्राप्त कर सकती थी और इस पर उसके पति का कोई अधिकार नहीं होता था ।
- मनुस्मृति के अनुसार, महिलाओं को अपने पति की अनुमति के बिना पारिवारिक संपत्ति और अपने बहुमूल्य धन का गुप्त संचय नहीं करनी चाहिए।
- किन्तु अधिकतर अभिलेखीय तथा साहित्यिक प्रमाणों से पता चलता है कि उच्च वर्ग की महिलाओं की संसाधनों तक पहुंच होती थी, सामान्यतः भूमि, पशु और धन पर पुरुषों का ही नियंत्रण था।

8. उन प्रमाणों का वर्णन कीजिए जो यह सुझाते हैं कि बंधुत्व और विवाह सम्बन्धी ब्राह्मणीय नियमों का महाभारत काल में सर्वत्र अनुसरण नहीं होता था ?***

- परिवार प्रणालीशब्द का उपयोग परिवार और पारिवारिक संबंध को निर्दिष्ट करने "कुल" संस्कृत ग्रंथों में – : के लिए किया जाता है जो रक्त संबंधों पर आधारित होते थे। हालाँकि, कुछ समाज चचेरे भाईबहनों को भी– खून का रिश्ता मानते हैं, जबकि अन्य ऐसा नहीं मानते थे।
-) II) पितृवंशीय व्यवस्थाब्राह्मणवादी व्यवस्था के अनुसार केवल पुत्र ही अपने पिता की मृत्यु के बाद उनके – : जैसे कौरव और –दूसरे के उत्तराधिकारी बने–कभी भाई एक–संसाधनों पर दावा कर सकते थे। हालाँकि कभी पांडव और बहुत ही असाधारण परिस्थितियों में जैसी महिलाओं ने भी शक्ति का प्रयोग किया। "प्रभावती गुप्ता"
- विवाह के नियम" ब्राह्मणवादी व्यवस्था के अनुसार –:बहिर्विवाह, जो गोत्र के बाहर विवाह को संदर्भित करता है, विवाह का आदर्श रूप था। यह पिता का धार्मिक कर्तव्य था कि वह अपनी बेटी की शादी गोत्र के बाहर सही समय पर उचित व्यक्ति से करे।

  हालाँकि, धर्मसूत्र और धर्मशास्त्र विवाह के रूपों को मान्यता देते हैं। इनमें से पहले चार को "आठ" माना गया "अच्छा"हैं जबकि शेष की निंदा की गई है । यह संभव है कि इनका अभ्यास उन लोगों द्वारा किया जाता था जो ब्राह्मणवादी मानदंडों को स्वीकार नहीं करते थे।
- महिलाओं का गोत्रमहिलाओं से अपेक्षा की जाती थी कि वे विवाह के :गोत्र प्रणाली के बारे में दो नियम हैं – : समय अपने पिता के गोत्र को छोड़कर अपने पति के गोत्र को अपनाएंगी और समान गोत्र के सदस्य विवाह नहीं कर सकते थे।

हालाँकि, कुछ सातवाहन शासकों ने अपनी माँ के गोत्र को अपनाया, उदाहरण के लिए राजा गौतमी–पुत–सिरी–सातकिनी। सातवाहन शासकों में से कुछ बहुपत्नी थे।सातवाहन शासकों से विवाह करने वाली महिलाओं के नामों की सावधानीपूर्वक जांच से पता चलता है कि वे एक ही गोत्र की थीं। उदाहरण के लिए, राजा गौतमी–पुता सिरी–विजया–सताकानि।

- गैर क्षत्रिय राजा धर्मशास्त्रों और धर्मसूत्रों के अनुसार केवल क्षत्रिय –: ही राजा बन सकते थे । लेकिन हम पाते हैं कि शुंग और कण्व ब्राह्मण थे। शकों का उल्लेख मलेच्छ के रूप में किया गया है।

इन सभी साक्ष्यों से पता चलता है कि बंधुत्व और विवाह सम्बन्धी ब्रहाम्नीय नियमों का महाभारत काल में सर्वत्र अनुसरण नहीं होता था।

9. ब्राह्मणवादी व्यवस्था में गोत्र के क्या नियम थे? उदाहरण के साथ सिद्ध कीजिए कि इन नियमों का हमेशा पालन नहीं किया जाता था। ***

ब्राह्मणवादी प्रथाओं के अनुसार,

- प्रत्येक गोत्र का नाम एक वैदिक ऋषि के नाम पर रखा गया था।
- एक ही गोत्र के सभी व्यक्ति उनके वंशज माने जाते थे।
- एक ही गोत्र के व्यक्ति आपस में विवाह नहीं कर सकते।
- विवाह के बाद एक महिला से अपेक्षा की जाती थी कि वह अपने पति का गोत्र अपनाएगी और अपने पिता का गोत्र छोड़ देगी।

हालाँकि, ऐसा प्रतीत होता है कि न तो यह प्रथा पूरे देश में प्रचलित थी और न ही इसका व्यापक रूप से पालन किया जाता था।

- यह सातवाहन राजाओं के नाम से पूरी तरह स्पष्ट हो जाता है जिन्होंने अपना नाम अपनी मां के नाम से लिया था।
- सातवाहन शासकों से विवाह करने वाली महिलाओं के नाम की जांच से पता चलता है कि उनमें से कई के नाम उनके पिता के गोत्र से लिए गए थे।

10. 1919 में शुरू किए गए महाभारत के आलोचनात्मक संस्करण पर एक निबंध लिखें? ***

• 1919 में भारतीय संस्कृत के विख्यात विद्वान वी. एस. सुकथांकर के नेतृत्व में एक महत्वाकांक्षी परियोजना की शुरुआत हुई।

• इसका मुख्य उद्देश्य महाभारत का आलोचनात्मक संस्करण तैयार करना था।

• इस परियोजना के तहत विद्वानों ने देश के विभिन्न हिस्सों से विभिन्न लिपियों में लिखे गए महाभारत की संस्कृत पांडुलिपियां एकत्र कीं।

• विभिन्न पांडुलिपियों में कई असमानताएँ थीं। इसलिए, विद्वानों ने सभी श्लोकों को एकत्रित किया जो लगभग सभी पांडुलिपियों में पाए गए थे ।

• फिर उन्हें 13,000 से अधिक पृष्ठों के कई खंडों में प्रकाशित किया गया।

• यह परियोजना 47 वर्षों की लंबी अवधि में पूरी की गई।

• इस प्रक्रिया में दो बातें उभर कर सामने आईं (i) पहली, पूरे उप महाद्वीप में पाई गई सभी पांडुलिपियों के अनेक अंशों में समानता थी । (ii) दूसरी, समय बीतने के साथ पाठ को प्रेषित करने के तरीकों में कई क्षेत्रीय विविधताएँ उभर कर सामने आईं। इन विविधताओं को फ़ुटनोट और परिशिष्ट के रूप में मुख्य पाठ में प्रलेखित किया गया था।

• यह उल्लेखनीय है कि 13,000 पृष्ठों में से आधी से भी अधिक पृष्ठों में विविधताएं व्याप्त हैं।

• ये विविधताएँ हमें उन जटिल प्रक्रियाओं से परिचित कराती हैं जिन्होंने प्रमुख परंपरा और लचीले स्थानीय विचारों और प्रथाओं के बीच संवाद स्थापित करके सामाजिक इतिहास को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्रोत आधारित प्रश्न

1. बाघ सदृश पति

यह सारांश महाभारत के आदिपर्वन् से उद्धृत कहानी का है :

पांडव गहन वन में चले गए थे। थक कर वे सो गए; केवल द्वितीय पांडव भीम जो अपने बल के लिए प्रसिद्ध थे, रखवाली करते रहे। एक नरभक्षी राक्षस को पांडवों की मानुष गंध ने विचलित किया और उसने अपनी बहन हिडिम्बा को उन्हें पकड़कर लाने के लिए भेजा। हिडिम्बा भीम को देखकर मोहित हो गईं और एक सुंदर स्त्री के वेष में उसने भीम से विवाह का प्रस्ताव किया, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया। इस बीच राक्षस वहाँ आ गया और उसने भीम को मल्ल युद्ध के लिए ललकारा। भीम ने उसकी चुनौती को स्वीकार किया और उसका वध कर दिया। शोर सुनकर अन्य पांडव जाग गए। हिडिम्बा ने उन्हें अपना परिचय दिया और भीम के प्रति अपने प्रेम से उन्हें अवगत कराया। वह कुंती से बोली : "हे उत्तम देवी, मैंने मित्र, बांधव और अपने धर्म का भी परित्याग कर दिया है और आपके बाघ सदृश पुत्र का अपने पति के रूप में चयन किया है... चाहे आप मुझे मूर्ख समझें अथवा अपनी समर्पित दासी, कृपया मुझे अपने साथ लें तथा आपका पुत्र मेरा पति हो।"

अंततः युधिष्ठिर इस शर्त पर इस विवाह के लिए तैयार हो गए कि भीम दिनभर हिडिम्बा के साथ रहकर रात्रि में उनके पास आ जाएँगे। यह दंपति दिन भर सभी लोकों की सैर करते। समय आने पर हिडिम्बा ने एक राक्षस पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम घटोत्कच रखा। तत्पश्चात माँ और पुत्र पांडवों को छोड़कर वन में चले गए किंतु घटोत्कच ने यह प्रण किया कि जब भी पांडवों को उसकी ज़रूरत होगी वह उपस्थित हो जाएगा।

कुछ इतिहासकारों का यह मत है कि राक्षस उन लोगों को कहा जाता था जिनके आचार-व्यवहार उन मानदंडों से भिन्न थे जिनका चित्रण ब्राह्मणीय ग्रंथों में हुआ था।

A. आदिपर्वन की कहानी ने समाज के मूल्य और लोकाचार को आकार देने में कैसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?

B. यह कहानी किस प्रकार बहिर्विवाह का अनोखा उदाहरण है?

C. हिडिम्बा और युधिष्ठिर ने अपने संदर्भ में धर्म की व्याख्या कैसे की?

उत्तर: (A) आदिपर्वन की कहानी से पता चलता है कि इस उपमहाद्वीप में विविधता थी। ऐसे लोग थे जिनकी आजीविका और सामाजिक प्रथाएँ ब्राह्मणवादी विचारों से मेल नहीं खाती थीं, उदाहरण के लिए, इस कहानी में राक्षस वर्ग। लेकिन समाज ने उन्हें कुछ पूर्व शर्तों के साथ स्वीकार किया। यहाँ भी हिडिम्बा को कुछ पूर्व शर्तों के साथ स्वीकार कर लिया गया।

(B) बहिर्विवाह का तात्पर्य इकाई के बाहर विवाह से है। इधर, हिडिम्बा राक्षस वर्ग का था और भीम क्षत्रिय वर्ग का था। इनका विवाह एवं दाम्पत्य जीवन बहिर्विवाह का अनुपम उदाहरण है।

(C) हिडिम्बा ने भीम के प्रति अपने प्यार की खातिर अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और धर्म को त्याग दिया। वह अपने प्रेम को अपने जीवन का अंतिम लक्ष्य मानती थी। उधर, हिडिंबा का भीम के प्रति प्रेम देखकर युधिष्ठिर भीम से हिडिंबा के विवाह के लिए राजी हो गए। इधर, युधिष्ठिर हमारे समाज में धर्म की नियमित सीमा से आगे निकल गये।

विषय-IV
विचारक, विश्वास और निर्माण

श्री कुमार राघवेंद्र
स्ना. शि. के. वि. मेघाहातुबुरु

संक्षेप में मुख्य अवधारणाएँ

☐ सबसे अद्भुत और प्राचीन इमारतें साँची कानाखेड़ा में हैं, जो भोपाल से लगभग 20 मील उत्तर-पूर्व में एक पहाड़ी की चोटी के नीचे एक छोटा सा गाँव है।

☐ बौद्ध, जैन और ब्राह्मण ग्रंथ, स्मारक और शिलालेख लगभग 600 ईसा पूर्व-600 ईसा पूर्व के कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत हैं।

☐ भोपाल के शासकों, शाहजहाँ बेगम और उनके उत्तराधिकारी सुल्तान जहाँ बेगम द्वारा प्राचीन स्थलों को संरक्षित करने के लिए बहुत कुछ प्रदान किया गया था।

☐ ऋग्वेद को लगभग 1500 और 1000 ईसा पूर्व के बीच संकलित किया गया था और इसमें विभिन्न देवताओं, विशेष रूप से अग्नि, इंद्र और सोम की स्तुति में भजन शामिल हैं।

☐ वहाँ लगभग 64 संप्रदाय या विचारधाराएँ थीं। शिक्षकों और इन विचारधाराओं के विद्यालयों के बीच जीवंत चर्चाएँ और बहसें हो रही थीं।

☐ कुटागरशाला वे स्थान थे जहां शिक्षकों की बहसें होती थीं, जो एक-दूसरे और आम लोगों को अपने दर्शन की वैधता के बारे में समझाने की कोशिश करते थे।

☐ जैन धर्म का मूल दर्शन वर्धमान महावीर के जन्म से भी पहले से उत्तर भारत में विद्यमान था।

☐ बुद्ध अपने समय के सबसे प्रभावशाली शिक्षक थे।

□ बौद्ध संघ जिसमें भिक्खु और भिक्खुनी शामिल थे, गण और संघ की तर्ज पर कार्य करते थे जहां चर्चाओं के आधार पर आम सहमति बनती थी।

□ त्रिपिटक: त्रिपिटक का शाब्दिक अर्थ है 'तीन टोकरियाँ'। ये बौद्ध ग्रंथ थे जैसे सुत्त पिटक, विनय पिटक और अभिधम्म पिटक।

□ शुरुआती समय में कुछ स्थानों को लोगों द्वारा पवित्र माना जाता था। विशेष वृक्षों या अद्वितीय चट्टानों वाले स्थल, या उनसे जुड़े छोटे मंदिरों वाले प्रेरक प्राकृतिक सौंदर्य वाले स्थल चैत्य के रूप में जाने जाते थे।

□ वे टीले जहां बुद्ध के अवशेष जैसे उनके शारीरिक अवशेष या उनके द्वारा उपयोग की गई वस्तुएं दफनाए गए थे, स्तूप कहलाते थे।

□ बोधिसत्वों को अत्यधिक दयालु (सहानुभूतिपूर्ण) प्राणियों के रूप में माना (देखा) गया था जो दूसरों को निर्वाण प्राप्त करने में मदद कर सकते थे।

□ आधुनिक हिंदू धर्म में दो परंपराओं का समावेश था – वैष्णववाद और शैववाद।

□ पुराण लोगों-पुजारियों, व्यापारियों और सामान्य पुरुषों और महिलाओं के बीच बातचीत के माध्यम से विकसित हुए, जो विचारों और विश्वासों को साझा करने के लिए एक स्थान से दूसरे स्थान की यात्रा करते थे।

□ प्रारंभिक मंदिर एक छोटा चौकोर कमरा था, जिसे गर्भगृह कहा जाता था, जिसमें पूजा करने वालों के प्रवेश करने और छवि की पूजा करने के लिए एक ही द्वार होता था।

वस्तुनिष्ठ (१ अंक)

1. साँची स्तूप अवस्थित है
   उत्तर भोपाल के पास : .
2. 24 जैन धर्म के महान शिक्षकों के रूप में जाना जाता है
   उत्तर :तीर्थंकर
3. गौतम बुद्ध के जन्म स्थान का नाम बताइए।

   उत्तर : लुंबिनी
4. भगवान बुद्ध को किस स्थान पर सच्चा ज्ञान प्राप्त हुआ था?
   उत्तरबोधगया :
5. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?

   a) भोपाल- शाहजहाँ बेगम
   b) तीर्थंकर- बौद्ध धर्म के शिक्षक
   c) स्तूप-भोपाल के पास सांची
   d) जीवनी - संत

   उत्तर: b) तीर्थंकर- बौद्ध धर्म के शिक्षक
6. बुद्ध जिस गण के थे उसका क्या नाम था?
   उत्तरशाक्य –
7. 'तीन टोकरियों' का क्या अर्थ है?
   उत्तरत्रिपिटक :

व्याख्या--बुद्ध के किसी भी भाषण को उनके जीवनकाल में लिखा नहीं गया था। उनकी मृत्यु के बाद, उनकी शिक्षाओं को उनके शिष्यों ने वैशाली में वरिष्ठ भिक्षुओं की एक परिषद में संकलित किया। संकलनों को त्रिपिटक के रूप में जाना जाता था शाब्दिक रूप से -, विभिन्न प्रकार के ग्रंथों को रखने के लिए तीन टोकरियाँ। त्रिपिटक में विनय पिटक, सुत्त पिटक और अभिधम्म पिटक शामिल हैं।

8. सांची स्तूप के संरक्षण के लिए धन किसने प्रदान किया?

उत्तर भोपाल की बेगम

व्याख्या-भोपाल के शासक शाहजहाँ बेगम और उनके उत्तराधिकारी सुल्तान जहाँ बेगम ने प्राचीन स्थल के संरक्षण के लिए धन प्रदान किया।

9. स्तूप में छज्जे जैसी संरचना को क्या कहा जाता था?

उत्तर: हरमिका

10. संघ के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें।

(i) महाप्रजापति गोतमी ने बुद्ध को संघ में महिलाओं की अनुमति देने के लिए राजी किया।

(ii) संघ में प्रवेश करने वाली कई महिलाएँ धम्म की शिक्षिका बन गईं

(iii) एक बार संघ के भीतर, सभी को समान माना जाता था।

निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?

(a) प्रथम और द्वितीय (b) द्वितीय और तृतीय (c) प्रथम और तृतीय (d) केवल द्वितीय

उत्तर: (b) द्वितीय और तृतीय

व्याख्या- प्रारम्भ में संघ में केवल पुरुषों को ही प्रवेश दिया जाता था, बाद में स्त्रियों को भी प्रवेश दिया जाने लगा। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार, यह बुद्ध के सबसे प्रिय शिष्यों में से एक, आनंद की मध्यस्थता के माध्यम से संभव हुआ, जिन्होंने उन्हें संघ में महिलाओं की अनुमति देने के लिए राजी किया।

11. निम्नलिखित का मिलान कीजिये।

(i) लुंबिनी (क) बुद्ध ने निब्बान प्राप्त किया

(ii) कुशीनगर (b) बुद्ध ने अपना पहला उपदेश दिया

(iii) सारनाथ (c) बुद्ध का जन्म हुआ था

(iv) बोधगया (d) बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया

सही विकल्प चुनें

(a) i - b, ii - c, iii - a, iv - d (b) i - c, ii - a, iii - b, iv - d

(c) i - c, ii - b, iii - a, iv - d (d) i - d, ii - a, iii - b, iv - c

उत्तर: (b) i - C, ii - A, iii - B, iv - D

12. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है:

अभिकथन (A): मध्य-पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व ने भारत में नए धर्मों के उद्भव को देखा।

कारण (R) : लोगों ने वेदों की बलि परंपरा और सत्ता के महत्व के बारे में अनुमान लगाना शुरू कर दिया।

(A) दोनों (A) और (R) सही हैं और (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है।

(B) दोनों (A) और (R) सही हैं और (R) (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है।

(C) (A) सही है लेकिन (R) सही नहीं है।

(D) (R) सही है लेकिन (A) सही नहीं है।

उत्तर: (A) और (R) दोनों सही हैं और (R) सही है

13. बौद्ध साहित्य किस भाषा में लिखा गया था?

उत्तर- पाली भाषा

14. "ताज-उल-इकबाल तारिख भोपाल" किस शासक की आत्मकथा है?

उत्तर- शाहजहाँ बेगम

15. निम्नलिखित में से कौन सा बुद्ध जीवन के संबंध में सही ढंग से मेल नहीं खाता है?

(A) जहां उनका जन्म हुआ था - लुंबिनी

(B) जहां उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया - सूरसेन

(C) जहां उन्होंने अपना पहला उपदेश दिया- सारनाथ

(D) जहां उन्होंने निर्वाण- कुशीनगर प्राप्त किया

उत्तर- (B) जहां उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया - सूरसेन स्पष्टीकरण - बुद्ध ने बोधगया में ज्ञान प्राप्त किया

16. निम्नलिखित छवि को पहचानें।

उत्तर- साँची स्तूप (ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी में अशोक द्वारा निर्मित)

17. सांची स्तूप से कौन सी जातक कथा जुड़ी हुई है?

उत्तर - वेस्सन्तर जातक

व्याख्या--प्राथमिक दृष्टि से यह मूर्ति छप्पर की झोपड़ियों और वृक्षों के साथ एक ग्रामीण दृश्य का चित्रण करती प्रतीत होती है। हालांकि, सांची में मूर्तिकला का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने वाले कला इतिहासकारों ने इसे वेसंतरा जातक के एक दृश्य के रूप में पहचाना। यह एक उदार राजकुमार की कहानी है जिसने एक ब्राह्मण को सब कुछ दे दिया और अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जंगल में रहने चला गया।

18. भिक्खुनी के रूप में अभिषिक्त होने वाली पहली महिला कौन थी?

उत्तर- महाप्रजापति गोतमी

19. वैष्णववाद परंपरा में कितने अवतारों को मान्यता दी गई थी?

(A) 12 (B) 10 (C) 14 (D) 11

Ans-10

व्याख्या--परंपरा में दस अवतारों की मान्यता है। ये ऐसे रूप थे जिनके बारे में माना जाता था कि देवता ने दुनिया को बचाने के लिए ग्रहण किया था, जब भी इसे बुरी ताकतों के प्रभुत्व के कारण अव्यवस्था और विनाश का खतरा था।

अवतार थे- मत्स्य, कच्छप, वराह, नरसिंह, वामन, परशुराम, राम, बुद्ध, कल्कि

20. भिक्कुनी द्वारा रचित श्लोकों के संग्रह का नाम बताइए।
उत्तर- थेरीगाथा (थेरिस का अर्थ है ऐसी महिलाएँ जिन्होंने मुक्ति प्राप्त की)
21. जेम्स फर्ग्यूसन कौन थे?
उत्तर- कला इतिहासकार
22. हीनयान और महायान का संबंध किस धर्म से है?
उत्तर- बौद्ध धर्म
23. बुद्ध के उपदेश किस पिटिका से युक्त हैं ?
उत्तर- सुत्त पिटिका
24. विनय पिटिका में क्या होता है?
उत्तर- यह संघ में शामिल होने वाले व्यक्ति द्वारा पालन किए जाने वाले नियमों और विनियमों का संग्रह है।
25. "शिखर" से आप क्या समझते हैं?
उत्तर- यह गर्भ-गृह (जहां प्रमुख देवता स्थित हैं) के शीर्ष पर निर्मित एक उच्च अधिरचना है।

लघुउत्तरीय प्रश्न (३ अंक)

26. **बौद्ध स्तूपों को "पत्थर की कहानियाँ" क्यों कहा जाता है? व्याख्या करें।**
उत्तर:
प्रत्येक बौद्ध स्तूप का अपना एक इतिहास है। स्तूपों में मूर्तियां अलग-अलग कहानियों को दर्शाती हैं जो उस समय के विभिन्न ग्रंथों से ली गई थीं। कला इतिहासकारों ने पहचान की है कि सांची में मूर्तिकला वेसंतरा जातक का एक दृश्य था। अक्सर इतिहासकारों ने मूर्तिकला के अर्थ को पाठ्य साक्ष्यों से तुलना करके समझने की कोशिश की।
27 **समालोचनात्मक जाँच कीजिए कि साँची क्यों बच गया जबकि अमरावती नहीं बचा?**
उत्तर: अमरावती का स्तूप बौद्ध स्तूपों में सबसे बड़ा और सबसे महत्वपूर्ण स्तूप था। सांची का स्तूप बच गया जबकि अमरावती नहीं। इसके कारण हैं:
1. ऐसा कहा जाता है कि अमरावती के स्तूप की खोज सांची के स्तूप से कुछ समय पहले की गई थी। शायद, विद्वानों को पुरातात्विक अवशेषों को उस स्थान पर संरक्षित करने के महत्व के बारे में पता नहीं था जहां वे मूल रूप से पाए गए थे।
2. सांची स्तूप की खोज सन् 1818 में हुई थी। उस समय इसके चार में से तीन द्वार खड़े थे, चौथा मौके पर ही पड़ा था और टीला अच्छी स्थिति में था।
3. लेकिन अमरावती से, लंदन में ब्रिटिश प्रशासन द्वारा बगीचों को सजाने के लिए मूर्तियों के कई टुकड़े पहले से ही इस्तेमाल किए गए थे।
4. शाहजहाँ बेगम और सुल्तानजहाँ बेगम की सहायता के कारण जिन्होंने साँची के संरक्षण के लिए धन प्रदान किया।
28. **साँची के स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों की भूमिका की चर्चा कीजिए।**
सांची के स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों का बहुत बड़ा योगदान है। उनके द्वारा किए गए प्रमुख योगदान निम्नलिखित हैं।
(a) भोपाल के शाहजहाँ बेगम और उनके उत्तराधिकारी सुल्तान जहाँ बेगम भोपाल के शासक थे, जिन्होंने सांची के स्तूप के संरक्षण के लिए उदार अनुदान दिया था।

(b) स्तूप के पास एक संग्रहालय बनाया गया था और इसे मुख्य रूप से बेगम सुल्तान जहां बेगम के वित्तीय समर्थन पर बनाया गया था।

(c) स्तूप को संरक्षित करने का समर्थन यूरोपीय लोगों से भी आया था।

(d) फ्रांसीसी और ब्रिटिश दोनों स्तूपों के स्तंभों की प्लास्टर कास्ट प्रतियां फ्रांस और ब्रिटेन के संग्रहालयों में प्रदर्शित करने के लिए ले गए। उन्होंने स्तूप के संरक्षण के लिए आर्थिक रूप से भी योगदान दिया।

29. **चर्चा कीजिए कि स्तूप कैसे और क्यों बनाए गए?**

1. स्तूपों का निर्माण उनके निर्माण के लिए किए गए दान से हुआ था। सातवाहन जैसे राजा, धनी व्यक्ति, व्यापारियों और कारीगरों के समूह और यहाँ तक कि भिक्षुओं, आम लोगों और ननों ने स्तूपों के निर्माण के लिए दान दिया।

2. स्तूपों को पवित्र स्थान माना जाता था और बुद्ध के अवशेष यानी उनके शरीर के अवशेष या उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली वस्तुओं को यहाँ दफनाया गया था। इन टीलों को स्तूप कहा जाता था।

3. अशोक ने प्रत्येक महत्वपूर्ण नगर को बुद्ध के अवशेषों के अंश वितरित किए और उन पर स्तूपों के निर्माण का आदेश दिया। दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व तक, भरहुत, सांची और सारनाथ सहित बड़ी संख्या में स्तूपों का निर्माण किया गया था।

30. (a) स्तूप क्यों बनाए गए थे?

(b) अशोक ने बुद्ध के अवशेषों का क्या किया?

(c) स्तूपों की संरचना का वर्णन कीजिए।

(d) इलियट मार्बल्स किसे कहते हैं?

उत्तर:

a) स्तूपों का निर्माण इसलिए किया गया क्योंकि बुद्ध के अवशेष जैसे कि उनके शरीर के अवशेष या उनके द्वारा उपयोग की जाने वाली वस्तुएँ वहाँ गाड़ दी गई थीं। इन टीलों को स्तूप कहा जाता था जो बौद्ध धर्म से जुड़े हुए थे।

b) अशोक ने प्रत्येक महत्वपूर्ण नगर को बुद्ध के अवशेषों के अंश वितरित किए और उन पर स्तूपों के निर्माण का आदेश दिया।

c) स्तूपों की संरचना इस प्रकार है:

अंडा: यह पृथ्वी का एक अर्धवृत्ताकार टीला है जिसे अंडा कहा जाता है।

हरमिका: अंडा के ऊपर हर्मिका थी, एक बालकनी जैसी संरचना जो देवताओं के निवास का प्रतिनिधित्व करती थी।

यष्टि हर्मिका से उत्पन्न होने वाला मस्त यष्टि कहलाता था। इसके ऊपर एक छतरी या छतरी होती थी।

d) 1854 में गुंटूर के आयुक्त वाल्टर इलियट ने अमरावती से मद्रास तक कई मूर्तिकला के नमूने मद्रास लेते चले गए। इन पैनलों को इलियट मार्बल्स के नाम से जाना जाता है।

31. **महावीर की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।**

1) अहिंसा का सिद्धांत जैन धर्म का प्रमुख सिद्धांत है।

2) सारा संसार अनुप्राणित है यहाँ तक कि चट्टान, पत्थर, जल में भी जीवन है

3) उन्होंने कर्म सिद्धांत पर जोर दिया और जाति व्यवस्था की आलोचना नहीं की क्योंकि व्यक्ति पिछले जन्म में अपने कर्मों के अनुसार विशेष जाति में जन्म लेता है

4) मोक्ष जीवन का मुख्य लक्ष्य है।

5) कर्म के चक्र से मुक्त होने के लिए तपस्या और तपस्या की आवश्यकता होती है। उन्होंने तपस्या, आत्मत्याग पर बल दिया

6) मोक्ष के लिए किसी कर्मकांड की आवश्यकता नहीं है। वह त्रि-रत्न (जैन धर्म के तीन रत्न) सही ज्ञान, सही विश्वास और सही कार्रवाई में विश्वास करते थे।

7) उन्होंने वेदों और ब्राह्मणों के अधिकार को अस्वीकार कर दिया

8) उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व को पहचाना लेकिन उन्हें "जिन" से नीचे रखा

9) एक निश्चित जैन को पाँच प्रतिज्ञाएँ लेनी होती हैं- क) हत्या, चोरी, झूठ बोलना, ब्रह्मचर्य का पालन करना और संपत्ति रखने से बचना।

32. **उपनिषदों के विचारकों के विचार नियतिवादियों और भौतिकवादियों से भिन्न क्यों थे ? अपने उत्तरों के कारण दीजिए**

उत्तर- उपनिषद के विचारकों के विचार भाग्यवादियों और भौतिकवादियों के विचारों से बहुत भिन्न नहीं हैं। यह निम्नलिखित तर्कों से सामने आया है।

(i) जैन धर्म के दर्शन का सार भगवान महावीर और वर्धमान के जन्म से पहले ही भारत में अस्तित्व में था।

(ii) अहिंसा या अहिंसा जैन धर्म का सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांत है। लेकिन यह भी हिंदू धर्म का मूल विचार है। इस प्रकार धर्म की दोनों धाराओं में काफी समानता है।

(iii) उपनिषद कर्म सिद्धांत को मानता है और सिखाता है। इसका मतलब है कि पुरुषों और महिलाओं को कार्य करना चाहिए और पुरस्कार पाने की चिंता नहीं करनी चाहिए। भाग्यवादी भी परिणामों के बारे में सोचे बिना कार्य के विचार में विश्वास करते थे। इस तरह दोनों में काफी समानता है।

(iv) भाग्यवादी और भौतिकवादी दोनों मानते हैं कि मनुष्य चार तत्वों, पृथ्वी, जल, आकाश, वायु और अग्नि से बना है।

इस प्रकार, हम इस बात से सहमत हैं कि उपनिषद के विचारकों का विचार नियतिवादियों और भौतिकवादियों से बहुत अलग नहीं था।

33. **बुद्ध के प्रारंभिक जीवन की शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।**

बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व में हुआ था। लुम्बिनी नामक स्थान पर आम के बाग में। यह वर्तमान में वर्तमान भारत की सीमा से लगे क्षेत्र में नेपाल की तलहटी में स्थित है। उनके पिता शुद्धोदन एक शाक्य राजा थे और उनकी माता माया भी एक राजसी परिवार से आई थीं। उनके जन्म के सात दिन बाद उनकी माँ की मृत्यु हो गई, उन्हें उनकी बहन और उनकी सौतेली माँ महाजापति की देखभाल के लिए छोड़ दिया गया, जो शुद्धोधन की पत्नी भी थीं।

1) बुद्ध ने चार आर्य सत्य और अष्टांग मार्ग पर बल दिया

2) इच्छा दुखों का कारण है। यदि इच्छाओं पर विजय प्राप्त कर ली जाए तो व्यक्ति निर्वाण प्राप्त कर सकता है।

3) इच्छा पर विजय प्राप्त करने के लिए व्यक्ति को आठ गुना पथ का पालन करना चाहिए- सही भाषण; आजीविका का सही साधन; सही अवलोकन; सही कार्रवाई; सही दृढ़ संकल्प; सही परिश्रम; सही स्मृति; सही मध्यस्थता

4) वह मध्यम मार्ग में विश्वास करते थे और अत्यधिक विलासिता और अत्यधिक तपस्या के मार्ग को अस्वीकार करते थे।

5) उन्होंने सामाजिक दुनिया को ईश्वर की बजाय मनुष्यों की रचना माना और राजाओं को मानवीय और नैतिक होने की सलाह दी

6) वह ईश्वर और आत्मा पर मौन था

7) उन्होंने वेदों और ब्राह्मणों के अधिकार को अस्वीकार कर दिया।
8) महावीर की तरह उन्होंने अहिंसा पर बल दिया

34. **साँची की मूर्तिकला को समझने में बौद्ध साहित्य का ज्ञान किस हद तक मदद करता है?**

उत्तर: बौद्ध साहित्य साँची की मूर्तिकला को निम्नलिखित तरीकों से समझने में मदद करता है:

1. पहली नजर में उत्तरी प्रवेश द्वार का एक दृश्य फूस की झोपड़ियों और पेड़ों के साथ एक ग्रामीण दृश्य को दर्शाता है। हालाँकि, इतिहासकार मूर्तिकला का ध्यानपूर्वक अध्ययन करने के बाद, इसे वेसंतरा जातक के एक दृश्य के रूप में पहचानते हैं। यह एक उदार राजकुमार की कहानी है जिसने एक ब्राह्मण को सब कुछ दे दिया और अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जंगल में रहने चला गया।

2. बौद्ध मूर्तिकला को समझने के लिए कला इतिहासकार बुद्ध की जीवनी से परिचित होते हैं। बुद्ध की जीवनी के अनुसार, बुद्ध ने एक पेड़ के नीचे ध्यान करते हुए ज्ञान प्राप्त किया था। कई प्रारंभिक मूर्तियों ने बुद्ध की उपस्थिति को खाली आसन, स्तूप और चक्र जैसे प्रतीकों के माध्यम से दिखाया। ऐसे प्रतीकों को केवल उन लोगों की परंपराओं से समझा जा सकता है जिन्होंने कला के इन कार्यों का निर्माण किया।

3. यह उल्लेख किया जा सकता है कि शुरुआती आधुनिक कला इतिहासकारों में से एक, जेम्स फर्ग्यूसन, सांची को वृक्ष और नाग पूजा का केंद्र मानते थे क्योंकि वह बौद्ध साहित्य से परिचित नहीं थे - जिनमें से अधिकांश का अभी तक अनुवाद नहीं किया गया था। इसलिए, वह केवल छवियों का स्वयं अध्ययन करके अपने निष्कर्ष पर पहुंचे।

स्रोत आधारित प्रश्न

35. निम्नलिखित गद्यांश को पढ़िए और उसके बाद आने वाले प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

जल्द ही बुद्ध के शिष्यों का एक समूह बन गया और उन्होंने भिक्षुओं के एक संगठन संघ की स्थापना की, जो धम्म के शिक्षक भी बन गए। ये भिक्षु सरलता से रहते थे, उनके पास जीवित रहने के लिए केवल आवश्यक आवश्यकताएं थीं, जैसे कि आम लोगों से दिन में एक बार भोजन प्राप्त करने के लिए कटोरा। चूंकि वे भिक्षा पर रहते थे, इसलिए उन्हें भिक्खु के रूप में जाना जाता था।

प्रारंभ में, केवल पुरुषों को ही संघ में जाने की अनुमति थी, लेकिन बाद में महिलाओं को भी प्रवेश दिया जाने लगा। बौद्ध ग्रंथों के अनुसार, यह बुद्ध के सबसे प्रिय शिष्यों में से एक, आनंद की मध्यस्थता के माध्यम से संभव हुआ, जिन्होंने उन्हें संघ में महिलाओं की अनुमति देने के लिए राजी किया। बुद्ध की पालक माता, महाप्रजापति गोतमी भिक्षुणी के रूप में अभिषिक्त होने वाली पहली महिला थीं। संघ में प्रवेश करने वाली कई महिलाएँ धम्म की शिक्षिका बन गईं और थीरिस बन गईं, या उन महिलाओं का सम्मान किया जिन्होंने मुक्ति प्राप्त कर ली थी।

1. बौद्ध भिक्षुओं के क्या गुण थे?
2. संघ में महिलाओं की भर्ती कैसे हुई?
3. इस संघ में महिलाओं की क्या स्थिति थी?

उत्तर: बौद्ध भिक्षुओं के गुण हैं:

- बौद्ध भिक्षु बुद्ध के शिष्य थे जिनके लिए उन्होंने एक संघ की स्थापना की थी।
- इस संगठन में ये भिक्षु धम्म के शिक्षक थे।
- ये भिक्षु सरलता से रहते थे, उनके पास जीवित रहने के लिए केवल आवश्यक आवश्यकताएं थीं, जैसे कि लोकधर्मियों से दिन में एक बार भोजन प्राप्त करने के लिए कटोरा।
- चूंकि वे भिक्षा पर निर्भर रहते थे, इसलिए उन्हें भिक्खु कहा जाता था।

2. बुद्ध के एक शिष्य आनंद की मध्यस्थता के बाद महिलाओं को संघ में भर्ती कराया गया। बुद्ध की पालक माता, महाप्रजापति गोतमी भिक्षुणी के रूप में अभिषिक्त होने वाली पहली महिला थीं।

3. संघ में प्रवेश करने वाली कई महिलाएँ धम्म की शिक्षिका बनीं और आगे चलकर थीरिस या सम्मानित महिलाएँ बनीं जिन्होंने मुक्ति प्राप्त की थी। अनुवाद नहीं किया गया था। इसलिए, वह केवल कल्पना का अध्ययन करके अपने निष्कर्ष पर पहुंचे

मानचित्र

Map ***

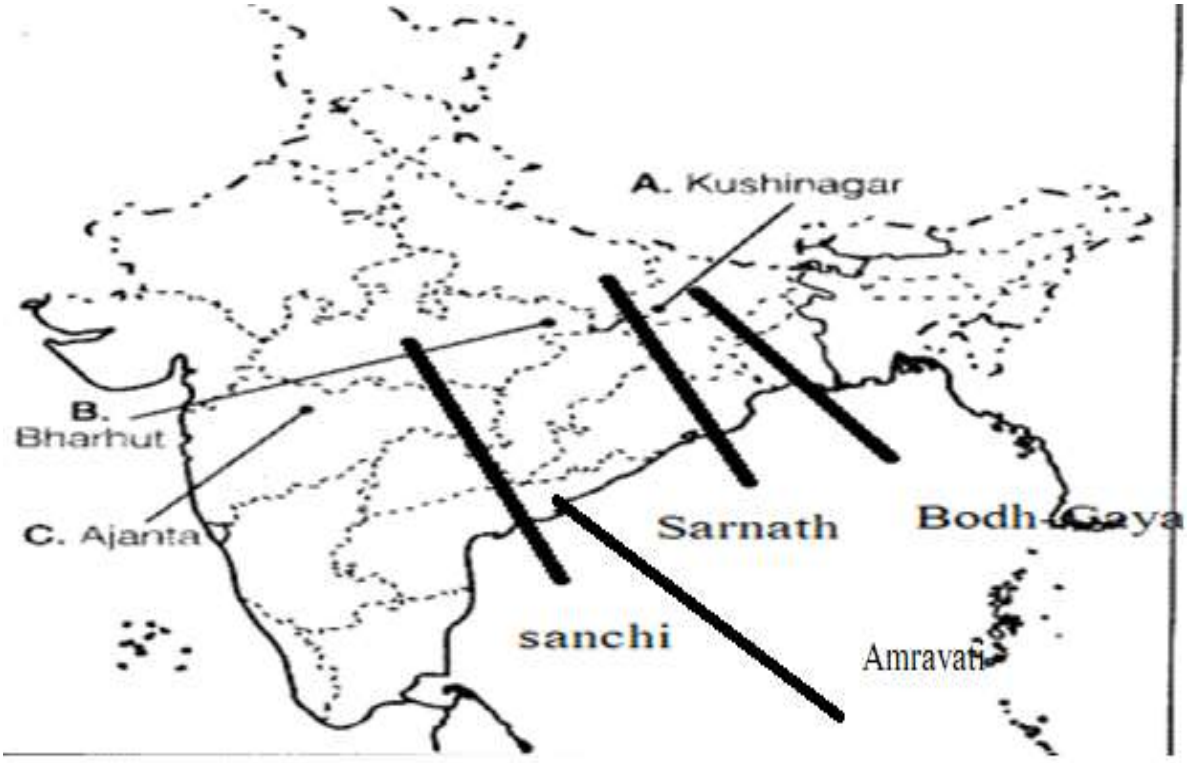

विषय-v
यात्रियों की नजरों से

श्री नितेश कुमार वर्णवाल
स्ना. शि. इतिहास के. वि. धनबाद

संक्षेप में मुख्य अवधारणाएँ

- ***भारत भ्रमण पर आये यात्री:-***

क्र. सं	यात्री का नाम	यात्री का देश	जीवन काल से संबंधित	भारत का दौरा किया हुआ	कोई अन्य

1	अल-बिरूनी	उज़्बेकिस्तान	973-1048		भारतीय समाज के बारे में वर्णन किया गया है
2	मार्को-पोलो	इटली	1254-1323	1271-95	
3	इब्न-बतूता	मोरक्को	1304-77	1324-1354	विश्व भ्रमणशील
4	अब्दुर रज्जाक समरकंदी	समरकंद	1413-82		सामाजिक व्यवस्था के बारे में
5	अफानसी निकितिच निकितिन	रूस	1433-72	1466-72	तीन समुद्रों से परे पुस्तक-यात्रा। व्यापारी
6	ड्यूरेट बारबोसा	पुर्तगाल	1480-1521	1518	व्यापार और समाज
7	सेदी अली रीस	तुर्की	1498-1562	1562	
8	महमूद वली बल्खी	बल्ख			
9	एंटोनियो मोनसेरेट	स्पेन			अकबर दरबार में दौरा
10	पीटर मुंडी	इंग्लैंड	1597-67		व्यापारी और लेखक, लिखने वाले पहले अंग्रेज
11	जीन बैप्टिस्ट टैवर्नियर	फ्रांस	1605-89		जौहरी, 6 बार भारत आए
12	**फ्रेंकोइस बर्नियर**	**फ्रांस दारा**	**1620-88**	**1656-68**	**सिकोह के एक चिकित्सक**
13	**शेख अली हाज़िन**	**1740**			
14	**पेलसर्ट**	**डच**			**17वीं शताब्दी**
15	**मनुची**	**इटली**	**1638-1717**		**मुगल दरबार का दौरा**
16	**जेसुइट रॉबर्टो नोबिली**	**इटली**	**1577-1656**		**अनेक भारतीय रीति-रिवाज अपनाये**

 10वीं से 17वीं शताब्दी तक के भारतीय इतिहास के पुनर्निर्माण में यात्रा वृत्तांतों ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई –
 विदेशी यात्रियों के वृत्तांत 10वीं से 17वीं शताब्दी तक के भारत के इतिहास के पुनर्निर्माण में सहायक हैं।
  अधिकांश यात्री बिल्कुल भिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से आए थे। इसलिए वे रोजमर्रा की गतिविधियों और प्रथाओं पर अधिक ध्यान देते थे। इन्हें देशी लेखकों ने हल्के में लिया।
 उनके परिप्रेक्ष्य में अंतर उनके वृत्तांतों को दिलचस्प बनाता है।

मध्यकालीन काल के तीन यात्रियों का तुलनात्मक अध्ययन

यात्री का नाम	अल-बिरूनी	इब्न-बतूता	फ्रेंकोइस बर्नियर
यात्रा की तिथि	11वीं शताब्दी	14वीं शताब्दी	17वीं शताब्दी
जिस देश में वे आते हैं	उज़्बेकिस्तान	मोरक्को उत्तर पश्चिमी अफ्रीका	फ्रांस
पुस्तक लिखी	'किताब-उल-हिन्द	' 'रिहला'	'मुगल साम्राज्य में यात्राएँ'
पुस्तक की भाषा	अरबी	अरबी	अंग्रेजी
राजा के शासनकाल के दौरान ने दौरा किया	गजनी के सुल्तान महमूद	सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक	मुगल सम्राट शाहजहाँ और औरंगजेब
विषय वस्तु	जिस पर उन्होंने सामाजिक और धार्मिक स्थिति, भारतीय दर्शन, खगोल विज्ञान, मेट्रोलॉजी, न्यायपालिका, ऐतिहासिक ज्ञान, जाति व्यवस्था लिखी।	नारियल और पान. भारतीय शहर और कृषि।	व्यापार और वाणिज्य, संचार और डाक प्रणाली, गुलामी। सती प्रथा, भूमि का स्वामित्व, नगर के प्रकार, शाही कारखाने, मुगल कारीगर।
कार्य की प्रामाणिकता	प्रामाणिक	प्रामाणिक	नहीं प्रामाणिक

वस्तुनिष्ठ प्रश्नोतर (१ अंक)

1. इब्न बतूता की पुस्तक का क्या नाम था?

उत्तर :- रिहला

2. अल बिरूनी की पुस्तक का क्या नाम था ?

उत्तर:- किताब उल हिंद

3. फ्रांस्वा बर्नियर की पुस्तक का क्या नाम था ?

उत्तर: - मुगल भारत की यात्रा

4. अल बिरूनी किसके साथ भारत आया था?

उत्तर :- सुल्तान महमूद

5. किसके लिए अल बिरूनी ने यूनानी गणितज्ञ यूक्लिड की कृति का संस्कृत में अनुवाद किया?

उत्तर:- ब्राह्मणों के लिए

6. मध्यकाल (11वीं से 17वीं सदी) के दौरान भारत आने वाले यात्रियों के नाम बताएं?

उत्तर: - अल बिरूनी, इब्न बतूता, फ्रेंकोइस बर्नियर

7. अल-बिरूनी ने "किताब-उल-हिंद" लिखा जिसे किस नाम से भी जाना जाता है?

और:- "तहकीक-ए-हिंद"

8. इब्न बतूता कितने वर्षों तक भारत में रहा?

उत्तर :- 12 वर्ष
9. इब्न-बतूता के अनुसार कौन सा शहर सबसे बड़ा था?
उत्तर :- दिल्ली
10. दिल्ली को रोमांचक अवसरों से भरा शहर किसने पाया?
उत्तर:- इब्नबतूता
11. फ्रेंकोइस बर्नियर ने अपनी प्रमुख रचनाएँ किस राजा को समर्पित की थीं?
उत्तर:- लुई XIV
12. निम्नलिखित में से किस यात्री को दिल्ली के काज़ी या न्यायाधीश के रूप में नियुक्त किया गया था मुहम्मद बिन तुगलक?
उत्तर:- इब्नबतूता
13. कुशल डाक व्यवस्था का अस्तित्व किसके खाते से प्राप्त होता है ?
उत्तर:- इब्नबतूता
14. जिसे 1342 में मंगोल शासक के सुल्तान के दूत के रूप में चीन जाने का आदेश दिया गया था।
उत्तर:- इब्नबतूता
15. किस यात्री के वृत्तांत की तुलना अक्सर मार्को पोलो से की जाती है, जो तेरहवीं शताब्दी के अंत में वेनिस में अपने गृह आधार से चीन (और भारत भी) आया था।
उत्तर:- इब्नबतूता
16. इब्न बतूता ने जो लिखा उसे लिखने के लिए किसे नियुक्त किया गया था?
उत्तर: - इब्न जुज़ाय
17. जो भारत में व्यापारिक स्थितियों से विशेष रूप से प्रभावित थे, और उन्होंने भारत की तुलना ईरान और तुर्क साम्राज्य से की।
उत्तर:- जीन-बैप्टिस्ट टैवर्नियर
18. बादशाह शाहजहाँ के सबसे बड़े पुत्र राजकुमार दारा शुकोह के चिकित्सक के रूप में मुगल दरबार से कौन निकट से जुड़ा था?
Ans:- फ्रेंकोइस बर्नियर
19. फ्रांकोइस बर्नियर ने अपना प्रमुख लेखन ..... फ्रांस के राजा को समर्पित किया।
उत्तर:- लुई XIV
20. फ्रेंकोइस बर्नियर के खाते के प्रभाव से प्राच्य निरंकुशता के विचार को किसने विकसित किया?
उत्तर :- मांटेस्क्यू
21. उन्नीसवीं सदी में किसके द्वारा उत्पादन की एशियाई प्रणाली की अवधारणा?
उत्तर :- कार्ल मार्क्स

लघु प्रश्नोतर (3 अंक)

22. इब्न बतूता के अनुसार मध्यकाल में यात्रा करना अधिक असुरक्षित क्यों था?*
उत्तर:-
क) इब्न बतूता पर लुटेरों के गिरोह ने कई बार हमला किया। वास्तव में उन्होंने साथियों के साथ कारवां में यात्रा करना पसंद किया, लेकिन इससे राजमार्ग के लुटेरे टस से मस नहीं हुए।

ख) मुल्तान से दिल्ली की यात्रा के दौरान, उनके कारवां पर हमला किया गया और उनके कई साथी यात्रियों की जान चली गई; वे यात्री, जो इब्न बतूता सहित बच गए, गंभीर रूप से घायल हो गए।

ग) वह घर से बीमार हो गया और कई जगहों पर लोगों ने उसका स्वागत नहीं किया।

23. अल बिरूनी द्वारा चर्चा की गई समझ में क्या बाधाएँ थीं?***

उत्तर:-

a) इनमें से पहली भाषा थी। उनके अनुसार, संस्कृत अरबी और फ़ारसी से इतनी भिन्न थी कि विचारों और अवधारणाओं का एक भाषा से दूसरी भाषा में आसानी से अनुवाद नहीं किया जा सकता था।

ख) उन्होंने जिस दूसरे अवरोध की पहचान की वह धार्मिक विश्वासों और प्रथाओं में अंतर था।

ग) स्थानीय आबादी के आत्म-अवशोषण और परिणामी अलगाव ने तीसरी बाधा का गठन किया।

24. जाति व्यवस्था के ब्राह्मणवादी वर्णन की अपनी स्वीकृति के बावजूद अल बिरूनी ने प्रदूषण की धारणा को अस्वीकार कर दिया। व्याख्या करे।***

क) अल-बिरूनी ने अन्य समाजों में समानताओं की तलाश करते हुए जाति व्यवस्था की व्याख्या करने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि प्राचीन फारस में, चार सामाजिक श्रेणियों को मान्यता दी गई थी a) शूरवीरों और राजकुमारों; बी) भिक्षु, अग्नि-पुजारी सी) वकील, चिकित्सक, खगोलविद और अन्य वैज्ञानिक; और घ) किसान और कारीगर।

ख) जाति व्यवस्था के ब्राह्मणवादी वर्णन को स्वीकार करने के बावजूद, अल-बिरूनी ने प्रदूषण की धारणा को अस्वीकार कर दिया। जैसा कि हम देख चुके हैं, अल-बिरूनी का जाति व्यवस्था का वर्णन उसके द्वारा प्रामाणिक संस्कृत ग्रंथों के अध्ययन से गहराई से प्रभावित था, जिसने ब्राह्मणों के दृष्टिकोण से व्यवस्था को नियंत्रित करने वाले नियमों को निर्धारित किया था।

ग) उन्होंने टिप्पणी की कि जो कुछ भी अशुद्धता की स्थिति में आता है, वह प्रयास करता है और शुद्धता की अपनी मूल स्थिति को पुनः प्राप्त करने में सफल होता है। सूरज हवा को शुद्ध करता है और समुद्र का नमक पानी को प्रदूषित होने से रोकता है।

25. भारतीय इतिहास के बारे में विदेशी यात्रियों का विवरण क्यों महत्वपूर्ण है?*

उत्तर:-

क) वे भारतीय इतिहास के प्रत्येक पहलू को अलग-अलग दृष्टिकोण देते हैं।

ख) वे उन प्रकार के रीति-रिवाजों, परंपराओं और विषयों का भी उल्लेख करते हैं जिन्हें कभी-कभी भारतीय लेखकों ने छोड़ दिया क्योंकि वे उन विशेष चीजों से बहुत परिचित हैं।

ग) अन्य समकालीन लेखकों द्वारा प्रदान की गई जानकारी को सत्यापित करना बहुत महत्वपूर्ण है।

26. इब्न बतूता ने भारतीय शहरों का क्या वर्णन किया था?**

उत्तर:-

क) इब्न बतूता ने उपमहाद्वीप में रोमांचक अवसरों, संसाधनों और कौशल से भरे शहरों को पाया। युद्धों और आक्रमणों के कारण कभी-कभार होने वाले व्यवधानों को छोड़कर वे घनी आबादी वाले और समृद्ध थे।

ख) अधिकांश शहरों में भीड़-भाड़ वाली सड़कें और चमकीले और रंग-बिरंगे बाजार होते थे जो तरह-तरह की वस्तुओं से भरे होते थे। इब्न बतूता ने दिल्ली और दौलताबाद को एक बड़ी आबादी वाले विशाल शहर के रूप में वर्णित किया, जो भारत में सबसे बड़ा है।

ग) बाजार न केवल आर्थिक लेन-देन के स्थान थे, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र भी थे। अधिकांश बाजारों में एक मस्जिद और एक मंदिर होता था, और उनमें से कुछ में कम से कम, नर्तकियों, संगीतकारों और गायकों द्वारा सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए स्थान चिह्नित किए गए थे।

घ) इब्न बतूता बताते हैं कि शहरों ने मिट्टी की उर्वरता के कारण गांवों से अधिशेष के विनियोग के माध्यम से अपने धन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा प्राप्त किया, जिसने किसानों को एक वर्ष में दो फसलों की खेती करने की अनुमति दी।

27. इब्न बतूता भारत की डाक व्यवस्था का वर्णन कैसे करता है?*

उत्तर:-

क) इब्न बतूता भी डाक प्रणाली (घोड़े और मानव धावकों द्वारा) की दक्षता से चकित था, जिसने व्यापारियों को न केवल लंबी दूरी पर सूचना भेजने और ऋण भेजने की अनुमति दी, बल्कि अल्प सूचना पर आवश्यक सामान भेजने की भी अनुमति दी।

ख) भारत में डाक व्यवस्था दो प्रकार की है। अश्वस्तंभ, जिसे उलूक कहा जाता है, हर चार मील की दूरी पर तैनात शाही घोड़ों द्वारा चलाया जाता है।

ग) फुट-पोस्ट में प्रति मील तीन स्टेशन हैं; इसे दावा कहा जाता है।

28. इब्न-बतूता द्वारा प्रदान की गई गुलामी के साक्ष्य का विश्लेषण करें।*

उत्तर:-

क) अन्य वस्तुओं की तरह गुलाम भी बाजारों में खुलेआम बेचे जाते थे।

ख) उनका नियमित रूप से उपहार के रूप में आदान-प्रदान भी किया जाता था।

ग) जब इब्न-बतूता सिंध पहुँचा, तो उसने घोड़े, ऊँट और दास खरीदे। वह उन्हें सुल्तान मुहम्मद बिन तुगलक को उपहार के रूप में देना चाहता था।

घ) सुल्तान ने दासियों को अपनी सेवा में और उसकी निगरानी के लिए नियुक्त किया।

ङ) इब्न-बतूता ने पालकी या डोले पर महिलाओं और पुरुषों को ले जाने के लिए उनकी सेवाओं को विशेष रूप से अपरिहार्य पाया।

29. बर्नियर ने सती प्रथा के बारे में क्या लिखा?*

क) यह एक क्रूर प्रथा थी जिसमें विधवा को उसके पति की चिता पर जिंदा बैठा दिया जाता था।

ख) उसे सती होने के लिए मजबूर किया गया था।

ग) लोगों को बाल विधवाओं के लिए भी कोई सहानुभूति नहीं थी।

घ) सती होने जा रही महिलाओं के रोने की आवाज ने किसी को विचलित नहीं किया।

30. 'किताब-उल-हिंद' की रचना किसने की? इसकी प्रमुख विशेषताओं पर प्रकाश डालिए?*

Ans:- इसे अल बिरूनी ने लिखा था

a) यह अरबी में लिखा गया है।

b) इसकी भाषा सरल और सुबोध है।

c) यह क्षेत्रीय, दर्शन, खगोल विज्ञान, सामाजिक जीवन, कानून जैसे विषयों पर लिखा गया है।

d) प्रत्येक अध्याय एक प्रश्न के साथ शुरू होता है और विवरण संस्कृत परंपराओं के आधार पर दिया गया है।

दीर्घ प्रश्नोतर (8 अंक)

31. **बर्नियर ने भूमि के ताज के स्वामित्व पर किस प्रभाव की चर्चा की?*****

उत्तर:-

क) उसने सोचा कि मुगल साम्राज्य में सम्राट सभी भूमि का मालिक होता है और इसे अपने रईसों, और रईसों को किसानों के बीच वितरित करता है।

ख) भूमि के ताज के स्वामित्व के कारण, भूमिधारक अपनी भूमि अपने बच्चों को नहीं दे सकते थे। इसलिए वे उत्पादन के निर्वाह और विस्तार में किसी भी दीर्घकालिक निवेश के विरुद्ध थे।

ग) बर्नियर ने मुगल साम्राज्य को देखा – इसका राजा "भिखारियों और बर्बरों" का राजा था; इसके शहर और कस्बे बर्बाद हो गए और "खराब हवा" से दूषित हो गए; और इसके खेत, "झाड़ियों से भरे हुए" और "महामारियों के दलदल" से भरे हुए हैं।

घ) यह सब एक कारण से था: भूमि का ताज स्वामित्व। दिलचस्प बात यह है कि कोई भी मुगल आधिकारिक दस्तावेज यह नहीं बताता है कि राज्य भूमि का एकमात्र स्वामी था।

32. **बर्नियर के विवरण ने अठारहवीं शताब्दी से पश्चिमी सिद्धांतकारों को प्रभावित किया। विस्तार से व्याख्या करें ।*****

उत्तर:-

क) मुगल साम्राज्य में बर्नियर की यात्रा विस्तृत अवलोकनों, आलोचनात्मक अंतर्दृष्टि और प्रतिबिंब द्वारा चिह्नित है। उनके खाते में मुगलों के इतिहास को किसी प्रकार के सार्वभौमिक ढांचे के भीतर रखने की कोशिश करने वाली चर्चाएँ हैं। उन्होंने लगातार मुगल भारत की तुलना समकालीन यूरोप से की।

ख) बर्नियर के विवरण ने अठारहवीं शताब्दी के बाद से पश्चिमी सिद्धांतकारों को प्रभावित किया। उदाहरण के लिए, फ्रांसीसी दार्शनिक मॉन्टेस्क्यू ने प्राच्य निरंकुशवाद के विचार को विकसित करने के लिए इस खाते का उपयोग किया। उनके अनुसार एशिया में शासकों को अपनी प्रजा पर पूर्ण अधिकार प्राप्त था, जिन्हें अधीनता और गरीबी की स्थिति में रखा गया था।

ग) इस विचार को उन्नीसवीं शताब्दी में कार्ल मार्क्स द्वारा एशियाई उत्पादन प्रणाली की अवधारणा के रूप में और विकसित किया गया था। उन्होंने तर्क दिया कि भारत में अधिशेष राज्य द्वारा विनियोजित किया गया था। इससे एक ऐसे समाज का उदय हुआ जो बड़ी संख्या में स्वायत्त और समतावादी ग्रामीण समुदायों से बना था।

33. **"बर्नियर का भारत का वर्णन वास्तविकता से बहुत दूर था।" इस कथन के समर्थन या विरोध में अपना तर्क दें।****

उत्तर:-

क) वस्तुतः हर उदाहरण में बर्नियर ने वर्णन किया कि यूरोप में विकास की तुलना में उन्होंने भारत में एक निराशाजनक स्थिति के रूप में क्या देखा। यह आकलन हमेशा सटीक नहीं होता था।

ख) बर्नियर के विवरण कभी-कभी अधिक जटिल सामाजिक वास्तविकता की ओर इशारा करते हैं। कारीगरों के पास अपने उत्पादों की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए कोई प्रोत्साहन नहीं था, क्योंकि मुनाफा राज्य द्वारा हड़प लिया जाता था। नतीजतन, हर जगह मैन्युफैक्चरिंग में गिरावट आई।

ग) उसी समय, उन्होंने स्वीकार किया कि दुनिया की कीमती धातुओं की बड़ी मात्रा भारत में प्रवाहित होती है, क्योंकि सोने और चांदी के बदले में निर्मित वस्तुओं का निर्यात किया जाता था।

घ) उन्होंने एक समृद्ध व्यापारी समुदाय के अस्तित्व पर भी ध्यान दिया, जो लंबी दूरी के विनिमय में लगा हुआ था।

ङ) वास्तव में, सत्रहवीं शताब्दी के दौरान लगभग 15 प्रतिशत जनसंख्या नगरों में रहती थी। यह इसी अवधि में पश्चिमी यूरोप में शहरी आबादी के अनुपात से अधिक था।

च) सभी प्रकार के कस्बे थे: विनिर्माण नगर, व्यापारिक नगर, बंदरगाह-कस्बे, पवित्र केंद्र, तीर्थ नगर आदि। उनका अस्तित्व व्यापारी समुदायों और पेशेवर वर्गों की समृद्धि का सूचक है।

34. **इब्न बतूता ने उपमहाद्वीप में शहरों को रोमांचक अवसरों से भरा पाया "उनके द्वारा दिए गए साक्ष्य के साथ अपने उत्तर का समर्थन करें"। ****

उत्तर:-

क) इब्न बतूता ने उपमहाद्वीप में शहरों को उन लोगों के लिए रोमांचक अवसरों से भरा पाया जिनके पास आवश्यक ड्राइव, संसाधन और कौशल थे।

b) वे घनी आबादी वाले और समृद्ध थे।

ग) इन शहरों में गलियां और बाजार हैं जहां तरह-तरह की वस्तुएं हैं।

घ) दिल्ली एक विशाल शहर, एक बड़ी आबादी वाला, भारत में सबसे बड़ा।

ई) बाजार न केवल आर्थिक लेन-देन के स्थान थे, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक गतिविधियों के केंद्र भी थे। अधिकांश बाजारों में एक मस्जिद और एक मंदिर था, और उनमें से कुछ में जहां नर्तकियों, संगीतकारों और गायकों द्वारा सार्वजनिक प्रदर्शन के लिए स्थान चिह्नित किए गए थे।

च) भारतीय विनिर्माताओं के साथ उपमहाद्वीप व्यापार और वाणिज्य के अंतर-एशियाई नेटवर्क के साथ अच्छी तरह से जुड़ा हुआ था।

छ) भारतीय वस्त्र, सूती कपड़े, महीन मलमल, रेशमी, ब्रोकेड और साटन की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में काफी मांग थी।

स्रोत आधारित प्रश्न

35. चिड़िया अपना घोंसला छोड़ती है

यह रिहिला का एक अंश है: मेरी जन्मभूमि टंगेर से मेरा प्रस्थान गुरुवार को हुआ .... मैं अकेला ही निकल पड़ा, न कोई सहयात्री... न कारवां जिसकी पार्टी।

मैं इसमें शामिल हो सकता हूं, लेकिन मेरे भीतर एक अत्यधिक आवेग और इन शानदार अभयारण्यों की यात्रा करने के लिए मेरी छाती में लंबे समय से संजोई गई इच्छा है। इसलिए मैंने अपने सभी प्रियजनों, स्त्री और पुरुष को त्यागने का संकल्प लिया, और अपने घर को ऐसे छोड़ दिया जैसे पक्षी अपने घोंसलों को छोड़ देते हैं...। उस वक्त मेरी उम्र बाईस साल थी। इब्न बतूता 1354 में स्वदेश लौटा, उसके जाने के लगभग 30 साल बाद।

(क) इब्न बतूता का जन्म स्थान क्या था? 1

उत्तर:- टेंजियर

(ख) इब्न बतूता की यात्रा पर लिखी गई पुस्तक का नाम क्या था? 1

उत्तर :- रिहला

(c) इब्न बतूता ने अपना घर क्यों छोड़ा? 2

उत्तर:- इब्न बतूता पुस्तकों की अपेक्षा यात्रा से प्राप्त अनुभव को ज्ञान का अधिक महत्वपूर्ण स्रोत मानता था। वह बस यात्रा करना पसंद करता था, और नई दुनिया और लोगों की खोज करते हुए दूर-दूर के स्थानों पर जाता था।

36. घोड़े पर और पैदल

इब्न बतूता ने डाक व्यवस्था का वर्णन इस प्रकार किया है:

भारत में डाक व्यवस्था दो प्रकार की होती है: 'उलूक' नामक अश्व-स्तंभ को हर चार मील की दूरी पर तैनात शाही घोड़ों द्वारा चलाया जाता है। फुट-पोस्ट में तीन स्टेशनों का परमिट है। इसे 'दावा' कहा जाता है, यानी एक मील का एक तिहाई .... अब, एक मील के हर तीसरे हिस्से में अच्छी तरह से आबादी वाला गाँव है, जिसके बाहर तीन मण्डप हैं जिनमें लोग कमर कस कर शुरू करने के लिए तैयार रहते हैं। उनमें से प्रत्येक के ऊपर दो हाथ लंबी एक छड़ होती है जिसके ऊपर तांबे की घंटियां होती हैं। जब कूरियर शहर से शुरू होता है, तो वह एक हाथ में पत्र और दूसरे हाथ में घंटियों के साथ छड़ी रखता है; और वह जितना तेज दौड़ सकता है दौड़ता है। मंडप में बैठे लोग जब घंटी की आवाज सुनते हैं तो

वे तैयार हो जाते हैं। जैसे ही कूरियर उनके पास पहुंचता है, उनमें से एक अपने से पत्र ले लेता है और जब तक वह अगले दावे तक नहीं पहुंच जाता, तब तक रॉड को हिलाते हुए शीर्ष गति से दौड़ता है। और यही सिलसिला तब तक चलता रहता है जब तक पत्र अपने गंतव्य स्थान पर नहीं पहुंच जाता। यह पैदल व्यक्ति घोड़े की नाल से भी तेज है; और अक्सर इसका उपयोग खुरासान के फलों के परिवहन के लिए किया जाता है, जो भारत में काफी पसंद किए जाते हैं।

(क) बताएं कि फुट पोस्ट कैसे काम करता है। 2

उत्तर:- 'उलूक' नामक अश्व-स्तम्भ चार मील की दूरी पर स्थित शाही घोड़ों द्वारा चलाया जाता है।

(ख) इब्न-बतुआ क्यों सोचता है कि भारत में डाक व्यवस्था कुशल थी? 2

उत्तर:- डाक व्यवस्था इतनी कुशल थी कि सिंध से दिल्ली पहुँचने में जहाँ पचास दिन लगते थे, डाक व्यवस्था से गुप्तचरों की ख़बरें पाँच दिनों में सुल्तान तक पहुँच जाती थीं।

विषय-VI
भक्ति सूफ़ी परंपराएँ
अध्ययन सामग्री

मुकेश कुमार साहू
स्ना. शि. इतिहास के. वि. नामकुम

संतों की जीवनी या उनके अनुयायियों द्वारा लिखी गई आत्मकथाएँ।

- कई संतों की मूर्तियां और कई राज्यों की भक्ति भी प्रसिद्ध संतों के बारे में जानने के स्रोत प्रदान करती हैं।
- भक्तों की पीढ़ियों ने मूल संदेश को विस्तार से बताया।
- उन्होंने समय-समय पर कुछ ऐसे विचारों को संशोधित या त्याग दिया जो विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भ में समस्याग्रस्त या अप्रासंगिक प्रतीत होते थे।

जिन इतिहासकारों ने इन घटनाक्रमों को समझने की कोशिश की है, उनका सुझाव है कि कम से कम **दो प्रक्रियाएँ** काम कर रही थीं।

- एक तो **ब्राह्मणवादी विचारों के प्रसार की प्रक्रिया** थी. इसका उदाहरण सरल संस्कृत छंद में पौराणिक ग्रंथों की रचना, संकलन और संरक्षण द्वारा दिया गया था। इनका उद्देश्य महिलाओं और शूद्रों के लिए सुलभ होना था जिन्हें वैदिक शिक्षा से बाहर रखा गया था।

ø ब्राह्मणों द्वारा अन्य सामाजिक श्रेणियों की मान्यताओं और प्रथाओं को भी स्वीकार करने और उन पर फिर से काम करने की **दूसरी प्रक्रिया** काम कर रही थी। इसे महान और छोटी परंपराओं के रूप में जाना जाता था। (समाजशास्त्री- रॉबर्ट रेडफील्ड द्वारा

प्रारंभिक भक्ति परंपराएँ

सगुण (गुणों सहित) ।	निर्गुण (बिना गुणों के)
ø सगुण में भक्ति परंपराएं शामिल थीं जो विशिष्ट देवताओं जैसे शिव, विष्णु और उनके अवतारों (अवतार) और देवी या देवी आदि के रूपों की पूजा पर केंद्रित थीं। ø उदाहरण-अलवार, नयनार, वीरशैव	ø दूसरी ओर निर्गुण भक्ति ईश्वर के अमूर्त रूप की पूजा थी। ø उदाहरण- कबीर पंथी, सूफी संत, योगी, नाथपंथी, मदारी, कलंदर आदि

अलवार और नयनारों में अंतर

आधार	अलवार	नयनार
भक्त	विष्णु	शिव
संतों की संख्या	12	63
रचनाएँ	नलयिरा दिव्यप्रबंधम (तमिल वेद)	तेवरम
संत	टोंडाराडिप्पोडी	अप्पार , सुंदरर, संबंदर
महिला संत,	अंडाल	कराईक्कल, अम्मैय्यर

ø बारहवीं शताब्दी के दौरान, कर्नाटक में वीरशैव आंदोलन बसवन्ना (1106-68) नामक एक ब्राह्मण द्वारा शुरू किया गया था।

ø लिंगायतों ने जाति के विचार और ब्राह्मणों द्वारा कुछ समूहों को जिम्मेदार ठहराए गए "प्रदूषण" को चुनौती दी।

ø मुस्लिम शासकों को उलेमा द्वारा निर्देशित किया जाना था, जिनसे यह सुनिश्चित करने की अपेक्षा की गई थी कि वे शरिया के अनुसार शासन करेंगे।

उलमा-इस्लामिक अध्ययन के विद्वान, जो इस्लामी परंपराओं को संरक्षित करने के लिए विभिन्न धार्मिक, न्यायिक और शिक्षण कार्य करते हैं।
शरीयत - वह कानून जो मुस्लिम समुदाय को नियंत्रित करता है। इसमें शामिल है कुरान-पवित्र पुस्तक हदीस- पैगंबर की परंपराएँ सादृश्य द्वारा क़ियास-तर्क इज्मा-समुदाय की सहमति।

ø कबीर बीजक को कबीरपंथ (कबीर का मार्ग या संप्रदाय) द्वारा वाराणसी और उत्तर प्रदेश में संरक्षित किया गया है।

ø कबीर ग्रंथावली राजस्थान में दादूपंथ से जुड़ी है और उनकी कई रचनाएँ आदि ग्रंथ साहिब में पाई जाती हैं।

ø बाबा गुरु नानक के अनुसार, पूर्ण या 'रब' का कोई लिंग या रूप नहीं था। उन्होंने ईश्वरीय नाम का स्मरण करके ईश्वर से जुड़ने का एक सरल तरीका प्रस्तावित किया।

ø मीराबाई ने सफेद वस्त्र या त्यागी का भगवा वस्त्र धारण किया था। हालाँकि उन्होंने किसी संप्रदाय या अनुयायियों के समूह को आकर्षित नहीं किया, लेकिन उन्हें सदियों से प्रेरणा के स्रोत के रूप में पहचाना जाता है।

अति लघुउत्तरीय प्रश्न 1 अंक

Q.1 दी गई छवि को किस स्थान से सम्बंधित है -

उत्तर . पुरी.

Q. 2 मंदिरों में तमिल शैव भजनों के गायन की शुरुआत किन शासकों ने की?

उत्तर: चोल राजा

प्रश्न 3. 12वीं शताब्दी के दौरान कर्नाटक के घुमंतू भिक्षुओं को _____ कहा जाता है

उत्तर वीरशैववादी

प्रश्न 4. कीर्तनघोष की रचना किसने की-?

उत्तर शंकर देव

प्रश्न 5. शेख निजामुद्दीन की खानकाह में कई छोटे कमरे और एक बड़ा हॉल शामिल था जिसे कहा जाता है-

उत्तर: जमात खाना

प्रश्न 6. कराईकल अम्मैयार किसकी अनुयायी थी|

उत्तर: शिव

Q.7 "नलयिरादिव्यप्रबंधम "_____ द्वारा सम्बंधित है

उत्तर। अल्वार्

प्रश्न 8. कौन इस्लाम का स्तंभ नहीं है:

उत्तर: मूर्तिपूजा

प्र.9.कौन विशिष्ट देवताओं की पूजा से संबंधित है?

उत्तर .सगुण भक्ति

प्र.10. सही विकल्प चुनें:

कथन विरोध करने के लिए एक आंदोलन शुरू किया,अलवार और नयनार ने जाति व्यवस्था के खिलाफ :(ए)

कारण संतो द्वारा रचनाओं के प्रमुख संकलन इस प्रकार दावा किया गया कि अलवार :(आर), नलयिरदिव्यप्रबंधम को अक्सर ऋग्वेद के रूप में वर्णित किया गया, पाठ थाब्राह्मणों द्वारा संस्कृत में चार वेदों को महत्वपूर्ण के रूप में पोषित | किया गया था।

(A) A और R दोनों सही हैं और R, A की सही व्याख्या करता है।

(B) A और R दोनों सही हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं करता है।

(C) A सही है लेकिन R गलत है।

उत्तर: (C) A सही है लेकिन R गलत है।

प्रश्न11. वीरशैव किसके अनुयायी कहलाते हैं?

उत्तर: बासवन्ना

प्रश्न 12. आमतौर पर वैदिक शिक्षा से किसे बाहर रखा गया था?

उत्तर: महिला और शूद्र

Q 13 गैर मुस्लिमों को-_____ नामक एक धार्मिक कर का भुगतान करना पड़ता था

उत्तर: जजिया

Q.14 आदि ग्रंथ का संकलन किसने किया?

उत्तर: गुरु अर्जुन देव जी

Q15 विट्ठल मंदिर के प्रमुख देवता विट्ठल थे। विट्ठल को किस भगवान के अवतार के रूप में जाना जाता था?

उत्तर: विष्णु

Q.16 कबीर के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. कबीर के पद तीन अलगअलग परंपराओं में संकलित हैं।-
2. कबीर की कविताएँ केवल उर्दू भाषा में उपलब्ध हैं।
3. कबीर ने परम वास्तविकता का वर्णन करने के लिए कई परंपराओं का इस्तेमाल किया।
4. कबीर ने परम सत्य को ही अल्लाह कहा है।

दिए गए कथनों में से कौनहैं/से गलत है/सा-?

उत्तर: 2,4

लघूत्तरात्मक प्रश्न 3 (अंक)

1: संत जीवनी से आप क्या समझते हैं? **

- हैजीयोग्राफी का अर्थ है संतों या धार्मिक उपदेशकों की जीवनी।
- इतिहासकार धर्म या संप्रदाय के उदय के इतिहास के पुनर्निर्माण के लिए अनुयायियों द्वारा लिखी गई आत्मकथाओं से जानकारी एकत्र करते हैं।
- उदाहरण के लिए शेख मुइन्ददीन चिश्ती पर जहाँआरा द्वारा रचित मुनीस अल अरवाह।

2: 8 से 18वीं शताब्दी के दौरान पूजा प्रणालियों के समन्वय के लिए किन दो मुख्य प्रक्रियाओं ने काम किया? **

- कम से कम दो प्रक्रियाएं थीं जो **पूजा प्रणालियों के समन्वय** के लिए काम करती थीं।
- **ब्राह्मणवादी विचारों का प्रसार** -:रिणामस्वरूप पुराण, वेद, रामायण और महाभारत जैसे ब्राह्मणवादी ग्रंथों को सरल संस्कृत छंदों में संकलित और रचित किया गया, जिससे निम्न वर्ग के लोगों और महिलाओं को इसकी पहुंच प्राप्त हुई। इसे **महान परंपरा** कहा जाता था
- इसके अलावा, ब्राह्मणों ने अन्य सामाजिक श्रेणियों की मान्यताओं, प्रथाओं और परंपराओं को स्वीकार किया और उन पर फिर से काम किया। उदाहरण के लिए जगन्नाथ पंथ का विकास। इन्हें लघु परंपरा कहा गया।

3: महान एंव लघु परंपरा से आप क्या समझते हैं? ***

- महान और लघु परंपराएं रॉबर्ट रेडफील्ड नामक समाजशास्त्री द्वारा गढ़ी गई थीं जिन्होंने किसान समाजों की सांस्कृतिक प्रथाओं का वर्णन किया था।
- प्रमुख सामाजिक श्रेणियों से आने वाले अनुष्ठानों और रीतिरिवाजों को महान परंपराओं के रूप में वर्गीकृत किया - गया था।
- उदाहरण के लिए पुराणों, महाकाव्यों जैसे ब्राह्मण ग्रंथों की रचना, सरल संस्कृत छंदों में संकलित की गई, जिससे आम पुरुषों और महिलाओं को वैदिक साहित्य की अधिकता मिली।
- इसी तरह, किसानों ने भी उन प्रथाओं का पालन किया जो जरूरी नहीं कि महान परंपरा के अनुरूप हों।
- ब्राह्मणों ने अन्य सामाजिक श्रेणियों के विश्वासों और प्रथाओं को भी स्वीकार किया और फिर से काम किया, जिन्हें छोटी परंपराएं कहा जाता है, उदाहरण के लिए। भगवान जगन्नाथ जो ओड़िया के प्रमुख देवताओं में से एक हैं, उन्हें पहले एक आदिवासी समूह, सबर द्वारा नीलामाधव के रूप में पूजा जाता था।
- इसी तरह, उस काल में उभरी कई परंपराएं विभिन्न संस्कृतियों के एकीकरण के कारण थीं।

4: तांत्रिक पूजा प्रणाली से आप क्या समझते हैं?

- बंगाल, उत्तर पूर्वी राज्यों जैसे देश के कई हिस्सों में तांत्रिक प्रथाएं व्यापक रूप से फैली हुई थीं जो पुरुषों और महिलाओं दोनों के लिए खुली थीं।
- इसमें अनुष्ठान के संदर्भ में जाति और वर्ग के अंतर को नजरअंदाज करते हुए देवी की पूजा की जाती थी।
- तांत्रिक विभिन्न प्रकार के रोगों को ठीक करने के साथसाथ चमत्कारी शक्ति को जादू के आकर्षण और मंत्र के – माध्यम से ठीक करते थे।
- जो लोग तांत्रिक साधना में लगे हुए थे, वे अक्सर वेदों के अधिकार की उपेक्षा करते थे।

5. भक्तिवाद की मुख्य विशेषताओं पर चर्चा करें: ***

- भक्ति का अर्थ है ईश्वर के प्रति समर्पण और समर्पण की भावना।
- भक्ति आंदोलन पूजा के तरीकों के खिलाफ एक आंदोलन था।
- आंदोलन आम तौर पर एकेश्वरवादी था चाहे वह निराकार ईश्वर हो या एक रूप वाला ईश्वर।
- सगुण और निर्गुण भक्ति दोनों उपनिषदों के दर्शन पर निर्भर हैं।
- दक्षिण और उत्तर भारत के संतों ने भक्ति के लिए ज्ञान या ज्ञान को आवश्यक उपकरण माना है।
- भक्ति आंदोलन एक समतावादी आंदोलन था। इस आंदोलन ने जाति और पंथ के मतभेदों का विरोध किया था।
- आंदोलन ने पुजारियों और ब्राह्मणों की श्रेष्ठता का विरोध किया।
- भक्ति आंदोलन के संतों ने स्थानीय लोगों की भाषा पर उपदेश दिया।
- इस आंदोलन ने भारतीय प्रायद्वीप को व्यापक रूप से प्रभावित किया और लोगों में भाईचारे और एकता की भावना विकसित की।

6. अलवार और नयनार कौन थे? ***

- भक्तिवाद दक्षिण भारत में लगभग तीन शताब्दियों में अपने दो सुपरिभाषित शाखाओं यानी अलवार और नयनार के माध्यम से फलाफूला।–
- अलवार विष्णु के अनुयायी थे और नयनार शिव के अनुयायी थे।
- भक्तों ने अपने भगवान की स्तुति में तमिल में भजन गाते हुए जगहजगह यात्रा की और कांचीपुरम में मिले जहां – प्रदान किया।–दूसरे के साथ अपने विचारों का आदान–उन्होंने एक
- अपनी यात्रा के दौरान उन्होंने अपने चुने हुए देवताओं के निवास के रूप में कुछ मंदिरों की पहचान की और पवित्र स्थानों पर बड़े मंदिरों का निर्माण किया।

7. 18 8वीं सेवीं सदी की अवधिके दौरान नाथों , जोगियों और सिद्धों ने कैसे लोकप्रियता हासिल की? **

- नाथ, जोगी और सिद्ध आम तौर पर बुनकरों जैसे कारीगर समूहों से थे।
- संगठित शिल्प उत्पादन के विकास ने कारीगरों की स्थिति में वृद्धि की।
- इसी तरह शहरी केंद्रों के विकास और मध्य एशिया और पश्चिम एशिया के साथ लंबी दूरी के व्यापार ने भी कारीगरों की स्थिति को बढ़ाया।
- सबसे ऊपर उन्होंने वेदों के अधिकार पर सवाल उठाया और आम लोगों की भाषाओं में व्यक्त किया।

8: उलेमा कौन थे? *

- उलेमा इस्लामी विद्वान हैं जिन्हें शरीयत पर गहरा ज्ञान है। यह आलिम का बहुवचन रूप है।
- उन्होंने विभिन्न धार्मिक, न्यायिक और शिक्षण कार्य किए।
- मुस्लिम शासक आमतौर पर उलेमा द्वारा निर्देशित होते थे।

9: जिम्मी से आप क्या समझते हैं? *

- ज़िम्मी अरबी शब्द ज़िम्मा से बना है जिसका अर्थ है सुरक्षा। तो, ज़िम्मी का अर्थ है संरक्षित नागरिक जिन्होंने यहूदी और ईसाई, हिंदू और अन्य गैरमुसलमानों जैसे मतों का पालन करने वाले लोगों के लिए प्रयुक्त किया - जाता रहा।
- उन्हें मुसलमानों से सुरक्षा प्राप्त करने और राज्य के हस्तक्षेप के बिना अपने स्वयं के विश्वास का अभ्यास करने के लिए जजिया कर का भुगतान करने के लिए कहा गया था।

10. शरीयत से आप क्या समझते हैं? **

- शरिया एक इस्लामी धार्मिक कानून है जो न केवल धार्मिक अनुष्ठानों को नियंत्रित करता है, बल्कि इस्लाम में दिनप्रतिदिन के जीवन के पहलुओं को नियंत्रित करता है।-
- शरिया, का शाब्दिक अर्थ है "रास्ता।"मुस्लिम समाजों में और उनके भीतर शरिया की व्याख्या और कार्यान्वयन के तरीके में अत्यधिक भिन्नता है।
- यह कुरान, हदीस, क़ियास और इज्मा से विकसित हुआ है।

11*: स्थानीय रीतिरिवाजों और प्रथाओं ने इस्लाम को कैसे प्रभावित किया-? दो उदाहरण दीजिए।

- स्थानीय रीति रिवाजों-और प्रथाओं ने भारत में इस्लाम को बहुत प्रभावित किया।
- इस्माइल की एक शाखा (शिया संप्रदाय), खोजाह ने स्वदेशी और साहित्यिक शैलियों के माध्यम से संचार के तरीके विकसित किए। इनमें जिनन (ज्ञान), पंजाबी में भक्ति कविताएं, मुल्तानी, सिंधी, हिंदी, गुजराती, और दैनिक प्रार्थना सभाओं के दौरान विशिष्ट रागों में गाने शामिल थे।
- केरल में बसने वाले अरब मुस्लिम व्यापारी ने स्थानीय भाषा मलयालम को अपनाया और स्थानीय रीतिरिवाजों - जैसे मातृवंश और मातृसत्तात्मक निवास को अपनाया।
- इसी तरह केरल में मोपला किसानों ने पांच बार के बजाय तीन बार नमाज अदा की।

12: इस्लामी वास्तुकला स्थानीय परंपराओं से कैसे प्रभावित थी? **

- स्थानीय परंपराओं ने भी भारत के विभिन्न हिस्सों में इस्लामी वास्तुकला को अत्यधिक प्रभावित किया। यह शायद मस्जिदों की वास्तुकला में सबसे अच्छा उदाहरण है।
- श्रीनगर में शाह हमदान मस्जिद कश्मीरी लकड़ी की वास्तुकला के सबसे अच्छे उदाहरणों में से एक है जहाँ किसी को विशिष्ट मकबरे और मीनारें नहीं मिल सकती हैं। इसी तरह केरल में 13वीं सदी में बनी एक मस्जिद में शिखर जैसी छतें हैं। बांग्लादेश के मयमनसिंह जिले में अतिया मस्जिद का निर्माण ईंटों से किया गया था।
- हालाँकि मिहराब और मीनार का निर्माण सार्वभौमिक पैटर्न के साथ किया गया था और उन्मुखीकरण मक्का की ओर था।

13: म्लेच्छ कौन थे? ***

- म्लेच्छ वे लोग थे जो जाति, समाज और बोली जाने वाली भाषाओं के मानदंडों का पालन नहीं करते थे जो संस्कृत से उत्पन्न नहीं हुए थे।
- कभी- कभी, इस शब्द का प्रयोग अपमानजनक अर्थ के रूप में किया जाता था।
- मध्यकाल के दौरान आम तौर पर अरबों, शको जैसे विभिन्न बाहरी समुदायों के लिए इसका इस्तेमाल किया जाता था।

14: बेशरिया और बाशरिया सूफियों के बीच अंतर।-

- बेशरीयत वे लोग थे जो जानबूझकर शरीयत की अव-हेलना करते थे। उदाहरण के लिए - कलंदर, मदारिस, हैदरी और मलंग। जबकि बशरिया शरीयत का पालन करते थे।
- बे शरिया ने इस्लामी-शरीयतों कर्मकांडों की उपेक्षा की और तपस्या के चरम रूपों को देखा। लेकिन बा-शरिया ने सिद्धांतों को वैसे ही स्वीकार कर लिया जैसे वह है।

- कुछ बेशुरुआत की। कई शरिया फकीरों ने सूफी आदर्शों की कट्टरपंथी व्याख्या के आधार पर आंदोलनों की– शरिया सूफियों ने इसके साथ –लोगों ने खानकाह का तिरस्कार किया और भिक्षावृत्ति की और ब्रह्मचर्य का पालन संकलित किया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (८ अंक)

1: जाति व्यवस्था और महिलाओं के प्रति अलवार और नयनार के दृष्टिकोण की चर्चा करें। ***

- अलवार और नयनार के अनुयायी ब्राह्मणों की जाति व्यवस्था और प्रभुत्व के खिलाफ थे।
- अनुयायी विविध सामाजिक समूहों जैसे कारीगरों, कृषकों और जीवन के अन्य लोगों से थे।
- उन्होंने वेदों के सत्तावादी दृष्टिकोण को त्याग दिया और नलयिरदिव्यप्रबंधन (12 अलवरों की र), तमिल वेद की रचना की।
- अप्पर जैसे संतों, एक नयनार संत ने गोत्र और कुल को त्याग दिया और मारपेरु शिव भगवान) दी। सलाह की जाने (निवास का
- अलवार और नयनार दोनों ही महिलाओं के प्रति बहुत सम्मान रखते थे। उन्हें पुरुषों के समान स्थान दिया गया। उदाहरण के लिए अंडाल नाम की एक महिला अलवार ने कविताओं की रचना की जो आज तक गाई जाती हैं। उनके छंदों ने देवता विष्णु के प्रति उनके प्रेम को व्यक्त किया।
- इसी प्रकार, शिव के एक भक्त कराईकल अम्मैय्यार ने अत्यधिक तपस्या का मार्ग अपनाया। उनकी रचनाओं को नयनारा परंपराओं के साथ संरक्षित किया गया है।
- इस आंदोलन ने अपने सामाजिक दायित्वों को त्याग दिया और उनकी रचनाओं ने पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती दी।

2: राज्य के साथ अलवार और नयनार के संबंधों की चर्चा करें। **

- अलवार और नयनार दोनों को आम लोगों के साथसाथ राजाओं द्वारा भी पुरस्कृत किया गया था।–
- शासकों ने उनका समर्थन हासिल करने की कोशिश की क्योंकि उन्हें जनता का समर्थन प्राप्त था।
- चोल राजाओं ने विशाल मंदिरों का निर्माण किया जो दैवीय समर्थन की घोषणा करने के लिए लोकप्रिय संतों की पत्थर और धातु की मूर्तियों से अलंकृत थे।
- राजाओं ने शाही संरक्षण के तहत मंदिरों में तमिल शैव भजनों के गायन की शुरुआत की और उन्हें तेवरम या पाठ में शामिल किया।
- परंतक प्रथम जैसे चोल राजाओं ने शिव मंदिर में अप्पर, सांबंदर और सुंदरार के धातु की मुर्तिया विकसित की थी।
- इन छवियों को विभिन्न त्योहारों के दौरान जुलूसों में ले जाया जाता था।
- चोल राजाओं में राजराज जैसे महान शासक ने तंजावुर में बृहदेश्वर मंदिर का निर्माण किया।
- इस अवधि के दौरान नटराज के रूप में शिव की कुछ सबसे शानदार कांस्य मूर्तियों का निर्माण कलाकारों द्वारा किया गया था और उन्हें शाही संरक्षण भी मिला था।
- सबसे ऊपर संत भी बौद्ध और जैन धर्म जैसे अन्य संप्रदायों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए शाही समर्थन प्राप्त करने में रुचि रखते थे।

3: कर्नाटक में वीरशैब परंपरा की स्थापना किसने की? विश्वासों और प्रथाओं पर एक नोट लिखें। **

- बसवना, एक ब्राह्मण और चालुक्यों के दरबार में मंत्री, कर्नाटक में वीरशैब परंपरा के संस्थापक थे।
- 12वीं शताब्दी में, उन्होंने कर्नाटक में इस शक्तिशाली आंदोलन की शुरुआत की, जिसके अनुयायी वीरशैबा या शिव या लिंगायत के नायक के रूप में जाने जाते थे, जो लिंग के पहनने वाले थे।

- अनुयायी शिव की पूजा लिंग के रूप में करते हैं और आम तौर पर बाएं कंधे पर चांदी के मामले में एक छोटा लिंग पहनते हैं।
- लिंगायतों का मानना है कि मृत्यु पर, भक्त शिव के साथ एक हो जाएगा और पुनर्जन्म के चक्र से मुक्त हो जाएगा। इसलिए वे दाह संस्कार जैसे अंतिम संस्कार के अधिकारों का अभ्यास नहीं करते हैं। बल्कि वे औपचारिक रूप से मृतकों को दफनाते हैं।
- उन्होंने हिंदू समाज में प्रचलित जाति और प्रदूषण के विचार को चुनौती दी।
- उन्होंने पुनर्जन्म के सिद्धांत पर सवाल उठाया और विवाह के बाद यौवन और विधवाओं के पुनर्विवाह का समर्थन किया।
- वसवना ने बचानों के माध्यम से समाज की बुराइयों पर प्रहार किया, उनके प्रसिद्ध बचना में से एक ने पत्थर या धातु में घुमावदार नाग और एक असली नाग के उदाहरणों का हवाला देते हुए अनुष्ठानों और वास्तविक दुनिया पर प्रकाश डाला।
- लिंगायतों में, जो सबसे अधिक पूजनीय हैं, उन्हें जंगमा या विस्मयकारी भिक्षु कहा जाता था।
- बसवन्ना, अल्लामा प्रभु, अक्का महादेवी, सिद्धराम, चन्नबसवन्ना, सिद्धलिंग, चामारसा, सोमनाथ और अन्य गुरुओं की शिक्षाये वचनों के रूप में संकलित की गई।

4. खानकाह का क्या अर्थ है? एक चिश्ती खानकाह में जीवन पर एक टिप्पणी लिखिए। **

- खानकाह सूफी संतों के धर्मशाला थे। यह सामाजिक जीवन का केंद्र भी था। (पवित्र स्थान)
- इसमें कई छोटे कमरे और एक बड़ा हॉल था जिसे जमात खाना कहा जाता था।-

चिश्ती खानकाह में जीवन -

- चिश्ती भारत में सबसे प्रमुख और प्रभावित सूफी सिलसिला थे।
- वे सफलतापूर्वक स्थानीय वातावरण के अनुकूल हो गए और स्थानीय भाषाओं में भी अपने लेखन की रचना की।
- अजमेर के शेख मैनुद्दीन चिश्ती या दिल्ली के निजामुद्दीन अलुइया की धर्मशाला क्रमशः अजमेर और दिल्ली में थी।
- निजामुद्दीन की धर्मशाला में कई छोटे कमरे और एक बड़ा हॉल शामिल था।
- शेख अपने परिवार के सदस्यों के परिचारकों और शिष्यों के साथ धर्मशाला में रह रहे थे।
- शेख जमातखाना की छत पर एक छोटे से कमरे में रह रहा था। वहां उन्होंने सुबह और शाम आगंतुकों को -ए- आशीर्वाद दिया।
- आंगन के चारों ओर एक बरामदा और धर्मशाला के चारों ओर एक चहारदीवारी थी।फ़ुतुह पर एक खुली रसोई चलती थी। सुबह से देर रात तक सभी क्षेत्रों के लोग सैनिक -, संत, कवि, यात्री, अमीर और गरीब, हिंदू योगी और कलंदर शेख के आशीर्वाद या उपचार शक्ति या शेख के शिष्यत्व के लिए आते थे।
- कभीकभी आक्रमण के डर- से लोग खानकाहों के अंदर भी शरण ले रहे थे।
- खानकाह के अंदर भी कई तरह की प्रथाएं अपनाई गईं जैसे शेख के सामने झुकना या उनके पैर चूमना, आगंतुकों को पानी देना, दीक्षाओं के सिर मुंडवाना, योगाभ्यास आदि नियमित रूप से किए जाते थे।
- शेख की मृत्यु के बाद, दरगाह नामक धर्मशाला के पास कब्रों का निर्माण किया गया। लोग आध्यात्मिक कृपा या बरकत पाने के लिए सूफी संतों की कब्रों पर ज़ियारत नामक तीर्थयात्रियों की व्यवस्था कर रहे थे।
- इसके अलावा ज़ियारत का एक हिस्सा संगीत और नृत्य का उपयोग है, जिसमें कव्वाल द्वारा दिव्य परमानंद को जगाने के लिए रहस्यमय मंत्रों का प्रदर्शन किया जाता है। सूफी या तो ज़िक्र का पाठ करके या समा के माध्यम से उनकी उपस्थिति का आह्वान करके भगवान को याद करते हैं।

5. गुरु नानक की शिक्षाओं पर चर्चा करें| **

- उन्होंने एक ईश्वर की महिमा, भाईचारे, एक कानून, मानव संगति और प्रेम की व्यवस्था का समर्थन किया । । धर्मों की एकता में विश्वास रखते थे वह सभी
- वे संसार के सभी शास्त्रों में सामंजस्य में मानते थे।
- वे आम आदमी की भाषा में एक ऐसे प्राचीन सत्य को महत्त्व देते थे जो सभी भविष्यवक्ताओं, प्रेरितों, संतों और ऋषियों की शिक्षाओं में समाहित था ; और यह दिखाने के लिए कि मनुष्य के सभी मंदिरों और पूजा स्थलों और संस्कारों में प्रेम की एक ही ज्योति जलती रहती है ।
- ईश्वर का प्रेम और मनुष्य का प्रेम गुरु नानक के संदेश के मूल में थे। हमें गरीबों की धीरेधीरे-, चुपचाप, निडरता से सेवा करना और अतीत के सभी संतों के प्रति श्रद्धा रखना सीखना होगा।
- सच्चे संतों का नियमतकिसी से कोई झगड़ा नहीं होता। वे धीरे से बात करते हैं और चुपचाप भगवान और : मनुष्य की सेवा में काम करते हैं।
- वह परमेश्वर के नाम पर उपदेश देते रहे, अपने लिए कुछ नहीं मांगा, लेकिन केवल लोगों की सेवा करने और उन्हें पतन और सर्वथा विनाश से बचाने के लिए उत्सुक थे।
- कोई जाति नहीं है, "गुरु ने कहा," क्योंकि हम सभी के साथ भाईचारे का दावा करते हैं। भगवान के दरबार " में कोई जाति और पंथ मायने नहीं रखता।
- जो उसकी पूजा करता है वह उसे प्रिय है, भगवान तक पहुंचने के लिए, गुरु नानक ने बताया कि प्रेम के मार्ग पर चलना चाहिए। केवल परमेश्वर से प्रेम करो, और यदि तुम दूसरों सेअपने बच्चों और मित्रों और संबंधियों – से प्रेम करते हो, तो उसके लिए उन्हें प्रेम करो। अपने भीतर उसके लिए तीव्र लालसा विकसित करें।
- गुरु नानक एक सच्चे रहस्यवादी थे,
- नानक शांति और सद्भावना, सद्भाव और एकता के पैगम्बर थे। मानव जाति के प्रति प्रेममयी सेवा का उनका कार्य, अव्यक्त की अभिव्यक्ति के रूप में, उनके उत्तराधिकारियों द्वारा दृढ़ता से किया गया था।
- इस प्रकार पवित्र ग्रंथ में, उन्होंने एक महान लंगर प्रथा की नींव रखी और वहां गरीबों एवं दिन दुखियों को भोजन कराया जाता है।

6. : कबीर के जीवन और शिक्षाओं पर चर्चा करें। ***

- कबीर ने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच सद्भाव की भावना पैदा की। उनका प्रारंभिक जीवन रहस्य में डूबा हुआ है। उन्होंने अपना घर नहीं छोड़ा। वे एक धर्मपरायण गृहस्थ थे और वस्त्र बुनकर अपनी आजीविका चलाते थे।
- उनकी शिक्षाएँ कबीर की केंद्रीय शिक्षाएँ बहुत सरल हैं। :
- उन्होंने ईमानदारी से उन सद्गुणों का प्रचार करके इस्लाम और हिंदू धर्म की एकता पर जोर देने की कोशिश की जो दोनों धर्मों के लिए समान थे।
- उन्होंने हिंदुओं और मुसलमानों के बीच कोई भेद नहीं किया।
- कबीर के लिए अल्लाह और राम एक ही परम सत्ता के अलग अलग नाम थे।-
- कबीर के अनुसार अच्छे कर्म करने से मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है या भक्ति या ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति के माध्यम से।
- मूर्ति पूजा के विरुद्ध वे म :ूर्ति पूजा में विश्वास नहीं रखते थे। वह अनुष्ठानों और अंधविश्वासों के प्रदर्शन या तथाकथित पवित्र स्थानों की तीर्थयात्रा के भी खिलाफ थे।
- जाति व्यवस्था के खिलाफ कबीर ने जाति व्यवस्था की निंदा की। उन्होंने वेद और कुरान दोनों के अधिकार को खारिज कर दिया। उन्होंने पुरुषों की समानता पर बहुत जोर दिया।
- कबीर की शिक्षाएं उनके दोहों में समाहित हैं। कबीर के भक्ति गीत या 'भजन' कबीर दोहा कहलाते हैं। वे दोहे कबीर पंथियों, कबीर के अनुयायियों की पवित्र पुस्तक बीजक में लघु कविताओं के रूप में हैं।

- कबीर ईश्वर की एकता में दृढ़ विश्वास रखते थे। उन्होंने हिंदी में लोगों के बीच अपनी शिक्षाओं का प्रचार किया। उनके भक्ति भजन या दोहा ने आम लोगों, हिंदुओं और मुसलमानों को भी सबसे ज्यादा आकर्षित किया।

स्रोत आधारित प्रश्न (४ अंक)

प्रश्न19. निम्नलिखित अंशों को ध्यानपूर्वक पढ़िए और निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए। ***

खम्भात में एक चर्च

यह 1598 में अकबर द्वारा जारी एक फरमान का एक अंश है। जबकि यह हमारे प्रतिष्ठित और पवित्र (शाही आदेश) का घर बनाना चाहते हैं (चर्च) शहर में प्रार्थना (पिता) नोटिस तक पहुंचा कि यीशु के पवित्र समाज के पादरी। कंबायत ...इसलिए एक उच्च जनादेश की (गुजरात में खंभात).. जारी किया जा रहा है । खम्भात शहर के गणमान्य व्यक्ति... किसी भी हालत में उनके रास्ते में नहीं खड़े हों बल्कि उन्हें एक चर्च बनाने की अनुमति दें, ताकि वे अपनी पूजा में खुद को शामिल कर सकें, यह आवश्यक है कि सम्राट के आदेश का हर तरह से पालन किया जाए। .

Q1. यह अंश कहाँ से लिया गया है?** 1

उत्तर। यह अंश 1598 में अकबर द्वारा जारी एक फरमान से लिया गया है (शाही आदेश)

प्रश्न 2. अकबर ने इस आदेश के माध्यम से गुजरात की जनता को क्या संदेश दिया। 1

उत्तर। इस फरमान के माध्यम से अकबर ने गुजरात के लोगों को यीशु के पवित्र समाज के पादरियों द्वारा (पिताओं) एक चर्च के निर्माण की अनुमति देने का आदेश दिया।

Q3.* यह आदेश अकबर के धार्मिक स्वरूप के किस पहलू की ओर संकेत करता है?** 2

उत्तर। यह आदेश अकबर की धार्मिक सहिष्णुता की नीति को इंगित करता है। हमें पता चलता है कि अकबर सभी धर्मों को समान सम्मान देता था।

विषय-VII
शाही राजधानी-विजयनगर

कुमार राघवेंद्र
स्ना. शि. (इतिहास) के. वि.
मेघाहातुबुरु

संक्षेप में मुख्य अवधारणा-

• विजयनगर साम्राज्य दक्षिण भारत का सबसे सम्मानित और गौरवशाली साम्राज्य था। इसकी राजधानी हम्पी थी।
• हम्पी की खोज 1815 में भारत के पहले सर्वेयर जनरल कॉलिन मैकेंज़ी ने की थी.
• अलेक्जेंडर ग्रीनलॉ ने 1856 में हम्पी की पहली विस्तृत फोटोग्राफी ली, जो विद्वान के लिए काफी उपयोगी साबित हुई।
• 1876 में जेएफ फ्लीट ने हम्पी में मंदिरों की दीवारों से शिलालेख का संकलन और प्रलेखन शुरू किया।
• जॉन मार्शल ने 1902 में हम्पी का संरक्षण शुरू किया।
• 1976 में, हम्पी को राष्ट्रीय महत्व के स्थल के रूप में घोषित किया गया था और 1986 में इसे विश्व धरोहर केंद्र के रूप में घोषित किया गया था।
• विजयनगर साम्राज्य की स्थापना 14 वीं शताब्दी में दो भाइयों, हरिहर और बुक्का द्वारा की गई थी।
• विजयनगर साम्राज्य के शासक को राय कहा जाता था।
• विजयनगर साम्राज्य के सबसे शक्तिशाली शासक कृष्णदेव राय थे। उनके कार्यकाल के दौरान, साम्राज्य ने अपनी महिमा को छुआ।
• विजयनगर पर चार राजवंशों का शासन था:
• (ए) संगम राजवंश (बी) सलुवास राजवंश (सी) तुलुवा राजवंश (डी) अरविदु राजवंश
संगम राजवंश ने साम्राज्य की स्थापना की, सलूवा ने इसका विस्तार किया, सलूवा ने इसे अपनी महिमा के शिखर पर ले लिया, लेकिन अरविदु के तहत यह गिरावट शुरू हुई। विभिन्न कारण जैसे कमजोर केंद्रीय सरकार, कृष्णदेव राय के कमजोर उत्तराधिकारी, बहमनी साम्राज्य के खिलाफ विभिन्न राजवंश संघर्ष, कमजोर साम्राज्य, आदि। साम्राज्य के पतन में योगदान दिया। साम्राज्य की सबसे उल्लेखनीय विशेषता तुंगभद्रा नदी द्वारा गठित प्राकृतिक बेसिन से पूरी की गई पानी की आवश्यकता थी। विजयनगर के शासक ने विशाल किलेबंदी की। पुरातत्वविद् ने शहर के भीतर की सड़कों और उन सड़कों का विस्तृत अध्ययन किया जो एक को शहर से बाहर ले जाती थीं। शाही केंद्र बस्ती के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित थे, जिसमें साठ से अधिक बार शामिल थे। पवित्र केंद्र तुंगभद्रा नदी के तट पर चट्टानी उत्तरी छोर पर स्थित था। परंपरा के अनुसार चट्टानी पहाड़ी ने बाली और सुग्रीव के बंदर साम्राज्य के लिए आश्रय के रूप में कार्य किया, जिसका उल्लेख रामायण में किया गया था। विजयनगर या 'विजय का शहर' एक शहर और एक साम्राज्य दोनों का घर था। यह उत्तर में कृष्णा नदी से प्रायद्वीप के चरम दक्षिण तक फैला हुआ था। लोगों ने इसे हम्पी के रूप में याद किया, जो स्थानीय मां देवी, 'पंपादेवी' से लिया गया नाम है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (१ अंक)

1. विजयनगर साम्राज्य की स्थापना किसने की थी?
उत्तर- हरिहर और बुक्का (भाई)। उन्हें अपने गुरु विद्यारण्य से प्रेरणा मिली।
2. विजयनगर साम्राज्य की स्थापना किस वर्ष में हुई थी?
उत्तर- 1336
3. विजयनगर साम्राज्य की स्थापना के समय दिल्ली का सुल्तान कौन था?
उत्तर- मुहम्मद बिन-तुगलक
4. 1443 में विजयनगर साम्राज्य का दौरा करने वाले फारसी राजदूत?
उत्तर- अब्दुल रज्जाक
5. विजयनगर साम्राज्य की राजधानी क्या थी?
उत्तर- हम्पी
6. कॉलिन मैकेंज़ी कौन थे?
उत्तर- कॉलिन मैकेंजी ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी में काम करते थे। वह 1815 में ब्रिटिश भारत के पहले सर्वेयर जनरल बनें।
7. यूनेस्को द्वारा हम्पी को विश्व धरोहर स्थल कब घोषित किया गया था?
उत्तर- 1986
8. विजयनगर साम्राज्य के संरक्षक देवता का नाम बताइए।
उत्तर- विरुपाक्ष (शिव का एक रूप)
9. कृष्णदेव राय द्वारा लिखित पुस्तक का नाम बताइए।
उत्तर- अमुक्तमाल्यदा (तेलुगु भाषा में)
10. विजयनगर साम्राज्य में नायक कौन थे?
उत्तर- निश्चित क्षेत्रों को नियंत्रित करने वाले सैन्य प्रमुख
व्याख्या: अमारा-नायक सैन्य कमांडर थे जिन्हें राय द्वारा शासन करने के लिए क्षेत्र दिए गए थे. उन्होंने क्षेत्र के किसानों, शिल्पकारों और व्यापारियों से कर और अन्य बकाया एकत्र किए। उन्होंने व्यक्तिगत उपयोग के लिए और घोड़ों और हाथियों की एक निर्धारित टुकड़ी को बनाए रखने के लिए राजस्व का हिस्सा बनाए रखा।

Q.11. निम्नलिखित का मिलान कीजिए

सूची 1	सूची 2
(i) मनुची	(क) समरकंद
(ii) जेम बैपटिस्ट ट्रेवर्नियर	(ब) इटली
(iii) दुआर्ते बारबोसा	(ग) फ्रांस
(iv) अब्दुल रज्जाक	(घ) पुर्तगाली

उत्तर- (i)-b, (ii)-c, (iii)-d, (iv)-a

Q.12. किस यात्री ने महानवमी डिब्बा को "विजय का घर" कहा?

उत्तर- डोमिंगो पेस

Q.13 निम्न छवियों की पहचान करें।

उत्तर- विरुपाक्ष मंदिर, विठ्ठल मंदिर, महानवमी डिब्बा, लोटस महल।

14. नीचे दिए गए दो कथन दिए गए हैं, जिन्हें अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में लेबल किया गया है। उन्हें पढ़ें और सही विकल्प चुनें।

(A) यह संभावना है कि विजयनगर के स्थल का चयन विरुपाक्ष और पंपादेवी के मंदिरों के अस्तित्व से प्रेरित था

(R) विजयनगर के राजाओं ने भगवान विरुपाक्ष की ओर से शासन का दावा किया।

(a) दोनों (A) और (R) सत्य हैं और (R) (A) का सही स्पष्टीकरण है

(b) दोनों (A) और (R) सत्य हैं और (R) (A) का सही स्पष्टीकरण नहीं है

(c) दोनों (A) और (R) सत्य नहीं हैं।

(d) (A) सत्य है और (R) सत्य नहीं है

उत्तर- (क)

15. रामायण के दृश्यों को किस मंदिर की आंतरिक दीवारों पर बनाया गया है?

उत्तर- हजाराराम मंदिर

Q.17. निम्नलिखित को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

(क) सलुवा (ख) संगम राजवंश (ग) तुलुव (घ) अरिवेदु

उत्तर – ख , क ,ग ,घ

18. विजयनगर के सभी शाही आदेश कन्नड़ लिपि में थे। यह कथन सही है या गलत है? [उत्तर: सच है]

व्याख्या: वास्तव में विजयनगर के राजाओं ने भगवान विरुपाक्ष की ओर से शासन करने का दावा किया था. सभी शाही आदेशों पर "श्री विरुपाक्ष" पर हस्ताक्षर किए गए थे, आमतौर पर कन्नड़ लिपि में शासकों ने "हिंदू सुरतराना" शीर्षक का उपयोग करके देवताओं के साथ अपने घनिष्ठ संबंधों का संकेत दिया था।

लघुउत्तरीय प्रश्न (३ अंक)

19. इतिहासकारों ने हम्पी की खोज का पुनर्निर्माण कैसे किया?

उत्तर- 1. हम्पी में खंडहर 1800 में कर्नल कॉलिन मैकेंज़ी नामक एक इंजीनियर और पुराविद द्वारा प्रकाश में लाए गए थे।

2. उन्होंने साइट का पहला सर्वेक्षण मानचित्र तैयार किया।

3. यह जानकारी विरुपाक्ष मंदिर और पंपादेवी के मंदिर के पुजारियों की यादों पर आधारित थी।

4. 1856 से, फोटोग्राफरों ने स्मारकों को रिकॉर्ड करना शुरू कर दिया जिसने विद्वानों को उनका अध्ययन करने में सक्षम बनाया।

5. 1836 में पुरालेखविदों ने हम्पी में इस और अन्य मंदिरों में पाए गए कई दर्जन शिलालेखों को इकट्ठा करना शुरू किया।

इतिहासकारों ने विदेशी यात्रियों और तेलुगु, कन्नड़, तमिल और संस्कृत में लिखे गए अन्य साहित्य के विवरणों के साथ स्रोतों से जानकारी भी एकत्र की।

इतिहासकारों ने विदेशी यात्रियों के खातों और तेलुगु, कन्नड़, तमिल और संस्कृत में लिखे गए अन्य साहित्य के साथ स्रोतों से जानकारी एकत्र की।

20. राक्षसी तंगडी (तालिकोटा) के युद्ध के परिणामों की जांच करें?

उत्तर- 1. यह 1565 में विजयनगर साम्राज्य के शासक द्वारा बीजापुर, अहमदनगर और गोलकुंडा की संयुक्त सेनाओं के खिलाफ राक्षसितांगदी (तालिकोटा) गाँव के पास लड़ा गया था।

2. विजयनगर के मुख्यमंत्री राम राय विजयनगर सेना का नेतृत्व कर रहे थे, लेकिन इस लड़ाई में हार का सामना करना पड़ा।

3. सुल्तान की सेना ने विजयनगर शहर में सब कुछ लूट लिया और नष्ट कर दिया और कुछ वर्षों के भीतर शहर को पूरी तरह से छोड़ दिया गया।

4 साम्राज्य के दक्षिण के पूर्व में स्थानांतरित होने के बाद जहां अरविदु (विजयनगर साम्राज्य का अंतिम राजवंश) ने पेनुकोंडा और बाद में चंदरगिरि से शासन किया

21. विजयनगर की पानी की आवश्यकताओं को कैसे पूरा किया गया?

1. उत्तर- चूंकि विजयनगर प्रायद्वीप के सबसे शुष्क क्षेत्रों में से एक था, इसलिए बारिश के पानी को संग्रहीत करने और इसे शहर में संचालित करने के लिए विस्तृत व्यवस्था की जानी थी।

2. लगभग सभी मामलों में अलग-अलग आकार के जलाशय बनाने के लिए इन धाराओं के किनारे तटबंध बनाए गए थे।

3. शुरुआती वर्षों में बनाया गया सबसे महत्वपूर्ण ऐसा टैंक अब कमलापुरम टैंक कहा जाता है।

4 इस टैंक से पानी न केवल आस-पास के खेतों की सिंचाई करता था, बल्कि संचालित भी किया जाता था "शाही केंद्र" के लिए एक चैनल के माध्यम से।

5. खंडहरों के बीच देखे जाने वाले सबसे प्रमुख वाटरवर्क्स में से एक हिरिया नहर है। इस नहर ने तुंगभद्रा के पार एक बांध से पानी खींचा और

खेती की घाटी की सिंचाई की जिसने "पवित्र केंद्र" को "शहरी कोर" से अलग कर दिया। यह स्पष्ट रूप से संगम वंश के राजाओं द्वारा बनाया गया था।

22. विजयनगर के शाही केंद्र के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- 1. यह शहर के दक्षिण पश्चिम भाग में स्थित था

2. वहां 60 मंदिर और 30 महल पाए गए
3. मंदिर मासियोनरी से बने थे जबकि धर्मनिरपेक्ष इमारतें जल्द खराब होने वाली सामग्रियों से बनी थीं
4. वहां दो मुख्य मंच पाए गए, जिनका नाम ऑडियंस हॉल और महानवमी दिब्बा था
5. अन्य इमारतों में कमल महल है, यहां राजा अपने सलाहकारों से मिलते थे

6. फिर भी एक और मंदिर पाया जाता है, जिसका नाम हजारा राम मंदिर है जो केवल शाही परिवार के लिए है।

23. विजयनगर साम्राज्य में मंदिरों की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर- 1) प्रारंभ में यह गुंबदों, मेहराबों, प्रवेश द्वारों की विशेषता वाली इंडो-इस्लामिक वास्तुकला शैली से प्रभावित था। बाद में नई सुविधाएँ जोड़ी गईं।

2) गोपुरम नामक मंदिर के प्रवेश द्वार विशाल संरचना थे।

3) उनके पास विशेष उद्देश्य के लिए मंडप या खुला मंडप है

मंदिर परिसर की एक विशेषता गोपुरम से मंदिर परिसर तक फैली रथ सड़क है।

24. किलेबंदी के भीतर शहरी कोर की कुछ विशिष्ट विशेषताएं बताएं।

उत्तर- 1. शहरी कोर का मुख्य स्रोत पुरातात्विक अवशेष, सर्वेक्षण, विदेशी यात्रियों के खाते हैं।

2. शहर के क्षेत्रों का उत्तर पूर्वी कोना शहरी कोर हो सकता है जहां अमीर व्यापारी रह सकते हैं।

3. ठीक चीनी चीनी मिट्टी के बरतन वहां पाए जाते हैं

4. आम लोगों के घरों के बारे में बहुत कम पुरातात्विक प्रमाण हैं लेकिन डुआर्टे बारबोसा ने इसके बारे में वर्णन किया। आम लोगों के घरों को अच्छी तरह से बनाया गया था और तदनुसार व्यवस्थित किया गया था

5. फील्ड सर्वेक्षण विभिन्न मंदिरों, मंदिरों, मस्जिदों की उपस्थिति और व्यापकता को इंगित करता है तथा बहुसंस्कृतिवाद की ओर इशारा करता है I

6. सर्वेक्षण यह भी इंगित करता है कि बारिश के पानी के टैंक बनाए गए थे।

25. किलेबंद क्षेत्र के भीतर कृषि क्षेत्रों को क्यों शामिल किया गया था?

उत्तर- किलेबंद क्षेत्र के भीतर कृषि क्षेत्रों को शामिल किया गया था

1. क्योंकि मध्ययुगीन घेराबंदी का मुख्य उद्देश्य रक्षकों को अधीनता में भूखा रखना था। .

2 ये घेराबंदी कई महीनों और कभी-कभी वर्षों तक भी रह सकती है।

3. आम तौर पर शासकों ने गढ़वाले क्षेत्रों के भीतर बड़े अन्न भंडार का निर्माण करके ऐसी स्थितियों के लिए तैयार रहने की कोशिश की।

दीर्घउत्तरीय प्रश्न (8 अंक)

26. विजयनगर के शासकों ने कृषि बेल्ट की रक्षा के लिए अधिक महंगी और विस्तृत रणनीति अपनाई। आपको क्या लगता है कि शहर के चारों ओर घेरेबंदी के फायदे और नुकसान क्या थे

उत्तर- गढ़वाले क्षेत्र के भीतर कृषि भूमि को घेरेबंदी करने के **लाभ**:

1. इसमें एक विस्तृत नहर प्रणाली थी जो सिंचाई सुविधाएं प्रदान करने के लिए तुंगभद्रा से पानी खींचती थी।
2. यह कृषि क्षेत्रों, खेती के खेतों, बगीचों और जंगलों को घेरेबंदी करता है।
3. इस बाड़े ने फसलों को जंगली जानवरों द्वारा खाए जाने से बचाया।
4. मध्ययुगीन काल में, रक्षा करने वाली सेनाओं को अधीनता में भूखा रखने के लिए घेराबंदी की गई थी।
5. ये घेराबंदी कई महीनों या कई वर्षों तक चली। इसलिए विजयनगर के शासकों ने कृषि बेल्ट की रक्षा के लिए एक रणनीति अपनाई और विस्तृत किया और बड़े अन्न भंडार का निर्माण किया।

नुकसान

1. यह प्रणाली बहुत महंगी थी।
2. प्रतिकूल परिस्थितियों के दौरान यह प्रणाली किसानों के लिए असुविधाजनक साबित हुई

3. किसानों को अपने खेत तक पहुंचने के लिए गेट-कीपर की अनुमति लेनी पड़ती थी।
यदि दुश्मन ने खेत को घेर लिया तो किसान अपने खेत की देखभाल नहीं कर सकता था

27. आपको क्या लगता है कि महानवमी डिब्बा से जुड़े अनुष्ठानों का क्या महत्व था?

उत्तर- 1. महानवमी दिब्बा विजयनगर में राजा का महल था, हालांकि कोई निश्चित प्रमाण नहीं है।
2 उपलब्ध स्रोत से हम अनुमान लगा सकते हैं कि इसमें बहुत सुंदर लकड़ी की संरचना थी
प्लेटफॉर्म के आधार को सुन्दर राहत नक्काशी के साथ कवर किया गया था।
3. महानवमी डिब्बा में एक बहुत ही प्रभावशाली मंच था जिसे "दर्शक हॉल" के रूप में जाना जाता था। यह ऊंची दोहरी दीवारों से घिरा हुआ था, उनके बीच एक सड़क चल रही थी।
4. महानवमी दिब्बा के साथ कई अनुष्ठान जुड़े हुए थे। यहां हिंदू त्योहार महानवमी या नवरात्रि सितंबर-अक्टूबर के महीनों में बहुत धूम-धाम से मनाया जाता था।
5. यह पर्व 9 दिनों तक चलता रहा। विजयनगर साम्राज्य के शासकों ने अपनी शक्ति, प्रतिष्ठा और आधिपत्य का प्रदर्शन किया।
6. देवी और राजकीय घोड़े की पूजा।
7. उन्होंने भैंसों और अन्य जानवरों की बलि भी दी।
8. मुख्य आकर्षणों में से एक इस अवसर पर कई समारोह किए गए जिनमें शामिल थे: विभिन्न देवताओं की पूजा और इस अवसर पर नृत्य और कुश्ती मैच थे
9. घोड़ों, हाथियों, रथों और सैनिकों के जुलूस भी आयोजित किए गए थे
ये सभी समारोह राजा और उसके मेहमानों के सामने प्रस्तुत किए गए। उत्सव के अंतिम दिन, राजा ने अपनी सेना के साथ-साथ सेना के नायकों का भी निरीक्षण किया। उन्होंने नायकों से उपहार भी स्वीकार किया।

28. **कृष्णदेव राय की उपलब्धियां और योगदान क्या थे?*****

उत्तर- **कृष्णदेव राय (1509-1529 ई.)**

- तुलुवा वंश के कृष्णदेव राय विजयनगर साम्राज्य के सबसे प्रसिद्ध राजा थे
- डोमिंगो पेस के अनुसार, एक पुर्तगाली यात्री "कृष्णदेव राय सबसे सशक्त और परिपूर्ण राजा थे जो संभवतः हो सकते थे"।

कृष्णदेव राय की विजय
तुंगभद्रा और कृष्णा नदियों (रायचूर दोआब) के बीच की भूमि कृष्णदेव द्वारा अधिग्रहित की गई थी 1512 में।
1514 में, ओडिशा के शासकों को वश में कर लिया गया और 1520 में बीजापुर के सुल्तान को पराजित कर दिया गया। उसने अपने राज्य को इतना व्यापक बना दिया कि कई छोटे राज्य उसके साथ जुड़ गए और राजा कृष्णदेव राय के प्रति अपना सम्मान दिखाया।
उनका राज्य लगातार सैन्य तैयारियों की स्थिति में रहा। यह कृष्णदेव राय के समय में अद्वितीय शांति और समृद्धि की परिस्थितियों में फला-फूला उनका योगदान

- एक सक्षम प्रशासक।
- उन्होंने सिंचाई के लिए बड़े टैंक और नहरों का निर्माण किया।
- उन्होंने विदेशी व्यापार की महत्वपूर्ण भूमिका को समझते हुए नौसेना शक्ति विकसित की।
- उन्होंने पुर्तगाली और अरब व्यापारियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध बनाए रखा।
- उन्होंने अपनी सरकार के राजस्व में वृद्धि की।

- उन्होंने कला और वास्तुकला का संरक्षण किया।
- यह उनकी अवधि के दौरान विजयनगर साम्राज्य अपनी महिमा के चरम पर पहुंच गया था।
- कृष्णदेव राय एक महान विद्वान थे।
- अष्टदिगज: आठ विद्वानों के एक समूह ने उनके दरबार को सजाया

29. **अमरनायक प्रणाली विजयनगर साम्राज्य का प्रमुख राजनीतिक नवाचार था।-' विस्तार समझाए। *****

उत्तर- अमरनायक सैन्य कमांडर थे जिन्हें राय द्वारा शासन करने के लिए क्षेत्र दिए गए थे।-

1. अमारा नायक क्षेत्र के-किसानों, शिल्पकारों और व्यापारियों से कर और अन्य बकाया वसूल करते थे।
2. उन्होंने राजस्व का कुछ हिस्सा व्यक्तिगत उपयोग के लिए और घोड़ों और हाथियों के एक निर्धारित दल को बनाए रखने के लिए अपने पास रखा।
3. इन टुकड़ियों ने रायों को एक प्रभावी लड़ाकू बल प्रदान किया, जिसकी मदद से उन्होंने दक्षिणी प्रायद्वीप को नियंत्रित किया।
4. अमरनायक प्रतिवर्ष राजा को कर भेजते थे और राजा को उपहार देते थे।- राजा अपना वर्चस्व दिखाने के लिए कभीकभी उन्हें एक स्थान से दूसरे स्थान पर स्थानांतरित कर देते थे।-
5. इनमें से कई नायकों ने स्वतंत्र राज्यों की स्थापना की जिसके कारण केंद्रीय शाही संरचना का पतन हुआ।

30. **विजयनगर का विठ्ठल मंदिर अद्वितीय क्यों था?**

- विठ्ठल मंदिर अपनी असाधारण वास्तुकला और बेजोड़ शिल्प कौशल के लिए प्रसिद्ध है। प्रतिष्ठित मंदिर में संगीतमय खंभों जैसी अद्भुत पत्थर की संरचनाएं हैं। इसमें 56 संगीतमय स्तंभ हैं। संगीतमय स्तंभों के समूह को प्रतिध्वनित पत्थर के विशाल एकल टुकड़ों से उकेरा गया था।
- इस मंदिर परिसर की एक विशिष्ट विशेषता रथ की सड़कें हैं जो मंदिर के गोपुरम से एक सीधी रेखा में फैली हुई हैं। इन सड़कों को पत्थर की पटियों से पक्का किया गया था और खंभों वाले मंडपों के साथ पंक्तिबद्ध किया गया था जिसमें व्यापारियों ने अपनी दुकानें लगाई थीं।
- इस मंदिर में कई हॉल हैं और एक रथ के रूप में बनाया गया एक अनूठा मंदिर है।
- इस मंदिर के मुख्य देवता विठ्ठल थे, विष्णु का एक रूप, जिसकी आमतौर पर महाराष्ट्र में पूजा की जाती है।

विजयनगर साम्राज्य का दौरा करने वाले यात्री--- विविध यात्रियों ने विजयनगर शहर का दौरा किया और अपने यात्रा खातों को छोड़ दिया। उनमें से उल्लेखनीय हैं,

इतालवी व्यापारी निकोलो डी कोंटी, अब्दुर रज्जाक नाम के एक राजदूत को फारस के शासक द्वारा भेजा गया और रूस से अफानासी निकितिन नामक एक व्यापारी। उन सभी ने 15 वीं शताब्दी में शहर का दौरा किया।

- 16 वीं शताब्दी में डुआर्टे बारबोसा, डोमिंगो पेस और फर्नाओ नुनिज़ जैसे पुर्तगाली यात्रियों ने शहर का दौरा किया।

अमुक्तमाल्यदा: कृष्णदेवराय द्वारा **तेलुगु** में रचित राज्यकला पर एक काम

अमारा: अमारा शब्द संस्कृत शब्द समारा से लिया गया है, जिसका अर्थ है युद्ध । यह फारसी शब्द अमीर जैसा दिखता है, जिसका अर्थ है एक उच्च महान।

यवन: यवन एक संस्कृत शब्द है जिसका उपयोग यूनानियों और अन्य लोगों के लिए किया जाता है जिन्होंने उत्तर पश्चिम से उपमहाद्वीप में प्रवेश किया था।

हाउस ऑफ विक्ट्री: डोमिंगोपेस ने दर्शकों के हॉल और महानवमी दिब्बा को एक साथ विजय का घर कहा।

कुदिराई चेट्टी- विजयनगर साम्राज्य का स्थानीय घोड़ा व्यापारी समुदाय

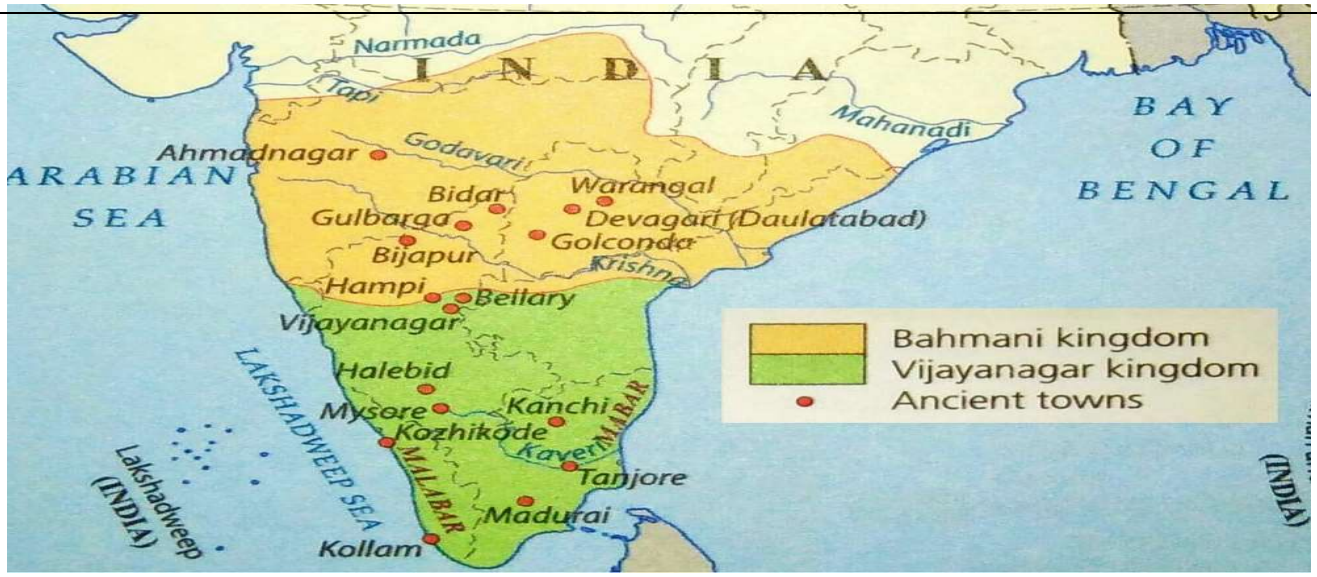

विषय-VIII
किसान, ज़मींदार और राज्य

श्री बिजय एक्का
स्नातकोत्तर शिक्षक (इतिहास) के. वि. रामगढ

❖ महत्वपूर्ण बिंदु

1. रैयत : किसान
2. खुद-काश्त : वे किसान जो उन्हीं गाँवों में रहते थे जिनमें उनकी अपनी थी।
3. पाहि-काश्त : अनिवासी कृषक जो किसी अन्य गाँव खेती करने आते थे।
4. मानसून : वे पवनें जो भारत में वर्षा (या भारी वर्षा) लाती हैं।
5. जिन्स-ए-कामिल: नकदी फसलें जैसे कपास और गन्ना।
6. मुकद्दम : ग्राम प्रधान।
7. मवास : उपद्रवियों के लिए शरणस्थली।
8. मिल्कियत : जमींदारों की निजी भूमि।
9. परगना : मुगल प्रांत का प्रशासनिक उपखण्ड।
10. इजारा : ठीका पर भूमि देने की प्रथा।
11. फरमान : लिखित शाही आदेश फरमान कहलाता था।
12. हजारा : हजार सैनिकों की टुकड़ी का सेनापति।
13. उलेमा : मुस्लिम विद्वानों का वर्ग।
14. समा : सूफियों की धार्मिक बैठकें जो संगीत के साथ होती थीं समा कहा जाता है।
15. कोतवाल : राजधानी या नगर प्रशासन का प्रभारी अधिकारी।
16. कानूनगो : भूमि के वंशानुगत धारकों के साथ-साथ स्थानीय अधिकारी स्थानीय

17. परिस्थितियों से परिचित। उन्हें खेती की स्थिति, वास्तविक उत्पादन आदि रिपोर्ट पेश करने का आदेश दिया गया था।
18. बीघा : अकबर के समय में भूमि माप की इकाई। राजस्व प्रति बीघा उत्पादन के हिसाब से वसूली की जाती थी।
19. काज़ी : अकबर के शासनकाल में यह मुख्य न्यायिक अधिकारी था।
20. पोलज : वह भूमि जो लगभग हर वर्ष खेती के अधीन रहती है मुगल काल के दौरान पोलज कहा जाता था।
21. परती : भूमि जो बंजर रह जाती है।

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. मंडल का चयन किसकी सहमति से किया जाता था :
(a) अधिकारी (b) उच्च जाति के लोग (c) गाँव के बुजुर्ग (d) मतदान
उत्तर: (c)
2. मुगल काल के दौरान कृषि समाज की मूल इकाई:
(a) एक गांव (b) ब्लॉक (c) सूबा (d) परगना
उत्तर : (a)
3. खुद-काश्त शब्द से आप क्या समझते हैं?
(a) किसान जो गांव के निवासी थे (b) अनिवासी कृषक
(c) राजस्व संग्राहक (d) जाति पंचायत के प्रमुख
उत्तर : (a)
4. मुगल साम्राज्य के दौरान जिन्स-एकामिल क्या था-?
(aआधी फसल ((b) सर्वोत्तम फसल (cरबी की फसल ( )d) खरीफ की फसल
उत्तर) :b (
5. साम्राज्य के दौरान ग्राम समुदाय के घटक क्या थे?
(a) किसान (b) ग्राम प्रधान (c) पंचायत (d) उपरोक्त सभी
उत्तर : (d)
6. क्या काश्तकार कारीगर उत्पादन में संलग्न रहते थे?
(aहाँ (, हमेशा (bहाँ (, पूर्ण कृषि गतिविधि के दौरान
(cनहीं (, कभी नहीं (dउन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी (
उत्तर) :b(
7. पंचायत में प्रत्येक जाति की अपनी |होती थी-------
(a सभा पंचायत ((b) निचली पंचायत (c) जाति पंचायत (dइनमें से नहीं (
उत्तर) :c(
8. आइन-एअकबरी के लेखक कौन थे-?
(aबिरूनी-अल ((b) अबुल फजल (c रहीम ((d) फकीर अज़ियनदीन-
9. मुगल साम्राज्य में जमींदारों की उच्च स्थिति का इनमें से कौन सा प्रमुख कारण था?
(aउनकी आय बहुत अधिक थी ((b) उनके पास व्यापक व्यक्तिगत भूमि थी
(c (प्रायः, वे उच्च जाति के थे (dये सभी (
उत्तर) :d(
10. 10. आइन:दफ्तार हैं------ अकबरी के-ए-
)a दो ( )b तीन ( )c चार ( )dपांच (
उत्तर) :c(

11. जमींदारों के पास विशाल भूमि होती थी, जिसे_____कहते थे।

(a) मिल्कियत (b) ज़मीन (cगृह ((dभूमि (

उत्तर) : a (

12. मुगल साम्राज्य के दौरान, पंचायतें अपने पास उपलब्ध धन का उपयोग किस प्रकार करती थीं?

a. इसका उपयोग राजस्व अधिकारियों के ख़ातिरदारी के लिए किया जाता था।
b. इसका उपयोग मुकद्दम और चौकीदार को वेतन देने के लिए किया जाता था।
c. इसका उपयोग सामुदायिक कल्याण के खर्चों को पूरा करने के लिए किया जाता था।
d. ये सभी।

उत्तर: (d (

13. में महिला जमींदार पाई जाती थीं------ 18वीं सदी में।

) aबंगाल ( ) bराजस्थान ( ) c बिहार ( ) dगुजरात (

उत्तर) : a (

14. ऑटोमन साम्राज्य का था--------

) aचीन ( ) bईरान ( ) cतुर्की ( ) dइराक (

उत्तर) : c (

15. अहोमके राजा थे -------

) aमध्य प्रदेश ( ) bआंध्र प्रदेश ( ) cउड़ीसा ( ) dअसम (

<u>लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक)</u>

प्र.1. मध्यकालीन भारत के दो प्रकार के कृषकों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर सत्रहवीं शताब्दी के स्रोतों में दो प्रकार के कृषकों का उल्लेख मिलता है-

(i) खुद-काश्त और (ii) पाहि-काश्त।

(i) खुद-काश्त- वे उस गाँव के निवासी होते थे जिसमें उनकी भूमि होती थी। वे उस जमीन पर खेती करते थे जिस पर उनका अधिकार था। वे अपने संसाधनों, श्रम और औजारों का इस्तेमाल करते थे। उनकी सामाजिक स्थिति जोत के आकार, अन्य किसानों पर आर्थिक नियंत्रण पर निर्भर करती थी।

(ii) पाहि-काश्त किसान- वे अनिवासी कृषक थे जो किसी अन्य गाँव के थे, लेकिन अनुबंध के आधार पर किसी अन्य गांव की भूमि पर खेती करते थे। वे अपनी मर्जी से या मजबूरन पाहि-काश्त बनते थे।

सामाजिक पदानुक्रम में उनकी स्थिति दो कारकों द्वारा निर्धारित होती थी:

(क) उनकी जाति और (ख) संसाधनों पर नियंत्रण

Q2. 16वीं और 17वीं शताब्दी में जाति पंचायतों के कार्यों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: (i) ग्राम पंचायत के अलावा गाँव में हर जाति की अपनी पंचायत होती थी।

(ii) समाज में ये पंचायतें काफ़ी ताकतवर होती थीं। राजस्थान में जाति पंचायतें अलग-अलग जातियों के लोगों के बीच दीवानी के झगड़ों का निपटारा करती थीं। वे ज़मीन से जुड़े दावेदारियों के झगड़े सुलझाती थीं।

(iii) जाति पंचायतें यह तय करती थीं कि शादियाँ जातिगत मानदंडों के मुताबिक हो रही हैं या नहीं।

(iv) जाति पंचायतें यह भी तय करती थीं कि गाँव के आयोजन में किसको किसके ऊपर तरजीह दी जाएगी। कर्मकांडीय वर्चस्व किस क्रम में होगा।

(v) फ़ौजदारी न्याय को छोड़ दें तो ज़्यादातर मामलों में राज्य जाति पंचायत के फ़ैसलों को मानता था।

(vi) पश्चिम भारत – ख़ासकर राजस्थान और महाराष्ट्र जैसे प्रांतों–के संकलित दस्तावेजों में ऐसी कई अर्जियाँ हैं जिनमें पंचायत से " ऊँची " जातियों या राज्य के अधिकारियों के ख़िलाफ़ जबरन कर उगाही या बेगार वसूली की शिकायत की गई है। आमतौर पर यह अर्जियाँ ग्रामीण समुदाय के सबसे निचले तबके के लोग लगाते थे। इनमें किसी जाति या संप्रदाय विशेष के लोग संभ्रांत समूहों की उन माँगों के ख़िलाफ़ अपना विरोध जताते थे जिन्हें वे नैतिक दृष्टि से अवैध मानते थे। उनमें एक थी बहुत ज़्यादा कर की माँग।

Q3. 'भारत में गाँव छोटे गणतंत्र थे।' चर्चा कीजिए।

उत्तर: (i) उन्नीसवीं सदी के कुछ अंग्रेज़ अफ़सरों ने भारतीय गाँवों को एक ऐसे " छोटे गणराज्य" के रूप में देखा जहाँ लोग सामूहिक स्तर पर भाईचारे के साथ संसाधनों और श्रम का बँटवारा करते थे।

(ii) लेकिन ऐसा नहीं लगता कि गाँव में सामाजिक बराबरी थी। संपत्ति की व्यक्तिगत मिल्कियत होती थी, साथ ही जाति और जेंडर (सामाजिक लिंग) के नाम पर समाज में गहरी विषमताएँ थीं।

(iii) कुछ ताकतवर लोग गाँव के मसलों पर फ़ैसले लेते थे और कमज़ोर वर्गों का शोषण करते थे। न्याय करने का अधिकार भी उन्हीं को मिला हुआ था।

(iv) इससे भी महत्त्वपूर्ण बात यह थी कि गाँवों और शहरों के बीच होने वाले व्यापार की वजह से गाँवों में भी नकद के रिश्ते फैल चुके थे। मुग़लों के केंद्रीय इलाकों में कर की गणना और वसूली भी नकद में की जाती थी। जो दस्तकार निर्यात के लिए उत्पादन करते थे, उन्हें उनकी मज़दूरी या पूर्व भुगतान भी नकद में ही मिलता था। इसी तरह कपास, रेशम या नील जैसी व्यापारिक फ़सलें पैदा करने वालों का भुगतान भी नकदी ही होता था ।

प्र.4. कृषि उत्पादन में महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका का वर्णन करें।

उत्तर: (i) महिलाओं ने कृषि उत्पादन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने खेतों में पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम किया। पुरुष ज़मीन जोतते थे जबकि महिलाएँ फसल बोती थीं, निराई करती थीं और फसल की कटाई करती थीं।

(ii) महिलाएं सूत कातना, मिट्टी के बर्तन बनाने और कढ़ाई के लिए मिट्टी गूंथना जैसे महत्वपूर्ण कार्य करती थीं। इस प्रकार, किसान महिलाएँ जो कुशल कारीगर थीं, न केवल खेतों में काम करती थीं, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर अपने नियोक्ता के घरों और यहाँ तक कि बाज़ारों में भी जाती थीं।

(iii) जमींदार वर्ग की महिलाओं को संपत्ति विरासत में पाने का अधिकार था। विधवाओं सहित महिलाओं ने ग्रामीण भूमि बाजार में भाग लिया। विशेषकर पंजाब में जो संपत्ति उन्हें विरासत में मिली थी, उसे बेचने अथवा गिरवी रखने के लिए वे स्वतंत्र थीं।

(iv) अठारहवीं सदी में बंगाल में कई महिलाएँ–ज़मींदार थीं। दरअसल, राजशाही जमींदारी जो उस समय की सबसे प्रसिद्ध जमींदारी में से एक थी, उसकी मुखिया एक महिला थी।

(v) चूंकि समाज श्रम पर निर्भर था, इसलिए बच्चे पैदा करने की अपनी क्षमता के कारण उन्हें कृषि प्रधान समाज में एक महत्वपूर्ण संसाधन माना जाता था। लेकिन बार–बार गर्भधारण, कुपोषण और बच्चे के जन्म के दौरान मृत्यु के कारण महिलाओं में मृत्यु दर बहुत अधिक थी। इस प्रकार समाज में विवाहित महिलाओं या पत्नियों की संख्या कम हो गई। इस प्रकार, कई ग्रामीण समुदायों में विवाह के लिए दहेज के बजाय दुल्हन की कीमत का भुगतान आवश्यक था।

5. मुगल भारत में जमींदारों द्वारा निभाई गई भूमिका का परीक्षण करें।

उत्तर: जमींदार वे लोग थे जो सीधे तौर पर कृषि उत्पादन की प्रक्रियाओं में भाग नहीं लेते थे, लेकिन उन्हें समाज में उच्च दर्जा प्राप्त था।

(i) जमींदार अपनी भूमि को अपनी संपत्ति (मिल्कियत) मानते थे। उनके पास अपनी संपत्ति बेचने, दान देने और गिरवी रखने का नियंत्रण था।

(ii) समाज में उनकी श्रेष्ठ स्थिति के कारण उन्हें कई सामाजिक और आर्थिक विशेषाधिकार प्राप्त थे।
(iii) जमींदार उच्च जाति के थे, जिससे समाज में उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
(iv) जमींदारों ने राज्य के लिए कुछ सेवाएँ (खिदमत) प्रदान कीं। अपनी सेवा के फलस्वरूप उन्हें राज्य में उच्च पद प्राप्त हुआ।
(v) जमींदारों को राज्य की ओर से राजस्व एकत्र करने का अधिकार था और इस कार्य के लिए उन्हें वित्तीय मुआवजा भी मिलता था।
(vi) जमींदारों ने राज्य के सैन्य संसाधनों पर कड़ा नियंत्रण रखा था। उनके पास एक किला और एक सुसज्जित सशस्त्र इकाई थी जिसमें घुड़सवार सेना, तोपखाना और पैदल सेना शामिल थी।
(vii) जमींदारों ने कृषि भूमि के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने किसानों को धन और कृषि उपकरण उधार देकर उनकी बस्तियों में मदद की। इसके परिणामस्वरूप कृषि उपज में वृद्धि हुई और जमींदारों द्वारा भूमि की बिक्री और खरीद में वृद्धि हुई।
(viii) इस बात के भी प्रमाण हैं कि ज़मींदारों के पास बाज़ार थे। किसान अपनी फसलें बेचने के लिए इन बाज़ारों में आते थे।
(ix) यदि हम मुगल काल के गाँवों के सामाजिक संबंध को एक पिरामिड के रूप में देखें तो जमींदार शीर्ष पर थे। वे समाज में सर्वोच्च स्थान पर थे।
(x) इसमें कोई संदेह नहीं कि जमींदार लोगों का शोषण करते थे लेकिन किसानों के साथ उनके संबंध उनकी आपसी एकजुटता और वंशानुगत हिस्से पर निर्भर करते थे। इस प्रकार, वे राज्य के विरुद्ध विद्रोह की स्थिति में किसानों के सहयोग प्राप्त करने में सक्षम थे।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8marks)

प्र.1. सोलहवीं-सत्रहवीं शताब्दी में कृषि उत्पादन को निर्वाह कृषि के रूप में किस हद तक वर्णित किया जा सकता है? अपने उत्तर के कारण बताएं।

उत्तर- (i) सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दियों में, भूमि की प्रचुरता, उपलब्ध श्रम और किसानों की गतिशीलता तीन कारक थे जो कृषि के निरंतर विस्तार के लिए जिम्मेदार थे।
(ii) चूँकि चावल, गेहूँ या बाजरा सबसे अधिक बार उगाई जाने वाली फ़सलें थीं, ऐसा कहा जाता है कि कृषि का प्राथमिक उद्देश्य लोगों का पेट भरना था। लेकिन बुनियादी अनाज की खेती पर ध्यान केंद्रित करने का मतलब यह नहीं था कि कृषि केवल निर्वाह के लिए थी। निम्नलिखित विवरण से यह स्पष्ट है:
(iii) कपास और गन्ना जैसी फसलें उत्तम फसलें थीं। मुगल राज्य ने किसानों को ऐसी फसलों की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया क्योंकि वे अधिक राजस्व लाते थे। इस प्रकार, कपास मध्य भारत और दक्कन के पठार में फैले एक विशाल क्षेत्र में उगाई जाती थी, जबकि बंगाल अपनी चीनी के लिए प्रसिद्ध था।
(iv) नकदी फसलें जैसे सभी प्रकार के तिलहन और दालें भी उगाई जाती थीं।
(v) सत्रहवीं शताब्दी में, मक्का जैसी नई फसलें अफ्रीका और स्पेन के रास्ते भारत पहुंचीं। यह पश्चिमी भारत की प्रमुख फसलों में से एक बन गई।
(vi) नई दुनिया से टमाटर, आलू और मिर्च जैसी सब्जियां आईं। नए फल-अनानास और पपीता भी भारत पहुंचे। ये सभी किसानों द्वारा उगाए जाते थे।
इस प्रकार, यह निर्वाह कृषि नहीं थी बल्कि औसत किसानों की जोत में निर्वाह और वाणिज्यिक कृषि एक साथ मिश्रित थे।

प्रश्न.2. उन साक्ष्यों का परीक्षण कीजिए जो बताते हैं कि मुगल राजस्व व्यवस्था के लिए भू-राजस्व महत्वपूर्ण था?

उत्तर: निम्नलिखित प्रमाण बताते हैं कि मुगल राजस्व प्रणाली के लिए भू-राजस्व महत्वपूर्ण था:

(i) चूंकि भूमि राजस्व मुगल साम्राज्य का आर्थिक मुख्य आधार था, इसलिए कृषि उत्पादन पर नियंत्रण सुनिश्चित करने और साम्राज्य में राजस्व को ठीक करने और एकत्र करने के लिए एक प्रशासनिक तंत्र था। एक दीवान था जो साम्राज्य की राजकोषीय प्रणाली की देखरेख के लिए जिम्मेदार था।

(ii) लोगों पर कर की राशि तय करने से पहले कृषि भूमि और उनके उत्पादन की जानकारी एकत्र की जाती थी।

(iii) भू-राजस्व व्यवस्था में दो चरण शामिल थे - मूल्यांकन और संग्रह।

आमिल-गुज़ार या राजस्व संग्रहकर्ता को निर्देश दिया गया कि वह किसानों को नकद या वस्तु के रूप में भुगतान करने का विकल्प दे। नकद भुगतान को प्राथमिकता दी गई।

(iv) भू-राजस्व का आकलन करते समय, राज्य के अधिकारियों ने इसके दावों को अधिकतम करने का प्रयास किया।

(v) आइन ने खेती योग्य और खेती योग्य भूमि के समुच्चय को संकलित किया। अकबर के अधीन भूमि का वर्गीकरण किया गया और प्रत्येक के लिए भुगतान किया जाने वाला अलग-अलग भू-राजस्व तय किया गया।

प्रश्न.3. सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी में वनवासियों के जीवन में किस प्रकार परिवर्तन आया?
या, 16-17वीं शताब्दी में वनवासियों के जीवन का वर्णन करें।

उत्तर: वनवासियों के जीवन में परिवर्तन (सोलहवीं और सत्रहवीं शताब्दी):

(i) 16वीं और 17वीं शताब्दी में भारत के विभिन्न भागों में विशाल क्षेत्र वनों से आच्छादित थे। वनवासियों को जंगली कहा जाता था। 'जंगली' शब्द का उपयोग उन लोगों का वर्णन करने के लिए किया जाता था जिनके व्यवसायों में शिकार, वन उपज इकट्ठा करना और झूम खेती जैसी गतिविधियाँ शामिल थीं। ये गतिविधियाँ विभिन्न क्षेत्रों में एक विशिष्ट कारण के अनुसार की जाती थीं। भीलों के उदाहरण पर विचार करें जो गर्मियों में मछली पकड़ते थे और वसंत में वन उपज एकत्र करते थे। इस तरह की गतिविधियों ने वन जनजातियों को गतिशील होने में सक्षम बनाया जो उनके जीवन की एक विशिष्ट विशेषता थी।

(ii) चूंकि राज्य को शक्तिशाली सेना को संगठित करने के लिए हाथियों की आवश्यकता थी, इसलिए जंगलवासियों से ली जाने वाली पेशकश में अकसर हाथी भी शामिल होते थे।

(iii) वनवासियों के जीवन में भी व्यावसायिक कृषि का प्रसार हुआ। शहद, मोम, गोंद और लाख जैसे वन उत्पादों की भारी माँग थी। सत्रहवीं शताब्दी में गोंद और लाख विदेशी निर्यात की प्रमुख वस्तुएं बन गईं और बहुमूल्य विदेशी मुद्रा अर्जित की।

(iv) हाथियों को भी पकड़कर बेच गया।

(v) पंजाब की लोहानी जैसी जनजातियाँ अफगानिस्तान के साथ भूमि व्यापार और पंजाब में आंतरिक व्यापार में भी संलग्न थीं।

(vi) वनवासियों के जीवन को बदलने के लिए सामाजिक कारक भी जिम्मेदार थे।

(vii) कई आदिवासी मुखिया जमींदार बन गए, कुछ तो राजा भी बन गए। वे अपनी सेना में अपने ही जनजातियों के लोगों को भर्ती करते थे। उदाहरण के लिए, असम में, अहोम राजा उन लोगों पर निर्भर थे जो भूमि के बदले में सैन्य सेवाएँ प्रदान करते थे।

(viii) सोलहवीं शताब्दी तक जनजातीय से राजशाही व्यवस्था में परिवर्तन हो चुका था। आइन-ए-अकबरी में उत्तर-पूर्वी भारत में जनजातीय राज्यों के अस्तित्व का वर्णन किया गया है। उन राजाओं के बारे में भी वर्णन मिलता है जिन्होंने कई जनजातियों से युद्ध किया और उन पर विजय प्राप्त की।

(ix) वन्य क्षेत्रों में नये सांस्कृतिक प्रभावों का भी प्रवेश हुआ। संभवतः सूफी संतों ने इन क्षेत्रों में इस्लाम के प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभाई।

प्र.4. उन तरीकों की चर्चा कीजिए जिनसे पंचायत और ग्राम प्रधान ग्रामीण क्षेत्रों को नियंत्रित करते थे।
या,16वीं-17वीं सदियों के दौरान मुगल ग्रामीण भारतीय समाज में पंचायतों की भूमिका की व्याख्या कीजिए।

उत्तर: **(i) पंचायत का अर्थ:** ग्राम पंचायत में बुजुर्गों की एक सभा होती थी, जो निम्न वर्ग को छोड़कर विभिन्न जातियों और समुदायों का प्रतिनिधित्व करते थे। आम तौर पर गांव के महत्वपूर्ण लोग इसके सदस्य होते थे जिनका अपनी संपत्ति पर वंशानुगत अधिकार होता था।

(ii) सामान्य संघटन एवं कार्य: मिश्रित जाति के ग्रामों में पंचायत प्राय: विषमांग निकाय होती थी। पंचायत गांव में विभिन्न जातियों और समुदायों का प्रतिनिधित्व करती थी। ग्राम पंचायत का नेतृत्व मुकद्दम द्वारा किया जाता था जिसे मंडल भी कहा जाता था। वह गाँव के बुजुर्गों की सहमति से चुना जाता था और गाँव के बुजुर्गों के विश्वास बने रहने तक वह अपने पद पर बना रहता था। उसका कार्य पटवारी की सहायता से ग्राम लेखा तैयार करना था।

(iii) मुगल ग्रामीण भारतीय समाज में पंचायतों की भूमिका:

(i) पंचायत का मुख्य कार्य यह सुनिश्चित करना था कि गाँव में रहने वाले विभिन्न समुदायों के बीच जाति की सीमाएँ बनी रहें।

(ii) इसके पास जुर्माना और कर लगाने का भी अधिकार था।

(iii) यह समुदाय से निष्कासन जैसी सजा भी दे सकता था।

(iv) गाँव में प्रत्येक जाति की अपनी जाति पंचायत होती थी। जाति पंचायत का समाज में काफी अधिकार था। राजस्थान में, जाति पंचायतें विभिन्न जातियों के सदस्यों के बीच दीवानी विवादों में मध्यस्थता करती थीं। यह भूमि संबंधी विवादों में भी मध्यस्थता करता था, यह तय करता था कि विवाह उस जाति के मानदंड के अनुसार किए गए थे, आदि। ज्यादातर मामलों में, राज्य जाति पंचायत द्वारा लिए गए निर्णयों का सम्मान करता था।

(v) पंचायतों को अपील की अदालत भी माना जाता था, जो यह सुनिश्चित करती थी कि राज्य अपनी नैतिक जिम्मेदारियों को पूरा करे।

(vi) न्याय के लिए अकसर जातियों के एक समूह या एक समुदाय द्वारा सामूहिक रूप से पंचायत में याचिकाएँ दायर की जाती थीं, जो अभिजात वर्ग की ओर से नैतिक रूप से नाजायज माँगों का विरोध करती थीं।

(vii) अत्यधिक राजस्व मांगों के मामलों में, पंचायत अकसर समझौता करने का सुझाव देती है। यदि यह असफल रहा, तो किसानों ने सजा के अधिक कठोर रूपों का सहारा लिया, जैसे कि गाँव को छोड़ देना।

<u>स्रोत आधारित प्रश्न (4 Marks)</u>

1. अकबर के अधीन भूमि का वर्गीकरण

आइन में वर्गीकरण के मापदंड की निम्नलिखित सूची दी गई है:

अकबर बादशाह ने अपनी गहरी दूरदर्शिता के साथ ज़मीनों का वर्गीकरण किया और हरेक (वर्ग की ज़मीन) के लिए अलग-अलग राजस्व निर्धारित किया। पोलज वह ज़मीन है जिसमें एक के बाद एक हर फ़सल की सालाना खेती होती है और जिसे कभी खाली नहीं छोड़ा जाता है। परौती वह ज़मीन है जिस पर कुछ दिनों के लिए खेती रोक दी जाती है ताकि वह अपनी खोयी ताकत वापस पा सके। चचर वह ज़मीन है जो तीन या चार वर्षों तक खाली रहती है।

बंजर वह ज़मीन है जिस पर पाँच या उससे ज़्यादा वर्षों से खेती नहीं की गई हो। पहले दो प्रकार की ज़मीन की तीन किस्में हैं, अच्छी, मध्यम और खराब। वे हर किस्म की ज़मीन के उत्पाद को जोड़ देते हैं, और इसका तीसरा हिस्सा मध्यम उत्पाद माना जाता है, जिसका एक-तिहाई हिस्सा शाही शुल्क माना जाता है।

(i) चचर भूमि को तीन से चार वर्षों के लिए अनुपजाऊ क्यों छोड़ दिया जाता था?

(ii) इस वर्गीकरण के आधार की व्याख्या कीजिए।

(iii) क्या आपको लगता है कि राजस्व का आकलन करने के लिए यह एक ठोस आधार था? व्याख्या करें।

उत्तर: (i) चचर वह भूमि थी जो 3 या 4 वर्षों के लिए परती छोड़ दी जाती थी। इस भूमि का उपयोग फसल उगाने के लिए नहीं किया जाता था क्योंकि यह माना जाता था कि 3 या 4 वर्षों के भीतर भूमि की गुणवत्ता में सुधार होगा और फिर यह आगे की खेती के लिए उपयुक्त होगी।

(ii) सम्राट अकबर ने निम्नलिखित तरीकों से भूमि का वर्गीकरण किया:

(क) पोलज वह ज़मीन है जिसमें एक के बाद एक हर फ़सल की सालाना खेती होती है और जिसे कभी खाली नहीं छोड़ा जाता है।

(ख) परौती वह ज़मीन है जिस पर कुछ दिनों के लिए खेती रोक दी जाती है ताकि वह अपनी खोयी ताकत वापस पा सके।

(ग) चचर वह ज़मीन है जो तीन या चार वर्षों तक खाली रहती है।

(घ) बंजर वह ज़मीन है जिस पर पाँच या उससे ज़्यादा वर्षों से खेती नहीं की गई हो।

(iii) मुझे नहीं लगता कि राजस्व का आकलन करने के लिए उपर्युक्त प्रणाली उचित थी। अकबर के शासन काल में प्रचलित कंकुत प्रणाली इससे बेहतर पद्धति थी। राजस्व का अनुमान मौके पर वास्तविक निरीक्षण के आधार पर लगाया जाता था और अनुमानित उपज का एक तिहाई राज्य की मांग के रूप में तय किया गया था।

2. पहाड़ी कबीलों और मैदानों के बीच व्यापार, लगभग 1595

अवध सूबे (आज के उत्तर प्रदेश का हिस्सा) के मैदानी इलाकों और पहाड़ी कबीलों के बीच होने वाले लेन-देन के बारे में अबुल फ़ज़्ल ने कुछ इस तरह लिखा है:

उत्तर के पहाड़ों इंसानों, मोटे-मोटे घोड़ों और बकरों की पीठ पर लादकर बेशुमार सामान ले जाए जाते हैं, जैसे कि सोना, ताँबा, शीशा, कस्तूरी, सुरागाय (याक) की पूँछ, शहद, चुक (संतरे के रस और नींबू के रस को साथ उबालकर बनाया जाने वाला एक अम्ल), अनार दाना, अदरख, लंबी मिर्च, मजीठ (जिससे लाल रंग बनाया जाता है) की जड़ें, सुहागा, जदवार (हल्दी जैसी एक जड़), मोम, ऊनी कपड़े, लकड़ी के सामान, चील, बाज़, काले बाज़, मर्लिन (बाज़ पक्षी की ही एक किस्म), और अन्य वस्तुएँ। इसके बदले, वे सफ़ेद और रंगीन कपड़े, कहरुबा (एक पीला-भूरा धातु जिससे गहने बनाए जाते थे), नमक, हींग, गहने और शीशे व मिट्टी के बरतन वापिस ले जाते हैं।

(i) यह परिच्छेद किस बारे में है? इस परिच्छेद में वर्णित परिवहन के साधन क्या हैं?

(ii) वे कौन से उत्पाद हैं जो उत्तरी पर्वतों से लिए गए थे?

(iii) उत्तरी पर्वतों के लोग अपने माल के बदले में क्या साथ ले जाते थे? अनुच्छेद में किन्हीं तीन उत्पादों के उपयोग का अनुमान लगाएं।

उत्तर: (i) इस अनुच्छेद में अबुल फजल पहाड़ी जनजातियों और अवध के सूबा (वर्तमान उत्तर प्रदेश का हिस्सा) के मैदानी इलाकों के बीच लेन-देन का वर्णन करता है। इस परिच्छेद में वर्णित परिवहन के साधन घोड़े और बकरे हैं।

(ii) उत्तरी पहाड़ों से सोना, तांबा, सीसा, कस्तूरी, सुरागाय (याक) की पूंछ, शहद, अनारदाना, अदरक, लंबी मिर्च, ऊनी सामान, लकड़ी के बर्तन, आदि ले जाते थे।

(iii) बदले में उत्तरी पर्वत के लोग सफेद और रंगीन कपड़े, कहरुबा, सॉल्ट, हींग, गहने, कांच और मिट्टी के बर्तन वापस ले गए।

आभूषण बनाने के लिए सोने का उपयोग किया गया होगा। तांबे का उपयोग बर्तन बनाने में किया होगा। खाना बनाने में अदरक एवं काली मिर्च का इस्तेमाल किया होगा।

मानचित्र आधारित प्रश्न

विभिन्न शासकों के अधीन मुगल साम्राज्य की सीमाएँ छायांकित करें।

(i) बाबर का शासन, 1530

(ii) अकबर का शासनकाल, 1605

(iii) औरंगजेब का शासनकाल, 1707

Ans

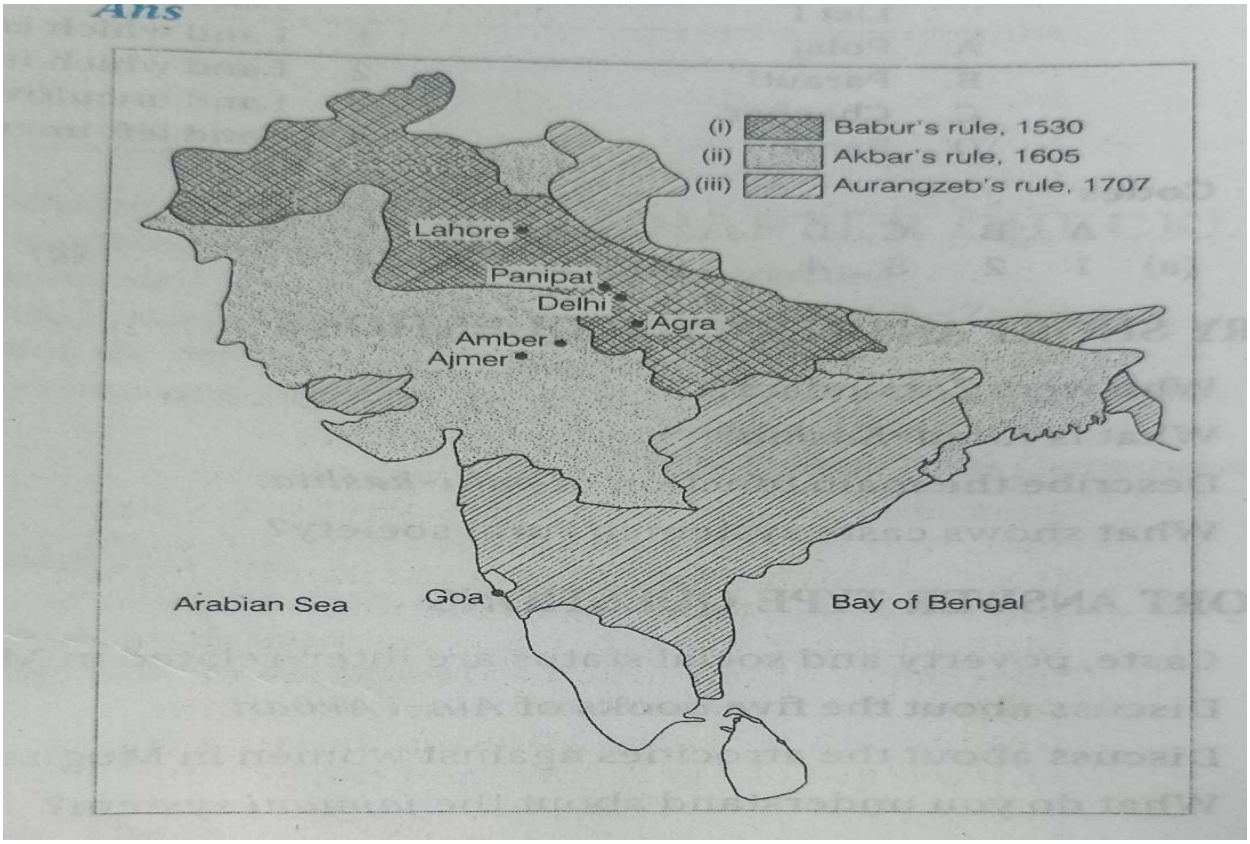

विषय-IX
उपनिवेशवाद और देहात

मुकेश कुमार साहू
स्ना. शि. (इतिहास) के.वि. नामकुम

Ø देहात के लोग Ø राजा Ø तालुकदार Ø जोतदार Ø रैयत Ø स्थानांतरित कृषक

• भारत में ब्रिटिश शासन सबसे पहले बंगाल में स्थापित हुआ। इंग्लैंड की ईस्ट इंडिया कंपनी ने ग्रामीण इलाकों में अपना नियंत्रण स्थापित किया और अपनी राजस्व नीतियां लागू कीं।

कर व्यवस्था:-

• बंगाल पर विजयी होने के बाद अंग्रेजों ने कर वसूलने की व्यवस्था बनाई ।

• अंग्रेजों के समयकाल में मुख्य रूप से तीन प्रकार की कर व्यवस्था प्रचलित थी:

(1) इस्तमरारी बंदोबस्त (जमींदारी व्यवस्था, स्थाई बंदोबस्त) (1793) :- बंगाल बिहार उड़ीसा उत्तर प्रदेश बनारस उत्तर कर्नाटक के लगभग भूभाग में के लगभग 19% भूभाग में स्थाई बंदोबस्त को लागू किया गया था।

(2) रैयतवाड़ी व्यवस्था (1792) :- यह व्यवस्था असम मद्रास मुंबई के प्रांतों में लागू किया गया था। जो औपनिवेशिक भारत के भूमि का 51% भाग था।

(3) महालवाड़ी व्यवस्था (1822) :- यह व्यवस्था उत्तर प्रदेश के मध्य प्रांत तथा पंजाब में लागू किया गया था। जो अपने औपनिवेशिक भारत की भूमि का 30% भाग था।

• हालाँकि अंग्रेजों को बंगालदीवानी का अधिकार 1765 में मिल गया। लेकिन उन्होंने 1790 के दशक तक राजस्व संग्रहण प्रणाली में कोई बदलाव नहीं किया।

• 1793 में गवर्नर जनरल कॉर्नवालिस द्वारा बंगाल में स्थायी बंदोबस्त की शुरुआत की गई थी। वह अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ब्रिटिश सेना के कमांडर भी थे।

• राज्य की राजस्व माँग निश्चित की गई।

• **सूर्यास्त कानून**: इसके अनुसार, यदि किसी दिन सूर्यास्त तक राज्य को राजस्व का भुगतान नहीं किया जाता था, तो जमींदारी को नीलाम कर दिया जाता था।

• गाँव की अर्थव्यवस्था पर संकट।

• जोतदारों का उदय, उनकी भूमि पर बटाईदारों के माध्यम से खेती की जाती थी।

• जमींदारों के विरोध के कारण उनकी जमीनें बार-बार नीलाम की गईं।

• पांचवीं रिपोर्ट- 1813 में ब्रिटिश संसद को सौंपी गई रिपोर्ट।

• कुदाल और हल - स्थानान्तरित कृषि, ग्रामीण अर्थव्यवस्था की महँगी।

• पहाड़िया - जंगलों से जुड़े शिकारी भोजन इकट्ठा करने वालों ने 1770 में बसे किसानों पर आक्रमण किया

• संथाल- बंगाल में बसे- खेती करते थे; उनके लिए सीमांकित भूमि को दामिन-ए-कोह के नाम से जाना जाता है।

• अस्थिर पहाड़ियाओं के साथ संघर्ष - 1850 - उन्होंने ब्रिटिशों का विरोध किया - संथालों का विद्रोह।

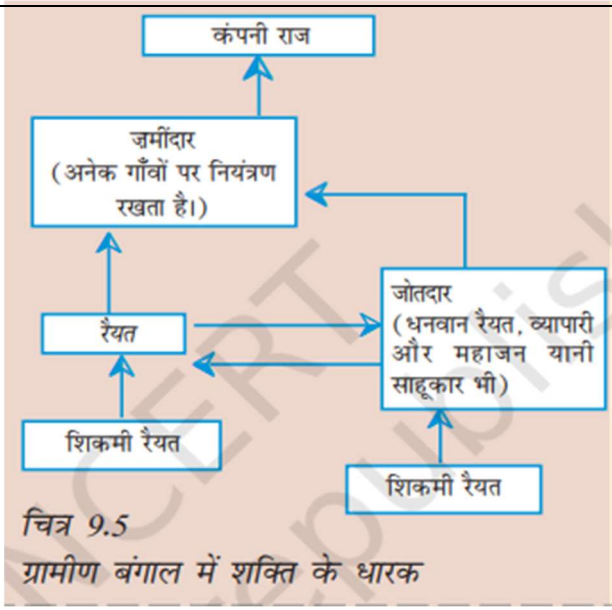

चित्र 9.5
ग्रामीण बंगाल में शक्ति के धारक

- ज़मींदार (क) कंपनी को राजस्व अदा करने के लिए, (ख) गाँवों पर राजस्व संबंधी माँग (जमा) निर्धारित करने के लिए जिम्मेदार थे।
- गाँव का प्रत्येक छोटा या बड़ा रैयत, ज़मींदार को लगान अदा करता था।
- *जोतदार अन्य रैयतों को उधार देते थे और अपनी उपज बेचते थे।*
- *रैयत कुछ ज़मीन खुद जोतते थे और बाकी ज़मीन शिकमी रैयत को लगान पर दे देते थे।*
- शिकमी रैयत, रैयतों को लगान देते थे।

अतिलघुत्तरीय प्रश्न (१ अंक)

1. राजमहल के पहाड़ियाओं का जीवन पूरी तरह से _____ पर निर्भर है

उत्तर: वन

2. चार्ल्स कॉर्नवालिस कौन थे?

उत्तर: बंगाल के गवर्नर-जनरल जब स्थायी बंदोबस्त पेश किया गया था।

3. स्थायी बंदोबस्त किसके द्वारा किया गया था?

उत्तर: बंगाल के गवर्नर-जनरल

4. ज़मींदारों द्वारा भुगतान की विफलता के निम्नलिखित में से कौन से कारण नही हैं?

(A) मांगें बहुत अधिक थीं।
(B) कृषि उत्पादों की कीमत कम थीं।
(C) राजस्व स्थायी था।
(D) मांगें बहुत कम थीं ।

उत्तर- (D) मांगें बहुत कम थीं ।

5. अढ़ीयार कौन थे?

उत्तर: बटाईदार

6. जब स्थायी बंदोबस्त लागू किया गया तो बर्दवान का राजा कौन था?

उत्तर: महाराजा मेहताब चंद (तेजचंद)

7. निम्नलिखित में से कौन राजमहल में पहाड़ियां लोगो के लिए खतरा बनकर उभरा?

उत्तर: संथाल

8. महुआ क्या है?

उत्तर: एक फल और एक पेड़

9. पहाड़िया लोग कौन थे?

उत्तर: शिकारी, स्थानान्तरी कृषक और चारकोल उत्पादक

10. सिद्धू मांझी कौन थे?

उत्तर: संथाल विद्रोह के नेता

11. "हर जगह वह गया। उन्होंने पत्थरों और चट्टानों और विभिन्न स्तरों और मिट्टी की परतों का जुनून से अवलोकन किया"- यहाँ किसका उल्लेख किया गया है?

(A) लॉर्ड क्लाइव (B)

(C) अलेक्जेंडर कनिंघम (D) लॉर्ड डलहौजी

उत्तर: बुकानन

12. निम्नलिखित घटनाओं पर विचार कीजिएः

1. स्थायी बंदोबस्त का लागु होना
2. अमेरिकी गृहयुद्ध
3. ब्रिटिश संसद में पांचवी रिपोर्ट
4. राजमहल के पहाड़ी इलाके में पहुंचे संथाल

इन घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम है:

उत्तर: 1, 4, 3, 2

13. ब्रिटिश संसद में पांचवीं रिपोर्ट कब पेश की गई थी?

उत्तर: 1813

14. दामिन-ए-कोह का गठन _____ के लिए किया गया था

(A) (B) पहाड़िया

(C) ब्रिटिश (D) जमींदारी

उत्तर: संथाल

15. 1862 तक अंग्रेजों के लिए _____ कपास का प्रमुख स्रोत था।

उत्तर: अमेरिका

16. निम्नलिखित विकल्पों पर विचार करें ओर सही कथन बताए |

i. पांचवीं रिपोर्ट ब्रिटिश संसद को 1813 ई. में प्रस्तुत की गई।

ii. जोतदार काफी शक्तिशाली थे।

iii. पहाड़ी लोगों के लिए संथाल एक बड़ा खतरा थे।

iv. बंगाल में किसी जमींदारी की नीलामी नहीं की गई।

उत्तर: i,ii,iii

17. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और सही कथन/कथनों की पहचान करे !

i. स्थायी बंदोबस्त 1793 ई. में शुरू किया गया था।

ii. जोतदार काफी शक्तिशाली थे।

iii. सभी जमींदारों ने अपना बकाया बहुत आसानी से चुका दिया।

iv. रैयत साहूकारों को कुटिल और धोखेबाज के रूप में देखने आए।

उत्तर: I, ii, iv

18. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

I. पूना विद्रोह बाजार केंद्र से संबंधित था।

II. पूना विद्रोह की शुरुआत 12 मई 1875 ई.को हुईं

उत्तर: I और II दोनों कथन सही हैं

19. निम्नलिखित चित्र को पहचान कर नाम लिखें!

उत्तर: सिधु मांझी

20. नीचे दिए गए चित्र को पहचानिए और उसका नाम लिखिए !

उत्तर: महाराजा महताब चंद

लघु-उत्तरात्मक प्रश्न (३ अंक)

Q.1 जोतदार के उदय के क्या कारण थे? इसके किन्हीं तीन कारणों का वर्णन कीजिए।

1.19वीं शताब्दी की शुरुआत तक जोतदार ने कभी-कभी कई हजार एकड़ भूमि के विशाल क्षेत्र का अधिग्रहण कर लिया था।

2.जब राजस्व भुगतान करने में विफलता के लिए जमींदारों की संपत्ति की नीलामी की जाती थी तो जोतदार अक्सर खरीदारों में शामिल होते थे।

3.जोतदार गाँव में स्थित थे और गरीब ग्रामीणों के एक बड़े हिस्से पर उनका सीधा नियंत्रण था।

4.उन्होंने स्थानीय व्यापार के साथ-साथ साहूकार को नियंत्रित किया और क्षेत्र के गरीब किसानों पर अत्यधिक शक्ति का प्रयोग किया।

Q2. जमींदारों ने अपनी जमींदारी को बचाने के लिए कौन से कदम उठाए?

1.काल्पनिक बिक्री ऐसी ही एक रणनीति थी। जमींदारों ने अपनी जमींदारी महिलाओं को हस्तांतरित कर दी, क्योंकि कंपनी ने वादा किया था कि वे महिलाओं की संपत्ति पर कब्जा नहीं करेंगे। उदाहरण के लिए, बर्दवान के

राजा ने अपनी जमींदारी अपनी मां को हस्तांतरित कर दी। नीलामियों में जमींदार के एजेंटों द्वारा हेराफेरी की गई थी।

2.नीलामी के समय जमींदार के आदमियों ने इसे खरीद लिया और अन्य खरीददारों की तुलना में जमींदार को वापस दे दिया। बाहरी खरीददारों पर जमींदारों की लाठियों ने हमला किया। उन्होंने महसूस किया कि वे वफादारी की भावना के कारण जमींदारी नियंत्रण का हिस्सा हैं।

3. वे जमींदारों को अधिकार और खुद को प्रोजा (विषय) मानते थे। इस प्रकार, बाहरी लोग उनके द्वारा खरीदी गई संपत्ति पर कब्जा करने में सक्षम नहीं थे।

Q.3.संथालों ने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह क्यों किया?

1-1832 तक संथाल दामिन-ए-कोह क्षेत्र में बस गए थे। उनकी बस्ती का तेजी से विस्तार हुआ। उन्हें समायोजित करने के लिए जंगलों को साफ किया गया था। अधिक से अधिक भू-राजस्व मिलने से कंपनी को भी लाभ हुआ। हालांकि, संथाल असंतुष्ट हो गए। उन्होंने ब्रिटिश शासन के खिलाफ विद्रोह कर दिया।संथाल कंपनी की कर व्यवस्था से खुश नहीं थे। वे सोचते थे कि भू-राजस्व की दरें ऊँची और शोषक थीं।

2-जमींदारों ने संथालों द्वारा खेती के तहत लाए गए क्षेत्रों पर अधिक नियंत्रण रखना शुरू कर दिया, जाहिर तौर पर यह ब्रिटिश नीति का एक हिस्सा था। लेकिन संथालों ने इसका विरोध किया।

3-ग्रामीण क्षेत्रों में साहूकारों को संथालों द्वारा कंपनी शासन के खलनायक और एजेंट के रूप में देखा जाता था। चूककर्ता के मामले में साहूकार संथालों की भूमि की नीलामी कर सकते थे। यह सब संथालों को रास नहीं आया।

4-अंग्रेजों ने बाद में संथालों को शांत करने के लिए कदम उठाए। संथाल परगना का एक अलग जिला बनाया गया था और संथालों की रक्षा के लिए कानून बनाया गया था

प्रश्न 4. बाहरीलोगोंकेआनेपरपहाड़ियोंकी प्रतिक्रियाक्या रही?

1.बाहरी लोगों और अंग्रेजों के कारण पहाड़िया और अन्य जनजातियों के बीच संघर्ष हुआ। पहाडियों के बसे हुए गांवों पर छापा मारा और खाद्यान्न और मवेशियों को लूट लिया।

2.वे बहुत गरीब हो गए और खेती को स्थानांतरित करने में लिप्त हो गए।

3.ब्रिटिश नीति क्रूर विनाश और उत्पीड़न वाली थी इसलिए ये लोग जंगल के आंतरिक भाग में चले गए।

4.जंगल की सफाई के बाद पहाड़िया शिकारियों और इकट्ठा करने वालों को भी समस्याओं का सामना करना पड़ा।

Q.5* ब्रिटिश सरकार के अधीन जमींदारों ने राजस्व के भुगतान में चूक क्यों की? कोई तीन बिंदु।**

या

किसानों से राजस्व वसूल करने में जमींदारों के सामने आने वाली कठिनाइयों की चर्चा कीजिए। कोई तीनबिंदु दीजिए।

1.कंपनी की प्रारंभिक मांगें बहुत अधिक थीं।जिसका भुगतान रैयतो द्वारा किया जाना मुश्किल था ।

2.1790 के दशक में कृषि उपज की कीमतों में गिरावट आई, इसलिए रैयत जमींदार को अपना बकाया भुगतान करने में असमर्थ थे।

3.रैयतों द्वारा भुगतान में देरी ताकि जमींदार किराया / राजस्व एकत्र न कर सके और कंपनी को भुगतान करने में असमर्थ हो,

Q.6. दामिन-ए-कोह क्या था? संथाल ने ब्रिटिश नीति का विरोध क्यों किया?

1. दामिन-ए-कोह -राजमहल की तलहटी के नीचे अंग्रेजों द्वारा संथालों को दिया गया सीमांकित भूमि का बड़ा क्षेत्र था। औपनिवेशिक सरकार ने उनकी जमीन पर भारी कर लगा रखा था।

2.साहूकार उच्च ब्याज दर वसूल कर उनकी जमीनें छीन रहे थे।

3.जमींदारों ने अपनी भूमि पर नियंत्रण का दावा किया।

Q7*. पांचवीं रिपोर्ट क्या थी?

1.ब्रिटिश संसद को प्रस्तुत करने के लिए तैयार एक रिपोर्ट। ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रशासन और गतिविधियों पर एक रिपोर्ट। यह रिपोर्ट 1002पृष्ठ की थी।

2. इसे 1813 में ब्रिटिश संसद में प्रस्तुत किया गया था।

3.रिपोर्ट के 800 पृष्ठ परिशिष्ट थे जो जमींदारों और रैयतों की याचिकाओं, विभिन्न जिलों के कलेक्टरों की रिपोर्ट, राजस्व रिटर्न पर सांख्यिकीय तालिकाएं और राजस्व पर नोट्स और बंगाल और मद्रास के न्यायिक प्रशासन को पुन: प्रस्तुत करते थे।

Q8. पहाडियों ने मैदानी इलाकों पर नियमित रूप से हमला क्यों किया?

1.पहाडियों के लिए धावे आवश्यक थे क्योंकि इनकी जीविका धावे में मिली लुट की सामग्री पर निर्भर थी।

2. मैदानी इलाकों में जमींदार, तालुकदार एवं व्यापारी उन्हें नियमित रूप से भेंट अदा करते थे जो व्यापारियों द्वारा उनके नियंत्रण में आने वाले रास्ते से गुजरने के लिए टोल टैक्स के रूप में होता था।

3.यदि वे कर का भुगतान करते हैं तो पहाड़िया प्रमुख उनकी रक्षा करते हैं और उनके लोग रास्ते में माल लूटा नहीं करते हैं।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (८ अंक)

प्रश्न 1. राजस्व संग्रह में जमींदारों के सामने आने वाली कठिनाइयों को परिभाषित करें / जमींदारों ने भुगतान में चूक क्यों की?

*शुरुआती माँगें बहुत अधिक थीं।

*1790 के दशक में कृषि उपज की कीमतों में गिरावट आई, इसलिए रैयत जमींदार को अपना बकाया भुगतान करने में असमर्थ थे।

* रैयतों द्वारा भुगतान में देरी इसलिए जमींदार किराया/राजस्व एकत्र नहीं कर सके और कंपनी का भुगतान करने में असमर्थ थे।

* फसल की परवाह किए बिना राजस्व अपरिवर्तनीय था, और समय पर भुगतान करना पड़ता था।

*वास्तव में, सूर्यास्त कानून के अनुसार, यदि निर्दिष्ट तिथि के सूर्यास्त तक भुगतान नहीं आया, तो जमींदारी की नीलामी की जा सकती थी।

* ईस्ट इंडिया कंपनी जमींदारों के अधिकार और स्वायत्तता को नियंत्रित करती है - स्थायी बंदोबस्त ने शुरू में जमींदार की शक्ति को रैयत से लगान लेने और अपनी जमींदारी का प्रबंधन करने के लिए सीमित कर दिया था।

प्रश्न 2. रैयतवाड़ी बंदोबस्त स्थायी बंदोबस्त से किस प्रकार भिन्न था?

उत्तर-**स्थायी बंदोबस्त**

यह 1793 में बंगाल में चार्ल्स कॉर्नवालिस द्वारा पेश किया गया था। बंगाल के जमींदारों (पहले के राजाओं और तालुकदारों) के साथ राजस्व / स्थायी रूप से तय किया गया था और इसे भविष्य में नहीं बदला जा सकता था। जमींदार गाँव का जमींदार नहीं था, बल्कि राज्य का राजस्व संग्रहकर्ता था। उन्हें कंपनी को निश्चित राजस्व मांग का भुगतान करना पड़ता था और अतिरिक्त को अपनी आय के रूप में रखना पड़ता था। यदि वह राशि का भुगतान करने में विफल रहता है तो उसकी संपत्ति की नीलामी की जानी थी।

रैयतवाड़ी व्यवस्था

इसे थॉमस मुनरो द्वारा 1820 में बॉम्बे, मद्रास, असम और बर्मा में पेश किया गया था। राजस्व स्थायी रूप से तय नहीं किया गया था और भविष्य में राजस्व दरों में वृद्धि की गई थी। रैयतवाड़ी बंदोबस्त सीधे रैयतों यानी वास्तविक

काश्तकारों के साथ किया गया था। उन्हें कंपनी को राजस्व मांग का भुगतान करना था। रैयतवाड़ी व्यवस्था की राजस्व दर 50% सूखी भूमि और 60% सिंचित भूमि में थी

प्रश्न 3. पहाडियां लोगों की आजीविका संथालों की आजीविका से किस प्रकार भिन्न थी?

1. पहाड़िया झूम खेती करते थे और वन उत्पादन पर जीवन यापन करते थे। संथाल बसे हुए थे तथा स्थायी रूप से खेती करते थे।

2. पहाडियों की खेती कुदाल पर निर्भर थी। संथाल हल का प्रयोग करते थे।
3. कृषि के अलावा वन उत्पाद भी पहाडियों की आजीविका का साधन थे तथा घुमंतू जीवन व्यतीत करते थे । जबकि संथालों ने गतिशीलता का जीवन छोड़ दिया और स्थायी रूप से खेती करते थे।
4. पहाड़िया अपने व्यवसायों के कारण जंगल से घनिष्ठ रूप से संबंधित थे। संथाल एक विशिष्ट क्षेत्र में बसे थे।
5. पहाड़िया नियमित रूप से भोजन, शक्ति प्रदर्शन एवं और लूट की सामग्री के लिए मैदानी इलाकों में छापेमारी करते थे। संथालों के अंग्रेजों, साहूकारों और व्यापारियों के साथ मैत्रीपूर्ण संबंध थे।
6. पहाड़िया वन की उपज को बाजार में बेचने के लिए इकट्ठा करना पसंद करते थे लेकिन संथालों को यह पसंद नहीं था।

प्रश्न 4*. बुकानन का विवरण विस्तार से दीजिए। ईस्ट इंडिया कंपनी ने उन्हें सर्वेक्षक के रूप में क्यों नियुक्त किया? इसे समझाओ।**

उत्तर (i) बुकानन ईस्ट इंडिया कंपनी के कर्मचारी थे और उन्होंने हर जगह ड्राफ्टमैन, सर्वेक्षकों के साथ मार्च किया।

(ii) बुकानन के पास विशिष्ट निर्देश थे कि उसे क्या देखना है और कंपनी की जरूरत के अनुसार क्या रिकॉर्ड करना है क्योंकि कंपनी भारतीय संसाधनों का दोहन करना चाहती थी।

(iii) बुकानन असाधारण पर्यवेक्षक थे। उन्होंने खनिजों, लोहा, अभ्रक ग्रेनाइट और साल्टपीटर के लिए खोजे गए पत्थरों और चट्टानों, विभिन्न स्तरों और मिट्टी की परतों का अवलोकन किया।

(iv) बुकानन ने लिखा कि कैसे भूमि को रूपांतरित और अधिक उत्पादक बनाया जा सकता है।

(v) कौन से शिल्प की खेती की जा सकती है, कौन से पेड़ काटे गए और कौन से उगाए गए।

(vi) बुकानन की दृष्टि और प्राथमिकताएं स्थानीय निवासियों से अलग थीं, उनका मूल्यांकन कंपनी के संबंधित वाणिज्यिक द्वारा निर्धारित किया गया था।

(vii) वह अनिवार्य रूप से वनवासियों की जीवन शैली के आलोचक थे और उन्हें लगता था कि वन भूमि को कृषि भूमि में बदल दिया जाना चाहिए। उन्होंने संथाल की जीवन शैली की जानकारी दी।

(viii) कंपनी अपनी शक्ति को समेकित करना चाहती थी और प्राकृतिक संसाधनों द्वारा अपने वाणिज्य का विस्तार करना चाहती थी जिसे वह नियंत्रित कर सकता था। इसलिए कंपनी ने बुकानन को राजमहल पहाड़ियों में भारत के प्राकृतिक संसाधनों का सर्वेक्षण करने के लिए नियुक्त किया।

स्रोत आधारित प्रश्न

प्रश्न * दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें

1. पांचवी रिपोर्ट

जमींदारों की स्थिति और भूमि की नीलामी का उल्लेख करते हुए, पांचवीं रिपोर्ट में कहा गया है: राजस्व की वसूली समय की पाबंदी के साथ नहीं हुई थी, और भूमि काफी हद तक नीलामी द्वारा बिक्री के लिए समय-समय पर उजागर हुई थी। मूल वर्ष 1203 में, 1796-97 के अनुरूप, बिक्री के लिए विज्ञापित भूमि ने जुम्मा या सिकका

का मूल्यांकन 28,70,061 रुपये, वास्तव में बेची गई भूमि की मात्रा एक जुम्मा या 14.18,756 का आकलन, और खरीद की राशि को समझा। पैसा सिक्का 17.90,416 रुपये। 1204 में। 1797-98 के अनुरूप, भूमि का 26,66,191 रुपये में सिक्का बेचा गया था, बेची गई मात्रा 22.74.076 रुपये के लिए थी, और खरीद राशि 21.47.580 रुपये थी। डिफॉल्टरों में देश के कुछ सबसे पुराने परिवार थे। ऐसे थे नदिया राजशाही विशनपुर (बंगाल के सभी जिलों) के राजा, और अन्य, जिनकी सम्पदा के प्रत्येक अगले वर्ष के अंत में, उन्हें गरीबी और बर्बादी का खतरा था, और कुछ मामलों में राजस्व अधिकारियों को कठिनाइयों का सामना करना पड़ा , सार्वजनिक मूल्यांकन की राशि को कम से कम संरक्षित करने के उनके प्रयासों में

1.पांचवीं रिपोर्ट क्या थी?

एवं: पांचवीं रिपोर्ट ईस्ट इंडिया कंपनी की प्रशासनिक गतिविधियों के बारे में 1813 में ब्रिटिश संसद को प्रस्तुत की गई थी

2. वे तीन राज्य कौन से थे जहां प्रत्येक वर्ष के अंत में किसकी सम्पदा का विखंडन होता था?

उत्तर: ये नुड्डिया, राजेशाय, बिशनपुर (बंगाल के सभी जिले) और अन्य के राजा थे, जिनकी संपत्ति का प्रत्येक वर्ष के अंत में खंडन किया गया था।

3.रिपोर्ट ने हमें क्या बताया?**

उत्तर, यह रिपोर्ट यह कहने की कोशिश कर रही है कि जमींदार ने नकली नीलामी का शिकार बना लिया था और बहुत कम दर पर जमीन खरीदी थी। अंतत: पुराने मालिक ने बहुत सस्ते दामों पर जमीन खरीद ली।

प्रश्न दिए गए गद्यांश को ध्यान से पढ़ें और नीचे दिए गए प्रश्नों का उत्तर दें

वनों की बंटाई और स्थायी कृषि के बारे में

राजमहल की निचली पहाड़ियों के एक गांव से गुजरते हुए। बुकानन ने लिखा: देश का दृश्य बहुत अच्छा है, खेती, विशेष रूप से सभी दिशाओं में घुमावदार चावल की संकीर्ण घाटियां, बिखरे हुए पेड़ों के साथ साफ भूमि, और चट्टानी पहाड़ियां पूर्णता में हैं: जो कुछ चाहिए वह प्रगति की कुछ उपस्थिति है क्षेत्र में और एक व्यापक रूप से विस्तारित और बेहतर खेती, जिसके लिए देश अतिसंवेदनशील है। टेसर (तसर रेशम के कीड़ों) और लाख के लिए आसन और पलास के वृक्षारोपण को लकड़ियों के स्थान पर उस हद तक कब्जा करना चाहिए जितना कि मांग स्वीकार करेगी ; जंगलको पूरी तरह से साफ किया जा सकता है, और बड़े हिस्से की खेती की जाती है, जबकि जो इस उद्देश्य के लिए उपयुक्त नहीं है, वह प्लामिरा (पालमायरा) और मोवा (महुआ) को पाल सकता है।

(i) बुकानन के इस विचार का उल्लेख कीजिए कि कैसे राजमहल की पहाड़ियों की भूमि को अधिक उत्पादक बनाया जा सकता है।

उत्तर- टेसर (तसर रेशम के कीड़े) और लाख के लिए आसन और पलास के वृक्षारोपण; जबकि जो इस उद्देश्य के लिए उपयुक्त नहीं है, वह प्लामिरा (पालमायरा) और मोवा (महुआ) को उपयोग सकता है।

(ii) विकास पर बुकानन की दृष्टि और प्राथमिकताएँ स्थानीय निवासियों से किस प्रकार भिन्न थीं? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- बुकानन का मूल्यांकन कंपनी के वाणिज्यिक सरोकारों और आधुनिक पश्चिमी धारणाओं पर आधारित था। वे अनिवार्य रूप से वनवासियों की जीवन शैली के आलोचक थे और उनका मानना था कि वनों को कृषि भूमि में बदलना होगा जबकि पहाड़िया अपना परंपरागत जीवन जीना चाहते थे।

(iii) बताएं कि राजमहल पहाड़ियों के निवासी बुकानन के उत्पादन के विचारों के बारे में कैसा महसूस करते थे।

उत्तर-शांति अभियानों के अनुभव और क्रूर दमन की यादों ने राजमहल क्षेत्र में ब्रिटिश घुसपैठ की धारणा को आकार दिया। प्रत्येक श्वेत व्यक्ति एक ऐसी शक्ति का प्रतिनिधित्व करता दिखाई दिया जो उनके जीवन के तरीके और जीवित रहने के साधनों को नष्ट कर रही थी, उनके जंगलों और भूमि पर उनका नियंत्रण छीन रही थी। लोग शत्रुतापूर्ण थे, अधिकारियों से आशंकित थे और उनसे बात करने को तैयार नहीं थे। कई मामलों में वे अपने गांव छोड़कर फरार हो गए थे।

विद्रोही और राज

संजय प्रसाद
स्ना. शि. (इतिहास) के. वि.
हजारीबाग

संक्षेप में प्रमुख अवधारणाएं:

- 1857 के विद्रोह की शुरुआत मेरठ छावनी में सिपाहियों के द्वारा नई राइफल के प्रयोग से मना करने पर हुए विद्रोह के साथ हुई। उन्हें शक था कि नई राइफल में सूअर और गाय की चर्बी भरी हुई है।
- 10 मई 1857 को मेरठ छावनी के सिपाहियों ने ब्रिटिश अधिकारियों को मार डाला और हथियारों की घंटी जब्त कर राजकोष लूट लिया। उन्होंने सरकारी भवनों–जेल, कोर्ट, पोस्ट ऑफिस, टेलीग्राफ ऑफिस, बंगलों, कोषागार आदि पर हमला किया।
- फिर उन्होंने दिल्ली की ओर कूच किया और मुगल सम्राट बहादुर शाह द्वितीय से विद्रोह का नेतृत्व स्वीकार करने की अपील की। कोई अन्य विकल्प न पाकर उसने सिपाहियों की मांग को स्वीकार कर लिया। इस प्रकार विद्रोह ने एक प्रकार की वैधता प्राप्त कर ली क्योंकि इसे मुगल बादशाह के नाम पर चलाया जा सकता था।
- उसके बाद यह छावनी दर छावनी और फिर विभिन्न शहरों में फैल गया।

विद्रोही और राज – 1857 का विद्रोह और उसका ढर्रा – जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लोग विद्रोह में कूद पड़े – अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों के प्रति उनकी नफरत के कारण, विद्रोह के केंद्र – लखनऊ, कानपुर, बरेली, मेरठ , बिहार में आरा।

नेता – झांसी की रानी लक्ष्मी बाई, नाना साहब, कुंवर सिंह, बक्त खान, बेगम हजरत महल, तात्या टोपे।

अवध में विद्रोह – डलहौजी की विलय नीति – 1856। अवध के तालुकदारों को बेदखल करना , अवध के नवाब वाजिद अली शाह के साथ किए गए अन्याय ने लोगों को परेशान किया।

सिपाहियों का विद्रोह : 1) अंग्रेजों की सामाजिक श्रेष्ठता की नीति

2) धार्मिक मामलों में दखल – चर्बी वाले कारतूसों का मामला।

एकता की दृष्टि : 1) हिन्दू मुस्लिम एकता

वैकल्पिक शक्तियों की खोज: विद्रोहियों ने ब्रिटिश सत्ता के केंद्रों पर कब्जा करने के बाद दिल्ली, लखनऊ, कानपुर में समानांतर प्रशासन की स्थापना की। बाद में वे असफल हो गए।

दमन – 1857 - अंग्रेजों के लंबे समय तक हमले के लिए उत्तर भारत को सख्त कानून के तहत लाया गया, दिल्ली को वापस पाने के लिए दोतरफा हमला – एक कलकत्ता से उत्तर भारत तक, दूसरा पंजाब से दिल्ली की तरफ। 27000 मुसलमानों को फांसी दी गई।

विद्रोह की छवि – ब्रिटिश और भारतीयों द्वारा निर्मित चित्र – पोस्टर और कार्टून।

आतंक का प्रदर्शन: 1) विद्रोहियों द्वारा राष्ट्रवादी कल्पनाएँ: 1) राष्ट्रवादियों के लिए प्रेरणा

स्वतंत्रता के प्रथम युद्ध के रूप में उत्सव – नेताओं को वीर व्यक्तियों के रूप में दर्शाया गया है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (1MARK)

प्रश्न 1. सहायक संधि की शुरुआत किसने की?

उत्तर. सहायक संधि की शुरुआत लॉर्ड वेलेस्ली ने की।

प्रश्न 2. 1857 के विद्रोह के दो सैन्य कारण बताइए?

उत्तर. (1) ब्रिटिश अधिकारियों में श्रेष्ठता की भावना। (2) चर्बीयुक्त कारतूस।

प्रश्न 3. सही विकल्प का चयन करें: I. सहायक संधि द्वारा अंग्रेज अपने सहयोगी की बाहरी और आंतरिक चुनौतियों से रक्षा करेंगे,

II. सहयोगी पक्ष न तो किसी और शासक के साथ संधि कर सकेगा और न ही अंग्रेजों की अनुमति के बिना किसी युद्ध में हिस्सा लेगा।

A. I और II सत्य हैं. B. I सत्य है लेकिन II गलत है

C. I गलत है लेकिन II सत्य है D. I और II दोनों असत्य हैं

उत्तर. (A)

प्रश्न 4. 1857 के विद्रोह के दो आर्थिक कारण बताइए?

उत्तर. . (1) अंग्रेजों और साहूकारों द्वारा किसानों का शोषण किया जाता था। (2) कारीगर बेरोजगार हो गए थे।

प्रश्न 5. विलय या हड़प की नीति क्या थी?

उत्तर प्राकृतिक पुरुष उत्तराधिकारी के बिना देशी राज्यों को जबरदस्ती ब्रिटिश साम्राज्य का हिस्सा बना दिया जाता था।

प्रश्न 6. विद्रोह के कौन से चार केंद्र अंग्रेजों के खिलाफ अधिक आक्रामक थे?

उत्तर दिल्ली, लखनऊ, कानपुर, झांसी, ग्वालियर।

प्रश्न 7. सही विकल्प का चयन करें: 1. बिरजिस क़द्र नवाब सिराजुद्दौला के छोटे बेटे थे।

2. वाजिद अली शाह अवध के नवाब थे।

A. I और II सत्य हैं. B. I सत्य है लेकिन II गलत है

C. I गलत है लेकिन II सत्य है D. I और II दोनों असत्य हैं

उत्तर. (A)

प्रश्न 8. कानपुर में भारतीय विद्रोहियों के खिलाफ किस अंग्रेज महिला ने बहादुरी से अपना बचाव किया?

उत्तर मिस व्हीलर ने कानपुर में भारतीय विद्रोहियों के खिलाफ बहादुरी से अपना बचाव किया।

प्रश्न 9. अवध का अंतिम नवाब कौन था? उन्हें पेंशन पर कहाँ भेजा गया था?

उत्तर वाजिद अली शाह अवध के अंतिम नवाब थे। उन्हें पेंशन पर कलकत्ता भेजा गया था।

प्रश्न. 10. लोक सेवक ब्रिटिश सरकार से असंतुष्ट क्यों थे? 2

उत्तर ब्रिटिश सरकार के अधीन, नागरिक और सैन्य सेवा में कार्यरत मूल निवासियों का कोई सम्मान नहीं था। उनका वेतन कम था और उनके पास कोई शक्ति या प्रभाव नहीं था।

लघु-उत्तरीय प्रश्न (3 अंक)

प्रश्न 1. विद्रोह को नेतृत्व प्रदान करने के लिए कई जगहों पर विद्रोही सिपाहियों ने पूर्ववर्ती शासकों की ओर रुख क्यों किया?

उत्तर: I. देशी शासक लोगों के स्वाभाविक नेता थे।

ii उनका मानना था कि हिंदू मुस्लिम एकता अनिवार्य है।

III. वे पूर्व-ब्रिटिश दुनिया को बहाल करना चाहते थे।

iv. दिल्ली मुगल भारत की राजधानी थी और अंतिम मुगल सम्राट वहां था इसलिए विद्रोहियों ने उनसे मुख्य नेतृत्व के लिए अनुरोध किया।

V. अधिकतर, राजाओं को नेतृत्व और संगठन का अनुभव था।

प्रश्न 2. विद्रोहियों के बीच एकता सुनिश्चित करने के लिए क्या उपाय किए गए?

उत्तर।

I. हिंदू और मुस्लिम दोनों ने बहादुर शाह से नेतृत्व का अनुरोध किया।

II. विद्रोह के दौरान जारी घोषणाओं ने सभी वर्गों से समान रूप से अपील की।

III. दोनों समुदायों की भावनाओं का सम्मान किया जाता था।
IV. इश्तहारों में अंग्रेजों से पहले के हिन्दू-मुस्लिम एकता का महिमामंडन किया गया।
V. हिंदू और मुसलमान समान रूप से सैन्य कमांडिंग कमेटी के सदस्य थे।
प्रश्न 3. विद्रोह को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने क्या कदम उठाए?
उत्तर: I. पूरे उत्तर भारत में मार्शल लॉ लागू किया गया।
II.. सभी अंग्रेजों को भारतीयों को दंडित करने का अधिकार दे दिया गया।
III. कानून और मुकदमे की सामान्य प्रक्रिया को समाप्त कर दिया गया।
IV. ब्रिटिश सेना ने कई तरफ से मदद की।
V. कई देशी राज्यों ने विद्रोहियों के खिलाफ सहायता की।
VI. विद्रोहियों को क्रूरता से दंडित किया गया।
प्रश्न 4. चर्चा कीजिए कि किस हद तक धार्मिक विश्वासों ने 1857 के विद्रोह को आकार दिया।
उत्तर: I. आम भारतीय समानता पर आधारित नई शिक्षा प्रणाली को पसंद नहीं करते थे।
II. मिशनरी स्कूलों में बाइबल का अध्ययन अनिवार्य था।
III. जेलों में ईसाई धर्म आम था।
IV. एक कानून पारित किया गया था जिसने धर्मांतरित ईसाई को अपनी पुश्तैनी संपत्ति में हक पाने का अधिकार दिया गया।
VI. सरकार ने पुरानी बंदूकों को नई राइफलों से बदलने का फैसला किया।
इन कार्यों से आम भारतीयों को लगा कि उनके धर्म एवं संस्कृति को समाप्त किया जा रहा है। इससे विद्रोह को सामाजिक आधार विस्तृत हुआ।
प्रश्न 5. उन साक्ष्यों की चर्चा कीजिए जो विद्रोहियों के बीच योजना और समन्वय का संकेत देते हैं।
उत्तर: I. अधिकतर छावनी सैनिक विद्रोह कर रहे थे।
II. विद्रोहियों ने मेरठ में विद्रोह करने के बाद तुरंत दिल्ली के लिए प्रस्थान किया। वे मुगल सम्राट का समर्थन चाहते थे।
III. सन्देशवाहक समाचारों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने का कार्य करते थे।
iv रात में स्थानीय अधिकारियों की पंचायतें बुलाई जाती थी और सामूहिक निर्णय लिए जाते थे।
v. चपाती एक जगह से दूसरी जगह भेजना आम बात थी।
vi. नया प्रशासन स्थापित किया गया था।
प्रश्न 6. 1857 के विद्रोह की ताकत और कमजोरियां क्या थीं?
उत्तर: ताकत
I. हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच पूर्ण सहयोग,
ii. आम लोग भी बगावत कर रहे थे,
III. सभी विद्रोही स्वतंत्रता चाहते थे।
कमजोरी-
I. विद्रोह सभी क्षेत्रों में फैलने में विफल रहा,
ii. सभी समुदायों ने समर्थन नहीं किया,
III. कई शासक अंग्रेजों के समर्थक थे,
iv. विद्रोही नेता एक दूसरे के प्रति शंकालु और ईर्ष्यालु थे,

V. विद्रोही सैनिक अच्छी तरह से सुसज्जित नहीं थे।

प्रश्न 7. क्या आप मानते हैं कि विद्रोह सुनियोजित और समन्वित था? तर्क दीजिए।

उत्तर: i. ऐसे प्रश्न का उत्तर देना बहुत कठिन है। हालांकि, कुछ घटनाएं संकेत देती हैं कि विद्रोह कैसे आयोजित किए गए थे।

ii. उदाहरण के लिए, जब अवध मिलिट्री पुलिस ने कैप्टन हार्से को मारने से इनकार कर दिया, तो यह तय किया गया कि प्रत्येक रेजिमेंट से चुने गए भारतीय अधिकारियों से बनी एक पंचायत द्वारा मामला सुलझाया जाएगा।

iii. विद्रोह के बारे में लिखने वाले चार्ल्स बॉल ने बताया कि ये पंचायतें रात को कानपुर सिपाही लाइनों में जुटती थी और सामूहिक रूप से निर्णय लिए जाते थे।

iv. सिपाही लाइनों में रहते थे और एक सामान्य जीवन शैली साझा करते थे और उनमें से कई एक ही जाति से आते थे, इसलिए, यह कहना मुश्किल नहीं है कि उन्होंने विद्रोह की योजना बनाई हो।

प्रश्न 8. सहायक संधि के बारे में आप क्या जानते हैं ?

उत्तर: सहायक संधि लॉर्ड वेलेस्ली द्वारा 1798 में तैयार की गई एक व्यवस्था थी। अंग्रेजों के साथ यह संधि करने वालों को कुछ शर्तें माननी पड़ती थीं। मसलन :

(क) अंग्रेज अपने सहयोगी की बाहरी और आंतरिक चुनौतियों से रक्षा करेंगे,

(ख) सहयोगी पक्ष के भूक्षेत्र में एक ब्रिटिश सैनिक टुकड़ी तैनात रहेगी;

(ग) सहयोगी पक्ष को इस टुकड़ी के रख-रखाव की व्यवस्था करनी होगी; तथा

(घ) सहयोगी पक्ष न तो किसी और शासक के साथ संधि कर सकेगा और न ही अंग्रेजों की अनुमति के बिना किसी युद्ध में हिस्सा लेगा ।

प्रश्न 9. अवध के विलय के बारे में आप क्या जानते हैं? इसके प्रभाव क्या थे?

उत्तर: डलहौजी ने अवध राज्य को "एक चेरी जो एक दिन हमारे मुंह में गिर जाएगी" के रूप में वर्णित किया। अवध का विलय विभिन्न चरणों में हुआ:

i. 1801 में अवध पर सहायक संधि लागू किया गया। इससे नवाब ने अपना नियंत्रण खो दिया और अंग्रेजों पर निर्भर हो गए। लेकिन यह पर्याप्त नहीं था क्योंकि अवध की मिट्टी नील और कपास उगाने के लिए अच्छी थी और व्यापार के लिए आदर्श भौगोलिक स्थिति थी। इसलिए, वे इस क्षेत्र का अधिग्रहण करने के इच्छुक थे।

ii. अंत में, लॉर्ड डलहौजी द्वारा 1856 में कुप्रशासन के आधार पर इसे अंग्रेजी राज में मिला लिया गया और नवाब वाजिद अली शाह को गद्दी से उतार दिया गया।

iii. नवाब वाजिद अली शाह को विस्थापित कर कलकत्ता निर्वासित कर दिया गया। उन्होंने आरोप लगाया कि नवाब शासन करने में सक्षम नहीं है। उनके तख्तापलट पर व्यापक भावनात्मक उथल-पुथल हुई। समकालीन लेखकों ने लिखा कि "जीवन शरीर से बाहर चला गया था, और इस शहर का शरीर बेजान हो गया था . . ." लोक गीत ने शोक व्यक्त किया कि "अंग्रेज आए और देश ले गए"। वह प्रजा में काफ़ी लोकप्रिय थे । इसलिये उनकी प्रजा उनके पीछे-पीछे कानपुर तक विलाप के गीत गाती रही।

iv. नवाब के विस्थापन के बाद अवध में ब्रिटिश राज की स्थापना हुई। इसने संगीतकारों, नर्तकियों, कवियों, कारीगरों, रसोइयों, अनुचरों, प्रशासनिक अधिकारियों, आदि जैसे लोगों की आजीविका पर बहुत प्रभाव डाला। तालुकदारों, किसानों, सिपाहियों पर प्रभाव पड़े।

प्रश्न 10. उन साक्ष्यों के बारे में लिखिए जो विद्रोहियों द्वारा एकता की दृष्टि को दर्शाते हैं।

उत्तर : I. उद्घोषणाओं और इश्तहारों (अधिसूचनाओं) में एकता की दृष्टि स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थी जो विद्रोही नेताओं द्वारा जारी की गई थी। उदाहरण के लिए, 25 अगस्त 1857 की आजमगढ़ उद्घोषणा।

II. विद्रोहियों ने पूर्व-ब्रिटिश हिंदू मुस्लिम एकता की यादों को पेश करके अपनी जाति और पंथ के बावजूद समाज के सभी वर्गों का समर्थन पाने की कोशिश की। बहादुर शाह द्वारा जारी उद्घोषणा ने लोगों से मुहम्मद और महावीर दोनों की दुहाई देते हुए लड़ाई में शामिल होने की अपील की।

iii. अंग्रेजों ने उनके बीच एक दरार पैदा करने का प्रयास किया लेकिन विद्रोहियों पर इसका कोई असर नहीं हुआ । विद्रोहियों ने घोषणा की कि ब्रिटिश नीतियों ने जमींदारों, किसानों, बुनकरों, कारीगरों, भारतीय सिपाहियों को बेदखल कर दिया। इसलिए हमें ब्रिटिश शासन से जुड़ी हर बात को खारिज कर देना चाहिए। घोषणाओं ने व्यापक भय व्यक्त किया कि अंग्रेज़ हिन्दुओं और मुसलमानों के जाति और धर्म को नष्ट करने पर तुले हैं और वे उन्हें ईसाई बनाना चाहते हैं।

iv. उन्होंने अपने द्वारा किए गए अनुबंधों और उनके द्वारा तोड़ी गई संधियों के लिए अंग्रेजों की निंदा की। वे ब्रिटिश पूर्व जीवन को बहाल करना चाहते थे जहां सबकी आजीविका सुरक्षित हो।

प्रश्न 11. 1857 के विद्रोह को कुचलने के लिए अंग्रेजों ने क्या कदम उठाए?

उत्तर:

I. विद्रोह 10 मई 1857 को शुरू हुआ लेकिन जल्द ही यह पूरे उत्तर भारत में फैल गया और कई शहरों को विद्रोहियों ने जीत लिया। इन क्षेत्रों को लंबी लड़ाई के बाद मार्च 1858 में ही नियंत्रण में लाया गया था।

II. विद्रोह को दबाने के लिए उन्होंने कई नए नियम पारित किए।

iii. अंग्रेजों ने विद्रोह को कुचलने में मदद करने के लिए कई कानून पारित किए। लगभग पूरे उत्तर भारत में मार्शल लॉ लगा दिया गया था।

iv. विद्रोह के संदेह में भारतीयों को दंडित करने के लिए सैन्य अधिकारियों और यहां तक कि सामान्य अंग्रेजों को भी अतिरिक्त शक्तियां दी गई थी।

v. कानून और मुकदमे की प्रक्रियाओं को निलंबित कर दिया गया और यह घोषित किया गया कि विद्रोह के लिए केवल एक ही सजा होगी-मृत्यु।

vi. अंग्रेजों ने सैन्य शक्ति का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया। लेकिन यह एकमात्र उपकरण नहीं था जिसका उन्होंने उपयोग किया था।

vii. अंग्रेजों ने अंग्रेजों को समर्थन देने वाले बड़े जमींदारों को उनकी संपत्ति वापस देने का वादा करके विद्रोहियों की एकता को तोड़ने की कोशिश की। विद्रोही जमींदारों को बेदखल कर दिया गया और वफादार को पुरस्कृत किया गया।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक)

प्रश्न 1. 1857 के विद्रोह के बारे में अफवाहें और भविष्यवाणियां क्या थीं?

उत्तर: I. अफवाहों और भविष्यवाणियों ने विद्रोही में लोगों को शामिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1857 के दौरान उत्तर भारत में कई अफवाहें और भविष्यवाणियां फैलीं।

II. एक अफवाह थी कि नए कारतूस गायों और सूअरों की चर्बी से भरे हुए थे जो उनके हिंदू और मुस्लिम धर्म को प्रदूषित करेंगे।

iii. यह भी अफवाह थी कि अंग्रेजों ने गाय और सूअर की हड्डियों का चूरा को आटे में मिलाकर भारतीयों के धर्म को नष्ट करने की कोशिश की है, जिससे लोग आटे को छूने से बचने लगे।

iv. यह भी कहा गया कि उत्तर भारत में गाँव-गाँव में चपातियाँ बाँटी जा रही थीं जो अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह की तैयारी का प्रतीक थी।

vi. ब्रिटिश शासन के बारे में यह भविष्यवाणी की गयी थी कि प्लासी की लड़ाई (1757) की शताब्दी पर (23 जून 1857) अंग्रेजी राज समाप्त हो जायेगा, इसने विद्रोह के आह्वान को और भी मजबूत किया।

vi. हालांकि सभी अफवाहें बहुत तेजी से फैलीं, चाहें वे तथ्यात्मक रूप से सच हों या गलत। अंग्रेज उनके डर को दूर करने की कोशिश करते रहे, लेकिन व्यर्थ। लोगों ने इन अफवाहों और भविष्यवाणियों पर विश्वास करना शुरू कर दिया क्योंकि उनके मन में अंग्रेजों द्वारा किए गए परिवर्तनों के प्रति भय था– ये अफवाहें 1820 के दशक में शुरू हुई अंग्रेजों की नीतियों से जुड़ी थीं।

vii. पश्चिमी शिक्षा, कॉलेज, स्कूल, विश्वविद्यालय की शुरुआत ने इस बात में संदेह पैदा कर दिया कि वे भारतीय शिक्षा प्रणाली को नष्ट करना चाहते हैं।

viii. लॉर्ड विलियम बेंटिक की सुधार नीति से भी लोगों में भय व्याप्त था। 1829 में सती प्रथा पर प्रतिबंध और विधवा पुनर्विवाह की अनुमति ने भी अंग्रेजों की मंशा पर संदेह उत्पन्न किया।

ix. लॉर्ड डलहौजी की नीति के सिद्धांत के तहत कई भारतीय राज्यों जैसे झांसी, सतारा, नागपुर आदि के विलय और अपने स्वयं के शासन और प्रशासन की स्थापना ने भी लोगों को ब्रिटिश इरादों पर संदेह उत्पन्न किया।

x. लोगों ने सोचना शुरू कर दिया कि वे सभी चीजें जिनका वे सम्मान या परवाह करते हैं, नष्ट हो रही हैं और उनकी जगह एक हृदयहीन, विदेशी और दमनकारी व्यवस्था स्थापित की जा रही है।

xi. साथ ही ईसाई मिशनरियों की गतिविधियों ने भी संदेह और बेचैनी पैदा की।

xii. अतः एक बार जब अफवाहें फैल गईं तो लोगों ने विश्वास करना शुरू कर दिया क्योंकि ये उनके डर से जुड़े थे।

प्रश्न 2. अवध में विद्रोह विशेष रूप से व्यापक क्यों था? किन बातों ने किसानों, तालुकदार और जमींदारों को विद्रोह में शामिल होने के लिए प्रेरित किया?

उत्तर: I. अवध के सभी लोगों को अंग्रेजों की शोषण प्रणाली पसंद नहीं थी।

II. वाजिद अली शाह एक लोकप्रिय शासक थे और उनके कई बेटे थे लेकिन अंग्रेजों ने उन्हें गद्दी से उतार दिया।

iii. अवध के सभी लोग नवाब के शासन को बहाल करना चाहते थे।

iv. बेगम हजरत महल विद्रोहियों की नेता थीं।

v. अवध में कई बड़े विद्रोही नेता भी काम कर रहे थे, जो अंग्रेजों से असंतुष्ट थे।

vi. तालुकदारों की सेना को भंग कर दिया गया और किलों को नष्ट कर दिया गया। अवध के तालुकदारों को भू-राजस्व की नयी नीति 'एकमुश्त बंदोबस्त' से बुरी तरह नुकसान उठाना पड़ा।

vii. अधिकतर जमींदारों को उनकी जमीन से बेदखल कर दिया गया। जमींदारों को अंग्रेजों की गतिविधियाँ पसंद नहीं थीं।

viii. किसानों को 50% भू-राजस्व पसंद नहीं था, भू-राजस्व जमा करना अनिवार्य था इसलिए किसान अपनी संपत्ति बेच रहे थे।

प्रश्न 3. विद्रोही क्या चाहते थे? विभिन्न सामाजिक समूहों की दृष्टि में कितना फर्क था?

उत्तर: I. विद्रोही भारत से ब्रिटिश सत्ता को उखाड़ फेंकना चाहते थे और पूर्व-ब्रिटिश दुनिया को बहाल करना चाहते थे।

II. भारतीय समाज के सभी वर्गों के हितों को ठेस पहुंची है। इसने अंग्रेजों के खिलाफ सामान्य आक्रोश को जन्म दिया।

iii. शासक और जागीरदार अपने-अपने राज्यों और जागीरों पर फिर से कब्जा करना चाहते थे।

iv. भारतीय व्यापारी व्यापार में रियायतें चाहते थे। उन्हें अपने खातों और लेनदेन में हस्तक्षेप पसंद नहीं था।

v. किसान उदार भूमि राजस्व प्रणाली उदार साधनों के साथ चाहते थे। वे जमींदारों और साहूकारों द्वारा शोषण को भी समाप्त करना चाहते थे।

vi. सरकारी सेवक अच्छा सम्मान, वेतन, शक्ति और गरिमा चाहते थे।
vii. भारतीय कारीगर और शिल्पकार अच्छी व्यावसायिक स्थिति चाहते थे।
viii. पंडित, फकीर और अन्य विद्वान भारतीय संस्कृति और धर्म की रक्षा करना चाहते थे।
प्रश्न 4 : तालुकदार कौन थे ? उन्हें शक्तिहीन कैसे बनाया गया? अंग्रेजों द्वारा तालुकदारों के विस्थापन के क्या प्रभाव पड़े?
उत्तर: I. तालुकदार कई पीढ़ियों से तालुका के प्रशासक थे। उनके पास अपनी बड़ी संपत्ति और किले भी थे । नवाब के आधिपत्य में उन्हें स्वायत्तता प्राप्त थी। कई तालुकदारों के पास लगभग 12,000 पैदल सैनिक थे और यहाँ तक कि छोटे तालुकदारों के पास भी लगभग 200 सिपाहियों की सेनाएँ थीं।
II. अंग्रेजों ने तालुकदारों की शक्ति को बर्दाश्त नहीं किया। इसलिए, उन्होंने तालुकदारों की शक्ति को नष्ट करने के लिए अलग-अलग रणनीति का इस्तेमाल किया।
iii. उन्हें निरस्त्र कर दिया गया और उनके किलों को नष्ट कर दिया गया। उन्होंने 1856 में नई राजस्व प्रणाली की शुरुआत की जिसे एकमुश्त बंदोबस्त के रूप में जाना जाता है।
iv. इसके अनुसार भूमि तालुकदारों से ले ली गई थी क्योंकि अंग्रेजों ने आरोप लगाया था कि उन्होंने बल और धोखाधड़ी से जमीन हासिल की थी।
vi. इस बंदोबस्त के बारे में अंग्रेजों ने कहा कि वे जमीन असली मालिकों के हाथ सौंप देंगे जिससे किसानों का शोषण कम होगा और राजस्व वसूली में इजाफा होगा।
vi. लेकिन वास्तविक व्यवहार में ऐसा नहीं हुआ। हालांकि राजस्व में वृद्धि हुई, किसानों पर बोझ कम नहीं हुआ। अधिकारियों को जल्द ही पता चला कि राजस्व दरों में 30 से 70 प्रतिशत की वृद्धि हुई थी और अवध के बहुत सारे क्षेत्रों का राजस्व निर्धारण बहुत बढ़ा-चढ़ा कर किया गया था।
अंग्रेजों द्वारा तालुकदारों के विस्थापन के प्रभाव:
।. पूर्व ब्रिटिश काल में किसान और तालुकदारों में वफादारी और संरक्षण के संबंध थे। हालांकि तालुकदार उत्पीड़क थे लेकिन उनमें से कई एक उदार में अभिभावक की छवि भी रखते थे।
II. वे किसानों से तरह-तरह के मद में पैसा वसूलते थे लेकिन जरूरत के समय उन्हें मदद भी करते थे। वे उन्हें त्योहारों के समय भत्ता या ऋण भी देते थे।
iii. लेकिन तालुकदारों के विस्थापन ने सामाजिक व्यवस्था को तोड़ दिया और किसान बहुत प्रभावित हुए क्योंकि अब किसान मनमाने राजस्व आकलन और गैर-लचीली राजस्व व्यवस्था के तहत बुरी तरह से पिसने लगे।
iv. अब इस बात की कोई गारंटी नहीं थी कि कठिनाई या फसल की विफलता के समय में राजस्व की मांग कम हो जाएगी या संग्रह स्थगित कर दिया जाएगा। उत्सव के समय उन्हें ऋण नहीं मिलता था। इसलिए, 1857 के विद्रोह में लखनऊ में किसानों ने बड़े पैमाने पर विद्रोहियों का समर्थन किया।
प्रश्न 5. 1857 के विद्रोह के बारे में चित्रों (दृश्य निरूपण) से क्या पता चलता है? इतिहासकार इन चित्रों का किस प्रकार विश्लेषण करते हैं?
उत्तर: 1857 के विद्रोह से सम्बंधित चित्रों से निम्नलिखित बातों का पता चलता है:
I. ब्रिटिश कलाकार अंग्रेजों को नायक के रूप में प्रस्तुत करता है।
II. टॉमस जोन्स बार्कर द्वारा चित्रित 'रिलीफ ऑफ़ लखनऊ' इस संबंध में उल्लेखनीय है।
iii. कोलिन कैंपबेल और जोन्स आउट्राम ने विद्रोहियों को हराकर लखनऊ पर कब्जा कर लिया। लखनऊ पर पुनः कब्जा करने को अंग्रेजों ने अस्तित्व, वीर प्रतिरोध और ब्रिटिश सत्ता के अंतिम विजय के प्रतीक के रूप में वर्णित किया

है। ये चित्र इस बात पर जोर देते हैं कि संकट का समय समाप्त हो गया था और उन्होंने अपनी शक्ति को फिर से स्थापित कर लिया था।

iv. जोसेफ नोएल पेटन द्वारा चित्रित 'इन मेमोरियम' विद्रोह के दौरान अंग्रेजी महिलाओं और बच्चों की बेबसी को प्रदर्शित करती है।

vi. एक चित्र में मिस व्हीलर बचाव करने वाली नायिका का उदाहरण दर्शाती है। वह कानपुर में सिपाहियों के खिलाफ अपना बचाव कर रही हैं। इसे ईसाई धर्म के सम्मान को बचाने की लड़ाई के रूप में भी दिखाया गया है क्योंकि बाइबिल जमीन पर पड़ी है।

vi. लक्ष्मीबाई की वीर छवि ने भारतीयों को संघर्ष के लिए प्रेरित किया।

vii. अंग्रेजों की क्रूर छवि प्रतिशोध का प्रतीक थी। "द ब्रिटिश लायन्स वेंजेंस ऑन द बंगाल टाइगर" और जस्टिस पंच प्रसिद्ध चित्र हैं।

viii. फांसी की तस्वीरें लोकप्रिय पत्रिकाओं के माध्यम से व्यापक रूप से प्रसारित की गईं।

पेशावर में भारतीय सैनिकों की फांसी की तस्वीरों ने भी उनकी बहादुरी को दिखाया।

ix. उस समय में कई चित्र और कार्टून प्रकाशित हुए थे जो विद्रोहियों के प्रति नरमी दिखाते हैं। वे ब्रिटिश प्रेस में मजाक बन जाते हैं। "कैनिंग की क्षमादान" चित्र कैनिंग को एक नेक बुजुर्ग रूप में दिखाया गया था उसका हाथ एक सिपाही के सिर पर है जो हाथ में नंगी तलवार और कटार लिए हुए है, दोनों से खून टपक रहा है।

ix. भारतीय कलाकार ने भारतीयों में राष्ट्रवाद और देशभक्ति को प्रकट किया।

इतिहासकार इन तस्वीरों के माध्यम से यह जानने का प्रयास करते हैं कि उन्हें बनाने वाले चित्रकार इन घटनाओं को कैसे देखते थे। उनके अहसास क्या थे और वे क्या कहना चाहते थे। इन चित्रों के माध्यम से हम उस जनता के बारे में जान सकते है जो उन चित्रों की आलोचना या तारीफ़ करती थी।

स्रोत आधारित प्रश्न:-

1. सरकारी कर्मचारियों के बारे में : अब यह राज की बात नहीं है कि अंग्रेज सरकार के तहत प्रशासनिक और सैनिक सेवाओं में भर्ती होने वाले भारतीय लोगों को इज्जत नहीं मिलती, उनकी तनख्वाह कम होती है और उनके पास कोई ताकत नहीं होती। दोनों महकमों में प्रतिष्ठा और पैसे वाले सारे पद सिर्फ अंग्रेजों को मिलते हैं. .. । इसलिए ब्रिटिश सेवा में काम करने वाले तमाम भारतीयों को अपने मजहब और हित पर ध्यान देना चाहिए और अंग्रेजों के प्रति अपनी वफ़ादारी छोड़कर बादशाही सरकार का साथ देना चाहिए। उन्हें फ़िलहाल 200 और 300 रुपये प्रतिमाह की तनख्वाह मिलेगी और भविष्य में ऊँचे ओहदों की उम्मीद रखें...।

कारीगरों के बारे में: इसमें कोई शक नहीं कि इंग्लैंड में बनी चीजों को ला लाकर यूरोपियों ने हमारे बुनकरों, सूती वस्त्र बनाने वालों, बढ़इयों, लोहारों और मोचियों आदि को बेरोजगार कर दिया है, उनके काम धंधों पर इस तरह क़ब्जा जमा लिया है कि देसी कारीगरों की हर श्रेणी भिखमंगों की हालत में पहुँच गई है। बादशाही सरकार में देसी कारीगरों को राजाओं और अमीरों की सेवा में तैनात किया जाएगा। इससे निःसंदेह उनकी उन्नति होगी। इसलिए इन कारीगरों को अंग्रेजों की सेवा छोड़ देनी चाहिए।

Q1. अंग्रेजी के आने से कारीगरों पर क्या प्रभाव पड़ा? (2)

उत्तर: कारीगरों को उनके रोजगार से वंचित कर दिया गया। ब्रिटेन के सस्ते मशीन-निर्मित सामान ने भारतीय बाजारों पर कब्जा कर लिया। नतीजतन, देशी कारीगर का हर वर्ग भिखारी बन गया।

प्रश्न 2. बादशाही सरकार में कारीगरों की स्थिति कैसे सुधरेगी? (2)

उत्तर: बादशाही सरकार के तहत, देशी कारीगरों को राजाओं और अमीरों की सेवा में लगाया जाएगा। इससे निःसंदेह उनकी उन्नति होगी।

Q3. लोक सेवक ब्रिटिश सरकार से असंतुष्ट क्यों थे? (2)

उत्तर: ब्रिटिश सरकार के अधीन, नागरिक और सैन्य सेवा में कार्यरत मूल निवासियों का कोई सम्मान नहीं था। उनका वेतन कम था और उनके पास कोई शक्ति या प्रभाव नहीं था।

Q.4. विद्रोही उद्घोषणा ने किस बात की बार-बार अपील की? (2)

उत्तर: विद्रोही उद्घोषणा ने बार-बार अपील की कि भारतीयों को अपने धर्म और हितों का ध्यान रखना चाहिए और उन्हें बादशाही का पक्ष लेना चाहिए।

समय रेखा

1801 - अवध में वेलेस्ली द्वारा सहायक संधि किया गया

1856 - नवाब वाजिद अली शाह को अपदस्थ किया गया; अवध का विलय

1856-57-अंग्रेजों द्वारा अवध में एकमुश्त राजस्व बंदोबस्त की शुरुआत

1857: 10 मई-मेरठ में विद्रोह शुरू

11-12 मई -दिल्ली गैरीसन विद्रोह; बहादुर शाह ने नाममात्र का नेतृत्व स्वीकार किया

20-27 मई - अलीगढ़, इटावा, मैनपुरी, एटा में सिपाही विद्रोह

30 मई- लखनऊ में विद्रोह

मई-जून - विद्रोह जनता के सामान्य विद्रोह में बदल जाता है

30 जून - चिनहाट के युद्ध में अंग्रेजों की पराजय

25 सितंबर हैवलॉक और आउट्राम के तहत ब्रिटिश सेना लखनऊ में रेजीडेंसी में प्रवेश करती है

जुलाई - शाह मल युद्ध में मारा गया

जून 1858 - युद्ध में रानी झांसी की मृत्यु

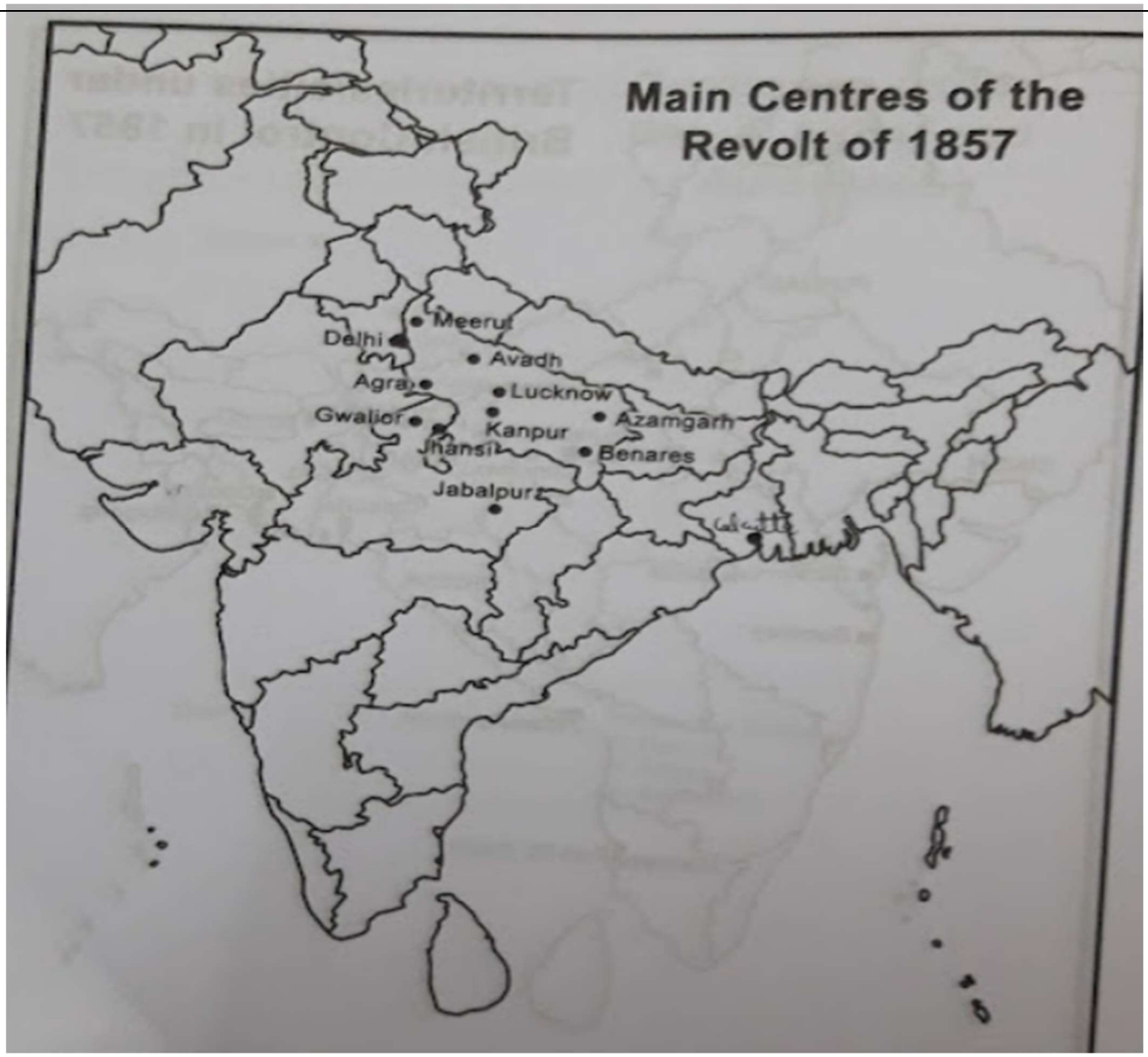
Main Centres of the Revolt of 1857
Meerut
Delhi
Avadh
Agra
Lucknow
Gwalior
Kanpur
Azamgarh
Jhansi
Benares
Jabalpur

थीम–XIII
महात्मा गांधी और राष्ट्रवादी आंदोलन

श्री संजय प्रसाद
स्ना. शि. (इतिहास) के. वि. हजारीबाग

संक्षेप में प्रमुख अवधारणाएं

- महात्मा गांधी भारत के स्वतंत्रता संग्राम में भाग लेने वाले सभी नेताओं में सबसे प्रभावशाली और श्रद्धेय हैं। जनवरी 1915 में, मोहनदास करमचंद गांधी दक्षिण अफ्रीका में दो दशक बिताने के बाद भारत लौट आए।
- गोखले की सलाह पर, उन्होंने भारत और उसके लोगों को जानने के लिए ब्रिटिश भारत की यात्रा करते हुए एक वर्ष बिताया।
- उनकी पहली प्रमुख सार्वजनिक उपस्थिति फरवरी 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के उद्घाटन समारोह में थी। यहां अपने भाषण में, गांधीजी ने भारतीय अभिजात वर्ग पर श्रमिक गरीबों के लिए चिंता की कमी का आरोप लगाया। बीएचयू के उद्घाटन पर गांधीजी का भाषण भारतीय राष्ट्रवाद को भारतीय लोगों का अधिक उचित रूप से प्रतिनिधित्व करने में उनकी इच्छा का बयान था।
- उन्होंने नील की खेती करने वाले किसानों की स्थिति को सुधारने के लिए चंपारण) 1917 में बिहारमें (सफलतापूर्वक सत्याग्रह का आयोजन किया।
- 1918 में, उन्होंने अहमदाबाद मिल श्रमिकों के वेतन में वृद्धि करने के लिए एक सत्याग्रह शुरू किया।
- 1918 में, उन्होंने खेड़ा में किसानों का लगान माफ़ कराने के लिए एक आंदोलन किया।
- 1919 में, गांधीजी ने के खिलाफ देशव्यापी अभियान चलाने का आह्वान किया। यह रॉलेट सत्याग्रह "रॉलेट एक्ट" था जिसने गांधीजी को सही मायने में राष्ट्रीय नेता बनाया।
- 1920 में जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद उन्होंने ब्रिटिश शासन के साथ असहयोग के अभियान का आह्वान किया और खिलाफत आंदोलन से हाथ मिला लिया।
- उनका मत था कि खिलाफत के साथ असहयोग को जोड़कर औपनिवेशिक शासन को समाप्त करने के लिए हिंदूमुस्लिम एकता– का जन्म होगा।
- 1922 में चौरी चौरा की घटना–जिसमें 22 पुलिसकर्मियों की हिंसक भीड़ द्वारा हत्या कर दी गई थी, के बाद असहयोग आंदोलन को निलंबित कर दिया गया।
- 1922 तक गांधीजी ने भारतीय राष्ट्रवाद को बदल दिया। यह अब पेशेवरों और बुद्धिजीवियों का आंदोलन नहीं था, अब इसमें सैकड़ोंहजारों किसान–, श्रमिक और कारीगर भी शामिल थे।
- भारतीयों के बीच गांधीजी की लोकप्रियता के कारण वे उनकी तरह कपड़े पहनते थे –, उनकी तरह रहते थे और उनकी भाषा बोलते थे।
- महात्मा गांधी को फरवरी 1924 में जेल से रिहा कर दिया गया और उन्होंने खुद को रचनात्मक कार्यों में समर्पित कर दिया; जैसे खादी को बढ़ावा देना, अस्पृश्यता का उन्मूलन, हिंदूमुस्लिम एकता आदि।–
- 1928 में, गांधीजी ने राजनीति में फिर से प्रवेश करने के बारे में सोचना शुरू किया। साइमन कमीशन की विफलता के बाद, लाहौर में अपने वार्षिक सत्र में कांग्रेस ने पूर्ण स्वराज की मांग की और 26 जनवरी 1930 को स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाने का निर्णय लिया।
- 12 मार्च 1930 को गांधीजी ने अपना प्रसिद्ध –'नमक मार्च' शुरू किया और आधिकारिक तौर पर दांडी सत्याग्रह की शुरुआत की।
- 1937 में प्रांतीय चुनाव में –, कांग्रेस ने 11 में से 8 प्रांतों में मंत्रालयों का गठन किया।
- सितंबर 1939 में द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया। नेहरू और गांधी ने वादा किया कि यदि अंग्रेजों ने बदले में – भारत को स्वतंत्रता देने का वादा किया तो युद्ध के प्रयास में कांग्रेस का समर्थन करेंगे। लेकिन अंग्रेजों ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया।

- 1940 और 1941 के दौरान, कांग्रेस ने युद्ध समाप्त होने के बाद स्वतंत्रता का वादा करने के लिए शासकों पर दबाव बनाने के लिए व्यक्तिगत सत्याग्रहों की एक श्रृंखला आयोजित की।
- 9 अगस्त 1942 में गांधीजी द्वारा भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया गया। उन्हें सभी प्रमुख नेताओं के साथ जेल भेज दिया गया।
- 1946- कैबिनेट मिशनकांग्रेस और लीग को संघीय व्यवस्था पर सहमत कराने में विफल। –
- 16 अगस्त 1946 में लीग की पाकिस्तान की मांग को बल देने के लिए जिन्ना द्वारा प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस का आह्वान ; बंगाल, बिहार, उत्तर प्रदेश और पंजाब में सांप्रदायिक दंगे।
- 1947 में लॉर्ड माउंटबेटन को वायसराय नियुक्त किया गया था।
- 15 अगस्त 1947- सत्ता का औपचारिक हस्तांतरण, विभाजन की घोषणा और भारत को स्वतंत्रता मिली।
- गांधीजी के अंतिम वीरतापूर्ण दिन– :
  15 अगस्त 1947 को, गांधीजी उत्सव देखने के लिए दिल्ली में नहीं थे। वे कलकत्ता में थे और 24 घंटे के उपवास में थे।
- बंगाल में शांति लाने का काम करने के बाद, गांधीजी दिल्ली चले गए, जहां से उन्हें पंजाब के दंगा प्रभावित जिलों में जाना था। 30 जनवरी 1948 को नाथूराम गोडसे ने गांधी जी की गोली मारकर हत्या कर दी।

वस्तुनिष्ठ प्रकार के प्रश्न (1MARK)

प्रश्न 1. महात्मा गांधी का जन्म कब और कहाँ हुआ था?
उत्तर। पोरबंदर गुजरात, 2 अक्टूबर 1869
प्रश्न 2. गांधी जी ने सत्याग्रह कहाँ से शुरू किया था?
उत्तर : दक्षिण अफ्रीका
प्रश्न 3. दक्षिण अफ्रीका से गांधी की भारत वापसी कब हुई ?
उत्तर: 1915
प्रश्न 4. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कब और कहाँ हुई?
उत्तर: 1885, बॉम्बे
प्रश्न 5. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के जनक/कांग्रेस के संस्थापक सचिव कौन थे?
उत्तर: ए. ओ. ह्यूम।
प्रश्न 6. स्वतंत्रता संग्राम के तीन उदारवादी नेताओं के नाम लिखिए।
उत्तर: गोपाल कृष्ण गोखले, फिरोज शाह मेहता, दादाभाई नौरोजी।
प्रश्न 7. स्वतंत्रता संग्राम के तीन गरम दल के नेताओं के नाम लिखिए।
उत्तर: लाला लाजपत राय, बाला गंगाधर तिलक, बिपिन चंद्र पाल और अरबिंदो घोष।
प्रश्न 8. स्वदेशी आंदोलन कब और क्यों शुरू हुआ?
उत्तर: 1906, बंगाल–विभाजन के विरोध में,
प्रश्न 9. गांधीजी के राजनीतिक गुरु कौन थे?
उत्तर: गोपाल कृष्ण गोखले
प्रश्न 10. साबरमती आश्रम कहाँ है और इसकी स्थापना कब हुई थी ?
उत्तर: 1916, अहमदाबाद (गुजरात)
प्रश्न 11. गांधीजी की पहली सार्वजनिक उपस्थिति कब और कहाँ हुई थी?
उत्तर: 1916, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
प्रश्न 12 भारत में गांधी का सत्याग्रह का पहला प्रयोग कहाँ हुआ था ?
उत्तर: चंपारण (बिहार), 1917
प्रश्न 13. असहयोग आंदोलन कब आयोजित किया गया था?
उत्तर: 1920-1922
प्रश्न 14 रॉलेट एक्ट का एक प्रावधान लिखिए।

उत्तर: पुलिस बिना किसी कारण के किसी भी भारतीय को गिरफ्तार कर सकती थी। इसे 1919 में पेश किया गया था।
प्रश्न 15: जलियांवाला बाग की घटना कब हुई थी?
उत्तर: 13 अप्रैल 1919
प्रश्न 16: खिलाफत आंदोलन क्यों शुरू हुआ?
उत्तर: खलीफा (मुसलमानों की दुनिया के धार्मिक मुखिया और तुर्की के सुल्तान) के साथ अन्याय के विरुद्ध।
प्रश्न 17. अली बन्धु कौन थे?
उत्तर: मौलाना शौकत अली और मौलाना मुहम्मद अली।
प्रश्न 18. 1920 में कांग्रेस का अधिवेशन कहाँ हुआ था?
उत्तर: नागपुर (असहयोग आंदोलन का संकल्प)
प्रश्न 19: असहयोग आंदोलन कब और क्यों वापस लिया गया ?
उत्तर: 5 फरवरी 1922 को चौरी चौरा की हिंसक घटना के कारण।
प्रश्न 20. गांधीजी की आत्मकथा का नाम बताइए।
उत्तर: सत्य के साथ मेरे प्रयोग

बहुविकल्पीय प्रश्न

Q. 1. महात्मा गांधी ने मूल रूप से सत्याग्रह आंदोलन कहां से शुरू किया था?
(a) चंपारण (b) दक्षिण अफ्रीका (c) बनारस (d) गुजरात
उत्तर: विकल्प (b) सही है।
Q. 2. जलियांवाला बाग कांड कब हुआ था?
(a) अप्रैल 1909 (b) अप्रैल 1929 (c) अप्रैल 1939 (d) अप्रैल 1919
उत्तर: विकल्प (d) सही है।
Q. 3. महात्मा गांधी ने खिलाफत मुद्दे का समर्थन क्यों किया?
(a) जलियांवाला बाग घटना के विरोध में (b) नमक कानून का विरोध करने के लिए
(c) हिंदू-मुसलमान को एकजुट करने के लिए (d) इनमें से कोई नहीं
उत्तर: विकल्प (c) सही है।
Q. 4. महात्मा गांधी ने नमक एकाधिकार को चुनकर अपने सामरिक ज्ञान का उदाहरण दिया। निम्नलिखित में से कौन सा/से कथन इसे साबित करने के लिए सही है/हैं?
1. नमक पर राज्य का एकाधिकार काफ़ी अलोकप्रिय था।
2. लोगों को घरेलू उपयोग के लिए भी नमक बनाने से मना किया गया था।
3. नमक कोई आवश्यक वस्तु नहीं थी।
सही विकल्प चुनें:
(a)) केवल (1) और (2 (b) केवल (2) और (3) (c) (1), (2) और (3) (d) केवल (2)
उत्तर: विकल्प (a) सही है।
Q. 5. गांधीजी ने साबरमती से दांडी मार्च कब शुरू किया था?
(a) 15 जुलाई, 1942 (b) 12 मार्च, 1930
(c) दिसंबर 13, 1887 (d) 1 जनवरी, 1912
उत्तर: विकल्प (b) सही है।
Q. 6. इनमें से कौन सा सम्मेलन नवंबर 1930 में आयोजित किया गया था?
(a) पहला गोलमेज सम्मेलन (b) दूसरा गोलमेज सम्मेलन
(c) तीसरा गोलमेज सम्मेलन (d) चौथा गोलमेज सम्मेलन
उत्तर: विकल्प (a) सही है।

प्रश्न 7. निम्नलिखित घटनाओं पर विचार करें
1. कैबिनेट मिशन 2. क्रिप्स मिशन 3. खिलाफत आंदोलन 4. पाकिस्तान संकल्प
इन घटनाओं का सही कालानुक्रम है:
(a) 4, 3, 2, 1 (b) 4, 3, 1, 2 (c) 3, 4, 1, 2 (d) 3, 4, 2, 1
उत्तर: विकल्प (d) सही है।

Q. 8. इनमें से किस स्रोत का उपयोग महात्मा गांधी के राजनीतिक जीवन के पुनर्निर्माण के लिए किया जा सकता है?
(a) महात्मा गांधी के लेखन और भाषण (b) सरकारी रिकॉर्ड
(c) समकालीन समाचार पत्र (d) उपरोक्त सभी
उत्तर: विकल्प (d) सही है।
निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों में, कथन (A) के बाद कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प के रूप में चिह्नित करें:
(a) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(b) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R A की सही व्याख्या नहीं है।
(c) A सत्य है लेकिन R गलत है।
(d) A गलत है और R सत्य है।
Q. 9. कथन (A): फरवरी 1924 में, महात्मा गांधी ने अपना ध्यान घर में बने कपड़े (खादी) को बढ़ावा देने और अस्पृश्यता के उन्मूलन के लिए समर्पित करने का फैसला किया।
कारण (R) : महात्मा गांधी का मानना था कि स्वतंत्रता के योग्य होने के लिए भारतीयों को सामाजिक बुराइयों से छुटकारा पाना होगा।
उत्तर: विकल्प (A) सही है।
प्रश्न 10. कथन (A) : गांधीजी को जनवरी 1931 में जेल से रिहा किया गया और इस महीने में वायसराय के साथ कई लंबी बैठकें हुईं और इसे गांधी–इरविन समझौता कहा गया।
कारण (R) : संधि के अनुसार, सविनय अवज्ञा को समाप्त कर दिया गया था। कैदियों को रिहा नहीं किया गया था। तट के किनारे नमक निर्माण की अनुमति दी गई।
उत्तर: विकल्प (c) सही है।

लघु उत्तरीय प्रश्न (3 अंक)

प्रश्न. 1. दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी के अनुभव के बारे में लिखिए।

उत्तर: I. महात्मा गांधी 1893 में एक वकील के रूप में दक्षिण अफ्रीका गए लेकिन वे लगभग 22 वर्ष तक वहीं रहे।
ii. वहां उन्होंने रंगभेद व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई लड़ी।
III. इतिहासकार चंद्रन देवनेसन ने ठीक ही टिप्पणी की है कि "दक्षिण अफ्रीका महात्मा का निर्माण था"।
IV. यह दक्षिण अफ्रीका में था कि महात्मा गांधी ने अहिंसक विरोध या सत्याग्रह की अपनी तकनीक को अपनाया।
V. धर्मों के बीच सद्भाव को बढ़ावा दिया। निम्न जातियों और महिलाओं के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार के लिए उच्च जाति के भारतीयों को सचेत किया।

प्रश्न 2. 1915 में गांधीजी के वापस लौटने पर भारत में क्या स्थिति थी?

उत्तर:
I. महात्मा गांधी 1915 में भारत लौटे। 1915 का भारत 1893 में उनके द्वारा छोड़े गए भारत से अलग था।
II. भारत राजनीतिक अर्थों में अधिक सक्रिय हो चूका था।
III. 1885 में स्थापित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की प्रमुख शहरों और कस्बों में कई शाखाएँ थीं।
IV. 1905-07 के स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से कांग्रेस ने मध्यम वर्ग के बीच अपनी उपस्थिति बढ़ा ली थी।

V. पंजाब के लाला लाजपत राय, महाराष्ट्र के बाल गंगाधर तिलक और बंगाल के बिपिन चंद्र पाल लाल, बाल, पाल के नाम से प्रसिद्ध हो चुके थे।

प्रश्न 3. भारत में महात्मा गांधी के आरंभिक आंदोलनों के बारे में लिखिए।

उत्तर:

I. चंपारण सत्याग्रह: 1917 में, महात्मा गांधी ने किसानों के लिए काश्तकारी की सुरक्षा के साथ-साथ अपनी पसंद की फसलों की खेती करने की आज़ादी दिलाने लिए चंपारण (बिहार) में एक सत्याग्रह का आयोजन किया।

II, अहमदाबाद टेक्सटाइल मिल स्ट्राइक: फरवरी 1918 में गांधीजी ने कपड़ा मिल श्रमिकों के लिए बेहतर काम करने की स्थिति की मांग के लिए अहमदाबाद में एक सत्याग्रह शुरू किया।

III. खेड़ा सत्याग्रह: 1918 में गांधीजी द्वारा किसानों के लिए खेड़ा सत्याग्रह शुरू किया गया था। किसानों की फसल चौपट हो जाने के कारण राज्य से करों में छूट की मांग की।

प्रश्न 4. रॉलेट एक्ट क्या था? इसका विरोध कैसे किया गया?

या

"यह रॉलेट एक्ट था जिसने गांधीजी को सही मायने में राष्ट्रीय नेता बनाया" कैसे?

उत्तर:

I. प्रथम विश्व युद्ध (1914-18) के बाद राष्ट्रवादी गतिविधियों को रोकने के लिए अंग्रेजों ने प्रेस पर प्रतिबन्ध लगा दिया था। अब सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता वाली समिति की सिफारिश पर, नया अधिनियम पारित किया गया जिसे रॉलेट एक्ट के रूप में जाना गया।

II. इस अधिनियम ने सरकार को आतंकवाद के संदेह वाले किसी भी व्यक्ति पर मुकदमा चलाए बिना दो साल के लिए कैद करने के लिए अधिकृत किया।

III. यह अधिनियम भारतीयों के लिए बहुत कठोर था और इसने एक महान विरोध का जन्म दिया।

रॉलेट एक्ट का विरोध

I. गांधीजी ने रॉलेट एक्ट के खिलाफ देशव्यापी आंदोलन का आह्वान किया। 6 अप्रैल को गांधीजी ने हड़ताल की घोषणा की।

ii. इस काले कानून के खिलाफ भारतीय काफी आक्रामक हो गए। अंग्रेजों ने कई इलाकों में कर्फ्यू लगा दिया। गांधीजी और प्रमुख स्थानीय कांग्रेसियों को गिरफ्तार कर लिया गया।

III. रॉलेट एक्ट के खिलाफ विरोध 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर में चरम पर पहुंच गया, जब एक ब्रिटिश ब्रिगेडियर डायर ने अपने सैनिकों को एक राष्ट्रवादी बैठक में गोलियां चलाने का आदेश दिया। वहां 400 से ज्यादा लोग मारे गए थे जिसे जलियावाला बाग हत्याकांड के नाम से जाना जाता है।

प्रश्न 5. खिलाफत आंदोलन पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर:

I. खिलाफत आंदोलन (1919-1920) मुहम्मद अली और शौकत अली के नेतृत्व में भारतीय मुसलमानों का एक आंदोलन था।

II तुर्की के सुल्तान या खलीफा को सभी मुसलमानों का आध्यात्मिक नेता के रूप में माना जाता था, लेकिन अंग्रेजों द्वारा समर्थित तुर्की शासक कमाल अतातुर्क द्वारा खलीफा के पद को समाप्त कर दिया गया था।

III. इसलिए, उन्होंने अंग्रेजों के खिलाफ खिलाफत आंदोलन शुरू किया। उन्होंने मांग की कि खलीफा का मुस्लिम पवित्र स्थानों पर नियंत्रण होना चाहिए और उनकी संप्रभुता होनी चाहिए।

IV. कांग्रेस ने इस आंदोलन का समर्थन किया। गांधी ने खिलाफत मुद्दे को असहयोग के साथ जोड़ने का फैसला किया। वह औपनिवेशिक शासन को समाप्त करने के लिए हिंदुओं और मुसलमानों को एक करना चाहते थे।

प्रश्न 6. असहयोग आंदोलन के कारण और कार्यक्रम क्या थे?

उत्तर:

I. विश्व युद्ध के बाद होने वाली सभी घटनाएं सेंसरशिप, रौलट एक्ट, खिलाफत मुद्दा, जलियांवाला बाग हत्याकांड आदि ने भारत की जनता को झकझोर दिया था, जिसे गांधी जी ने अंग्रेजों के खिलाफ एक राष्ट्रव्यापी आंदोलन शुरू करने का फैसला लिया।

II गांधी का मानना था कि यहां अंग्रेजों का वजूद भारत के सहयोग से ही है। इसलिए, उन्होंने कहा कि अगर असहयोग को प्रभावी ढंग से अंजाम दिया गया तो भारत को एक साल के भीतर स्वराज मिल जाएगा।

III. असहयोग के लिए गांधीजी ने ब्रिटिश स्कूलों और कॉलेजों के बहिष्कार करने के लिए कहा, वकीलों को अदालतों का बहिष्कार करना था।

IV विदेशी सामान, कपड़े आदि का बहिष्कार करने को कहा गया।

प्रश्न 7. असहयोग आंदोलन के क्या प्रभाव थे?

उत्तर:i. असहयोग आंदोलन में लोगों ने बड़े पैमाने पर सक्रिय रूप से भाग लिया।

यह आंदोलन योजना के अनुसार शुरू हुआ क्योंकि छात्रों ने ब्रिटिश सरकार द्वारा संचालित स्कूलों और कॉलेजों में जाना बंद कर दिया था। वकीलों ने भी कोर्ट में जाने से मना कर दिया।

II. विदेशी सामान और विदेशी कपड़े का बहिष्कार किया गया। विदेशी कपड़ों की होली जलाई गई।

iii. कई कस्बों और शहरों में मजदूर वर्ग ने भी हड़ताल किया।

iv. उत्तरी आंध्र में पहाड़ी जनजातियों ने वन कानूनों का उल्लंघन किया। अवध में किसानों ने कर देने से इनकार कर दिया।

v. गांधीजी ने असहयोग आंदोलन के माध्यम से लोगों को आत्म-अनुशासन, त्याग, आत्म-निषेध, अहिंसा, सत्याग्रह सिखाया। आंदोलन का उद्देश्य स्वशासन था।

vi. आंदोलन ने भारत में ब्रिटिश शासन की नींव हिला दी। अंग्रेजों ने भी आंदोलन का क्रूर दमन किया। उन्होंने हजारों लोगों को जेल में डाल दिया। उन्होंने निर्दोष लोगों पर गोलियां चलाईं।

vii. इसने लोगों को उग्र बना दिया इसलिए 5 फरवरी 1922 को किसानों के एक समूह ने यूपी के चौरी चौरा में एक पुलिस स्टेशन में आग लगा दी जिसमें 22 पुलिसकर्मियों की मौत हो गई।

हिंसा के इस कृत्य ने गांधी को आंदोलन वापस लेने के लिए प्रेरित किया।

प्रश्न 8. 1928 से 1930 तक भारत में प्रमुख राजनीतिक घटनाएँ कौन सी थीं?

उत्तर : I. साइमन कमीशन: 1927 में भारत की संवैधानिक स्थिति की जांच के लिए एक आयोग का गठन किया गया था जिसे साइमन कमीशन के नाम से जाना जाता है। सर जॉन साइमन, इसके अध्यक्ष थे। साइमन कमीशन में सभी 7 सदस्य ब्रिटिश थे, इसलिए जब यह भारत में पहुंचा तो 1928 में आयोग के विरोध में एक बड़ा अभियान चलाया गया।

II. बारडोली में सत्याग्रह: 1928 में महात्मा गांधी ने सरदार वल्लभ भाई पटेल के साथ बारदोली (गुजरात) में किसानों के लिए सत्याग्रह का आयोजन किया।

iii. लाहौर कांग्रेस अधिवेशन-1929: दिसम्बर 1929 में लाहौर में जवाहर लाल नेहरु की अध्यक्षता कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन हुआ। यह सत्र बहुत महत्वपूर्ण था क्योंकि कांग्रेस का नेतृत्व युवा पीढ़ी को सौंप दिया गया था। कांग्रेस ने भारत के "पूर्ण स्वराज" या पूर्ण स्वतंत्रता को अपना लक्ष्य घोषित किया।

iv. यह निर्णय लिया गया कि 26 जनवरी 1930 को 'स्वतंत्रता दिवस' के रूप में विभिन्न स्थानों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने 'अछूतों' की सेवा, या हिंदुओं और मुसलमानों के पुनर्मिलन के रूप में रचनात्मक कार्य करके मनाया जाने का निर्णय किया गया।

प्रश्न 9. नमक मार्च के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर:i. स्वतंत्रता दिवस मनाने के तुरंत बाद महात्मा गांधी ने घोषणा की कि वह नमक कानून को तोड़ने के लिए एक मार्च का नेतृत्व करेंगे। उन्होंने नमक कानून के खिलाफ इस मार्च का नेतृत्व करने का फैसला किया क्योंकि नमक के निर्माण पर राज्य का एकाधिकार था जो बहुत अलोकप्रिय था।

II. नमक की कीमत बहुत अधिक थी। नमक हर भारतीय घर में एक अनिवार्य वस्तु थी इसलिए उन्हें उम्मीद थी कि यह लोगों को ब्रिटिश शासन के खिलाफ लामबंद करेगा।

iii. गांधीजी ने वायसराय लॉर्ड इरविन को अपने "नमक मार्च" की अग्रिम सूचना दी थी, जो कार्रवाई के महत्व को समझने में विफल रहे। 12 मार्च 1930 को, गांधी ने अपने साबरमती आश्रम से तटीय नगर दांडी की ओर अपना मार्च शुरू किया।

प्रश्न 10. गांधी जी के बारे में जानने के लिए विभिन्न स्रोत क्या हैं?

उत्तर: ऐसे विभिन्न स्रोत हैं जिनके माध्यम से हम गांधीजी के राजनीतिक जीवन और राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास का पुनर्निर्माण कर सकते हैं। कुछ महत्वपूर्ण स्रोत नीचे दिए गए हैं।

I. एक महत्वपूर्ण स्रोत महात्मा गांधी और उनके समकालीनो के लेखन और भाषण हैं, जिनमें उनके सहयोगी और उनके राजनीतिक विरोधी दोनों शामिल हैं।

II भाषण हमें किसी व्यक्ति की सार्वजनिक आवाज सुनने की अनुमति देते हैं, जबकि निजी पत्र हमें उसके निजी विचारों की झलक देते हैं।

III. आत्मकथाएँ हमें अतीत का एक लेखा-जोखा देती हैं जो अकसर मानवीय विवरणों से समृद्ध होता है, हमें यह ध्यान रखना होता है कि आत्मकथाएँ बहुत बार स्मृति से लिखे जाते हैं। वे हमें बताते हैं कि लेखक क्या याद कर सकता है, उसे कौन-सी चीज़ें महत्वपूर्ण लगती हैं, या वह किन चीज़ों का वर्णन करने के लिए उत्सुक है या एक व्यक्ति अपने जीवन को दूसरों द्वारा कैसे देखना चाहता है।

IV एक अन्य महत्वपूर्ण स्रोत सरकारी रिकॉर्ड है, क्योंकि औपनिवेशिक शासकों ने उन पर कड़ी नजर रखी, जिन्हें वे सरकार के आलोचक मानते थे। उस समय पुलिसकर्मियों और अन्य अधिकारियों द्वारा लिखे गए पत्र और रिपोर्ट गुप्त थे; लेकिन अब अभिलेखागार में इन्हें पढ़ा जा सकता है।

V. अंग्रेजी के साथ-साथ विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रकाशित होने वाले समकालीन समाचार पत्र, जो महात्मा गांधी के आंदोलनों पर नज़र रखते थे और उनकी गतिविधियों पर रिपोर्ट करते थे। रिपोर्ट यह भी दर्शाता है कि आम भारतीय उनके बारे में क्या सोचते हैं।

प्रश्न 12. बीएचयू में महात्मा गांधी के भाषण के महत्वपूर्ण पहलुओं को लिखिए।

उत्तर: अपने राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले की सलाह पर महात्मा गांधी ने अपने लोगों की समस्या जानने के लिए ब्रिटिश भारत की यात्रा की।

I. उन्हें फरवरी 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (बीएचयू) के उद्घाटन के अवसर पर आमंत्रित किया गया था।

II वह अन्य नेताओं की तुलना में लगभग अनजान थे। वहां उन्होंने अपना पहला भाषण दिया जो इन मुद्दों पर केंद्रित था-

(a) गांधीजी ने अपने भाषण में भारतीय अभिजात वर्ग पर श्रमिक गरीबों के लिए चिंता की कमी का आरोप लगाया।

(b) उन्होंने बताया कि भारतीय राष्ट्रवाद एक कुलीन घटना थी। इसमें केवल वकीलों, डॉक्टरों और जमींदारों भूमिका थी।

(c) गांधीजी ने उपस्थित लोगों को, उन किसानों और श्रमिकों की याद दिलाने के लिए चुना, जो भारतीय आबादी के बहुमत थे, फिर भी उद्घाटन समारोह में उनका प्रतिनिधित्व नहीं था।

(d) भारतीय राष्ट्रवाद में सम्पूर्ण भारतीय लोगों को समाहित करने में सक्षम बनाने की गांधीजी की पहली सार्वजनिक घोषणा थी।

प्रश्न 13. गांधीजी की चमत्कारी शक्तियों की अफवाहों के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर :

I. जैसे ही गांधी जी गरीबों और आम लोगों के बीच लोकप्रिय हो गए, उन्होंने उन्हें गांधी बाबा, महाराज या महात्मा के रूप में संदर्भित किया। उनकी चमत्कारी शक्तियों के बारे में कई अफवाहें भी फैलीं जैसे-

II कुछ लोगों ने बताया कि उन्हें राजा द्वारा किसानों की शिकायतों के निवारण के लिए भेजा गया था और उनके पास सभी स्थानीय अधिकारियों के अधिकार को खत्म करने की शक्ति थी।

III. यह भी दावा किया गया था कि गांधी की शक्ति अंग्रेजी सम्राट से बेहतर थी और उनके आगमन के साथ औपनिवेशिक शासक जिले से भाग जाएंगे।

iv. उनका विरोध करने वालों के लिए भयानक परिणाम की कहानियां फैलीं।
V. गांधी की आलोचना करने वालों ने पाया कि उनके घर रहस्यमय तरीके से गिर रहे हैं या उनकी फसलें खराब हो रही हैं।
VI. गांधीजी भारतीय किसानों को एक उद्धारकर्ता के रूप में दिखाई दिए, जो उन्हें उच्च करों और दमनकारी अधिकारियों से बचा सकते थे और उनके जीवन में गरिमा और स्वायत्तता बहाल कर सकते थे।

प्रश्न 14. गोलमेज सम्मेलनों पर एक संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर: पहला गोलमेज सम्मेलन नवंबर 1930 में लंदन में आयोजित किया गया था, लेकिन प्रमुख भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं की अनुपस्थिति के कारण यह बिना किसी सार्थक निर्णय के समाप्त हो गया।
महात्मा गांधी ने "निम्न जातियों" के लिए अलग निर्वाचक मंडल की मांग का विरोध किया। उनका मानना था कि यह मुख्यधारा के समाज में उनके एकीकरण को रोक देगा और उन्हें अन्य जाति हिंदुओं से स्थायी रूप से अलग कर देगा।

1931 के उत्तरार्ध में लंदन में एक दूसरा गोलमेज सम्मेलन आयोजित किया गया था। गांधीजी ने कांग्रेस का प्रतिनिधित्व किया और दावा किया कि उनकी पार्टी पूरे भारत का प्रतिनिधित्व करती है। लेकिन तीन पक्षों, मुस्लिम लीग, राजकुमारों और वकील विचारक बी.आर. अम्बेडकर ने उस दावे का विरोध किया। लंदन में सम्मेलन अनिर्णायक था, इसलिए गांधी भारत लौट आए और 1932 के सविनय अवज्ञा आंदोलन में फिर से शुरू हुए।
तीसरा गोलमेज सम्मेलन भी लंदन में हुआ जिसमें कांग्रेस ने भाग नहीं लिया।

प्रश्न 15. भारत में 1935 से 1945 के बीच हुई प्रमुख घटनाओं के बारे में लिखिए।

उत्तर:

I. वर्ष 1935 में भारत सरकार अधिनियम 1935 पारित हुआ, जिसमें एक प्रकार की प्रतिनिधि सरकार का वादा किया गया था।
II 1937 में, पहली बार सीमित मताधिकार पर चुनाव हुए और कांग्रेस पार्टी के पास विधायिका में बहुमत था। उसने 11 में से 8 प्रांतों में चुनाव जीता।
III. 1939 में, द्वितीय विश्व युद्ध छिड़ गया और भारतीय नेताओं ने अंग्रेजों का समर्थन करने के लिए इस शर्त पर करने की सहमति दी कि अँग्रेज़ युद्ध के बाद भारत को स्वतंत्रता देने का वादा करें। प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया गया और अक्टूबर 1939 में कांग्रेस के मंत्रिमंडलों ने इस्तीफा दे दिया।
IV. युद्ध समाप्त होने के बाद स्वतंत्रता का वादा करने के लिए अंग्रेजों पर दबाव बनाने के लिए कांग्रेस द्वारा व्यक्तिगत सत्याग्रह की एक श्रृंखला आरम्भ किया गया।
V. मार्च 1940 में, मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए एक अलग राष्ट्र बनाने की मांग और योजना बनाने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया।
VI. 1942 में, राष्ट्रवादी आंदोलन के निरंतर प्रसार से चिंतित इंग्लैंड के प्रधान मंत्री विंस्टन चर्चिल ने गांधी और कांग्रेस के साथ समझौता करने की कोशिश करने के लिए सर स्टैफोर्ड क्रिप्स को भारत भेजा।
VII. क्रिप्स मिशन विफल हो गया क्योंकि भारत को स्वतंत्रता प्रदान करने के लिए कोई समझौता नहीं किया जा सका।
VII.I अगस्त 1942 में, भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया गया।

प्रश्न 16. भारत छोड़ो आंदोलन के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर:

I. क्रिप्स मिशन की विफलता के बाद, महात्मा गांधी द्वारा 8 अगस्त 1942 को भारत छोड़ो आंदोलन शुरू किया गया।

II. यह ब्रिटिश शासन के खिलाफ तीसरा बड़ा आंदोलन था। लेकिन अगले दिन गांधीजी और अन्य महत्वपूर्ण नेताओं को गिरफ्तार कर जेल में बंद कर दिया गया।

लेकिन आन्दोलन जयप्रकाश नारायण जैसे अन्य समाजवादी नेताओं के नेतृत्व में फैलता गया। उन्होंने पूरे देश में हड़तालों और तोड़फोड़ के कृत्यों का आयोजन किया।

यह एक जन आंदोलन था जिसमें हजारों छात्र और आम भारतीय स्वतंत्रता के लिए एक साथ शामिल हुए।

iii.. कई जिलों में स्वतंत्र सरकारें घोषित की गईं, जैसे पश्चिम में सतारा और पूर्व में मिदनापुर।

iv. 1943 में, महाराष्ट्र के सतारा जिले में कुछ युवा नेताओं ने समानांतर सरकार (प्रतिसरकार) की स्थापना की, जिसमें स्वयंसेवी दल और ग्राम इकाइयां (तूफान दल) शामिल थीं। वे लोगों के दरबार चलाते थे और रचनात्मक कार्य करते थे।

प्रश्न 17. वर्ष 1945-47 में प्रमुख घटनाक्रम क्या थे?

उत्तर:

I. 1945 में ब्रिटेन में लेबर पार्टी सरकार सत्ता में आई। यह भारतीय स्वतंत्रता के लिए प्रतिबद्ध था।

II. भारत में, वायसराय लॉर्ड वेवेल ने कांग्रेस और मुस्लिम लीग के साथ बातचीत की।

III. 1946 की शुरुआत में, प्रांतीय विधायी चुनाव हुए जिसमें कांग्रेस ने सामान्य सीटें जीतीं और लीग ने आरक्षित निर्वाचन क्षेत्रों में जीत हासिल की।

IV. 1946 की गर्मियों में एक कैबिनेट मिशन भेजा गया था, जो कांग्रेस और लीग के बीच आम सहमति बनाने में विफल रहा।

V जिन्ना ने 16 अगस्त 1946 को पाकिस्तान के लिए लीग की मांग को मजबूर करने के लिए "प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस" का आह्वान किया, जिससे भारत के कई हिस्सों में खूनी दंगे हुए।

VI. फरवरी 1947 में, लॉर्ड माउंट बैटन को वायसराय के रूप में नियुक्त किया गया। उन्होंने भी अनिर्णायक वार्ता की और उन्होंने घोषणा की कि भारत को मुक्त कर दिया जाएगा, लेकिन यह भी विभाजित हो जाएगा। सत्ता का औपचारिक हस्तांतरण 15 अगस्त के लिए तय किया गया था।

प्रश्न 18. महात्मा गांधी के अंतिम बहादुराना दिनों के बारे में आप क्या जानते हैं?

उत्तर:

I. महात्मा गांधी ने 15 अगस्त 1947 को दिल्ली में स्वतंत्रता दिवस समारोह में भाग लेने से इनकार कर दिया था।

II वह कलकत्ता में थे। वह कलकत्ता में किसी समारोह में शामिल नहीं हुए और न ही झंडा फहराया। जिस आजादी के लिए उन्होंने इतने लंबे समय तक संघर्ष किया था, वह विभाजित राष्ट्र के साथ अस्वीकार्य कीमत पर आई थी। गांधी ने 24 घंटे के उपवास के रखा।

III. गांधी जी ने अस्पतालों और धार्मिक शिविरों में घूम-घूम कर व्यथित लोगों को सांत्वना दी।

IV. गांधीजी ने आजाद और अखंड भारत के लिए आजीवन लड़ाई लड़ी थी। जब देश का विभाजन हुआ, तो उन्होंने आग्रह किया कि दोनों भाग एक दूसरे का सम्मान करें और मित्रता करें।

V. 30 जनवरी 1948 को, गांधीजी की नाथूराम गोडसे ने गोली मारकर हत्या कर दी थी, जिन्होंने गांधीजी को "मुसलमानों का खुशामदी" कहकर आलोचना करता था।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (8 अंक)

प्रश्न 19. गांधी जी को भारत में जननेता बनने में किन कारकों ने योगदान दिया?

उत्तर : 1915 से 1947 के बीच की अवधि को भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में गांधीवादी युग के रूप में जाना जाता है। गांधीजी ने राष्ट्रवादी आंदोलन को जन आंदोलन में बदल दिया था। उनके गुण उन्हें आम लोगों का नेता बनाते हैं जैसे-

I. सादगी: गांधीजी व्यापारी समुदाय से थे और पेशे से वकील थे लेकिन वे एक आम व्यक्ति की तरह रहते थे। उनके कपड़े एक आम आदमी की तरह थे और उनकी भाषा बोलते थे इसलिए लोगों ने उनकी सराहना की।
2. गरीबों की समस्याओं की चिंता: बीएचयू में दिए अपने पहले भाषण में उन्होंने याद दिलाया कि भारत की बहुसंख्यक आबादी वाले किसान और मजदूर यहां मौजूद नहीं हैं। भारतीय राष्ट्रवाद को भारतीय जनता का प्रतिनिधि बनाना गांधीजी की इच्छा थी।
3. आत्मनिर्भरता: उन्होंने हर दिन का कुछ हिस्सा चरखे पर काम करने में बिताया और अन्य राष्ट्रवादियों को भी ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने अपनी पहचान आम आदमी से की। यह उनकी पोशाक में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होता था, जबकि अन्य राष्ट्रवादी नेता औपचारिक रूप से पश्चिमी सूट या भारतीय बंदगला पहनते थे, गांधीजी एक साधारण धोती या लंगोटी में लोगों के बीच गए।
4. नया राजनीतिक ढांचा: गांधीजी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन का आधार विस्तृत हुआ।
उन्होंने कांग्रेस संगठन में बदलाव लाए। भारत के विभिन्न भागों में कांग्रेस की नई शाखाएँ स्थापित की गईं।
5. देशी रियासतों में राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के लिए प्रजामंडलों की स्थापना की गई। कांग्रेस की प्रांतीय समितियाँ ब्रिटिश प्रशासन द्वारा स्थापित कृत्रिम सीमाओं के बजाय भाषाई विभाजन पर आधारित थीं। गांधीजी ने राष्ट्रवादी संदेश को अंग्रेजी के बजाय मातृभाषा में फैलाने की वकालत की।
6. समाज सुधारक: गांधीजी जितने राजनेता थे उतने ही समाज सुधारक भी थे। उन्होंने बाल विवाह और छुआछूत जैसी सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए कदम उठाए। उन्होंने हिंदू मुस्लिम सद्भाव पर जोर दिया।
7. अमीर और गरीब द्वारा समर्थित: गांधीजी की सादगी और भाषण ने न केवल गरीब व्यक्ति बल्कि धनी उद्योगपति और कुलीन वर्ग को आकर्षित किया। कई उद्योगपति हालांकि यह मानते हैं कि स्वतंत्र भारत में उन्हें अधिक लाभ होगा इसलिए वे भारतीय उद्यमियों के रूप में कांग्रेस में शामिल हो गए। उदाहरण के लिए जीडी बिड़ला ने राष्ट्रीय आंदोलन का खुलकर समर्थन किया। अत्यधिक प्रतिभाशाली भारतीयों ने खुद को गांधीजी से जोड़ा।

प्रश्न 20. सविनय अवज्ञा आंदोलन के क्या प्रभाव और महत्व थे?

उत्तर:
I. 6 अप्रैल को गांधीजी हजार लोगों के साथ दांडी पहुंचे और मुट्ठी भर नमक बनाया और कानून तोड़ा।
II नमक कानून के टूटने के साथ ही भारत के विभिन्न हिस्सों में असहयोग आंदोलन की तरह एक बड़ा विरोध शुरू हो गया।
III. कई जगहों पर लोगों ने नमक बनाना शुरू कर दिया।
IV वन लोगों ने औपनिवेशिक वन कानूनों को तोड़ा और लकड़ियों को इकट्ठा करना शुरू कर दिया।
V. कारखाने के कर्मचारी हड़ताल पर चले गए जबकि वकीलों ने ब्रिटिश अदालतों का बहिष्कार किया और छात्रों ने सरकार द्वारा संचालित शैक्षणिक संस्थानों में जाने से इनकार कर दिया।
VI. शासकों ने विरोध करने वालों को हिरासत में लेकर जवाब दिया। गांधीजी सहित लगभग 60,000 भारतीयों को गिरफ्तार किया गया था।

महत्व

नमक मार्च कम से कम तीन कारणों से उल्लेखनीय था।
I. सबसे पहले, इस घटना ने दुनिया का ध्यान आकर्षित किया। दांडी मार्च यूरोपीय और अमेरिकी प्रेस द्वारा व्यापक रूप से कवर किया गया था।
II दूसरे, यह पहली राष्ट्रवादी गतिविधि थी जिसमें महिलाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। समाजवादी कार्यकर्ता कमलादेवी चट्टोपाध्याय ने गांधी को मना लिया था कि विरोध को केवल पुरुषों तक ही सीमित न रखें। उसने खुद नमक और शराब कानून तोड़कर गिरफ्तारी दी।
III. तीसरा, इसने अंग्रेजों को यह एहसास कराया कि उनका शासन हमेशा के लिए नहीं रहेगा, और उन्हें भारतीयों के साथ कुछ शक्ति साझा करनी होगी। उसी पर चर्चा करने के लिए अंग्रेजों ने लंदन में गोलमेज सम्मेलन आयोजित करने का प्रयास किया।

स्रोत आधारित प्रश्न

1. गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और सही विकल्प चुनकर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए:
मुझे जिस चीज पर आपत्ति है, वह है मशीनरी का क्रेज। दीवानगी उस चीज के लिए है जिसे वे मजदूर बचाने वाली मशीनरी कहते हैं। पुरुष "श्रम बचाने" पर जाते हैं, जब तक कि हजारों बिना काम के होते हैं और भूख से मरने के लिए खुली सड़कों पर फेंक दिए जाते हैं। मैं मानव जाति के एक अंश के लिए नहीं, बल्कि सभी के लिए समय और श्रम बचाना चाहता हूं; मैं चाहता हूं कि दौलत का केंद्रीकरण चंद लोगों के हाथ में नहीं बल्कि सबके हाथों में हो।

युवा भारत, 13 नवंबर 1924 महात्मा गांधी और राष्ट्रवादी आंदोलन

प्रश्न 1. ये किसके शब्द हैं?
(A) महात्मा गांधी
(b) जवाहरलाल नेहरू
(c) सरदार वल्लभभाई पटेल
(d) मौलाना अब्दुल कलामी
उत्तर: विकल्प (a) सही है।
प्रश्न 2. ये शब्द किस संदर्भ में कहे गए हैं?
(A) दांडी मार्च को लोकप्रिय बनाना
(b) सफेद कपड़ों के उपयोग को लोकप्रिय बनाना
(c) चरखे के उपयोग को लोकप्रिय बनाना
(d) प्रसार के लिए भारतीय रेलवे के उपयोग को लोकप्रिय बनाना
उत्तर। विकल्प (c) सही है।
व्याख्या: गांधीजी का मानना था कि मशीन को मनुष्य के अंगों को शोषित करने की प्रवृत्ति नहीं रखनी चाहिए। पुरुषों की जगह मशीनों ने ले ली और इस तरह आधुनिक समाज में काम की भारी कमी है।
प्र.3. इस मार्ग में उल्लिखित उसका उद्देश्य क्या था?
(a) गरीबों को आत्मनिर्भर बनाना
(b) गरीबों को पूरक आय प्रदान करना
(c) गरीबों की सेवा के लिए मशीनरी का उपयोग करना
(d) ये सभी
उत्तर। विकल्प (d) सही है।
व्याख्या: महात्मा गांधी मशीनों के आलोचक थे क्योंकि मशीनों ने इंसानों को गुलाम बनाया और मजदूरों को विस्थापित किया. उन्होंने मशीनों को इस दलील पर उचित नहीं माना कि उन्होंने श्रम बचाया। उन्होंने कहा कि मशीनों की वजह से हजारों लोग बेरोजगार हो गए हैं.
प्र. 4. इससे पता चलता है कि स्पीकर के पक्ष में था
(a) समाजवाद (b) पूंजीवाद
(c) साम्यवाद (d) ये सभी
उत्तर: विकल्प (a) सही है।
व्याख्या: समाजवाद एक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था है जहां समुदाय या राज्य उत्पादन के सामान्य साधनों (यानी खेतों, कारखानों, औजारों और कच्चे माल) का मालिक होता है। समाजवादियों का मानना है कि समाज में सब कुछ लोगों और नागरिकों के सहयोगात्मक प्रयासों से बनता है।

2.

चित्र को ध्यान से देखिए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Q. 1. चित्र में किस घटना को दर्शाया गया है?

(a) पहला गोलमेज सम्मेलन

(b) दूसरा गोलमेज सम्मेलन

(c) संयुक्त राष्ट्र संगठन की बैठक

(d) संविधान सभा की बैठक

उत्तर: विकल्प (b) सही है।

व्याख्या: 1931 में, महात्मा गांधी ने भारत में संवैधानिक सुधार पर चर्चा करने के लिए लंदन में दूसरे गोलमेज सम्मेलन में भाग लिया.

प्रश्न 2. इस घटना से ठीक पहले कौन सी घटना हुई?

(a) भारत छोड़ो आंदोलन

(b) साइमन गो बैक

(c) जलियांवाला बाग नरसंहार

(d) गांधी इरविन पैक्ट

उत्तर। विकल्प (d) सही है।

Q.3. इस घटना के तुरंत बाद किसे भारत का नया वायसराय नियुक्त किया गया?

(ए) लॉर्ड कॉर्नवालिस (बी) लॉर्ड विलिंगडन

(सी) लॉर्ड वेलेस्ली (डी) लॉर्ड माउंटबेटन

उत्तर: विकल्प (b) सही है।

प्र. 4. इनमें से किस व्यक्ति ने गांधी को संपूर्ण भारत के प्रतिनिधि के रूप में चुनौती दी?

(a) जवाहर लाल नेहरू

(b) नेताजी सुभाष चंद्र बोस

(c) बी. आर. अंबेडकर

(d) बाल गंगाधर तिलक

उत्तर: विकल्प (c) सही है।

समय रेखा
वर्ष की घटनाएं

1885 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस (आईएनए) की स्थापना ए.ओ. ह्यूम द्वारा
1893 महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका गए
1885-1905 उदारवादी युग
1905-1907 स्वदेशी आंदोलन
1906-मुस्लिम लीग की स्थापना
9 जनवरी, 1915- महात्मा गांधी दक्षिण अफ्रीका से लौटे
फरवरी, 1916: महात्मा गांधी ने बीएचयू में अपना भाषण दिया
1917: चंपारण आंदोलन
1918: अहमदाबाद में मिल मजदूरों का आंदोलन और खेड़ा (गुजरात) में किसान आंदोलन
1919: रॉलेट सत्याग्रह (मार्च-अप्रैल)
13 अप्रैल, 1919: जलियांवाला बाग हत्याकांड (अप्रैल)
1920: खिलाफत आंदोलन मुहम्मद अली और शौकत अली के नेतृत्व में।
1921: असहयोग आन्दोलन
5 फरवरी, 1922: चौरी-चौरा की घटना (गोरखपुर के पास) के कारण असहयोग आन्दोलन को रद्द कर दिया गया
मार्च 1922: महात्मा गांधी ने न्यायाधीश सी.एन. ब्रूमफील्ड द्वारा देशद्रोह के आरोप में 6 साल के कारावास की घोषणा की।
1928: साइमन कमीशन भारत में पहुंचा और इस श्वेत आयोग के खिलाफ अखिल भारतीय अभियान चलाया
1928: सरदार पटेल और महात्मा गांधीजी के नेतृत्व में बारडोली में किसान आंदोलन।
1929: "पूर्ण स्वराज" को लाहौर कांग्रेस (दिसंबर) में कांग्रेस के लक्ष्य के रूप में स्वीकार किया गया
1930: दांडी मार्च (12, मार्च1930 से 6 अप्रैल 1930) सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू. लंदन में आयोजित पहला गोलमेज सम्मेलन
1931: गांधी-इरविन समझौता (मार्च); दूसरा गोलमेज सम्मेलन (दिसंबर)
1932: सविनय अवज्ञा आंदोलन फिर से शुरू किया, पूना समझौता अम्बेडकर और गांधी जी के बीच
1935: भारत सरकार अधिनियम प्रतिनिधि सरकार का वादा करता है
1937: चुनाव हुए और कांग्रेस ने 11 प्रांतों में से 8 प्रांतों में सरकार बनाई।
अक्तूबर, 1939: द्वितीय विश्व युद्ध के कारण कांग्रेस के मंत्रियों ने इस्तीफा दे दिया।
1940: मुस्लिम बहुल क्षेत्र के लिए अलग राष्ट्र के लिए मुस्लिम लीग का प्रस्ताव, व्यक्तिगत सत्याग्रह कांग्रेस द्वारा शुरू किया गया
1942: भारत छोड़ो आंदोलन शुरू (अगस्त), क्रिप्स मिशन
1943: सतारा (महाराष्ट्र) और पश्चिम बंगाल में मिदनापुर में समानांतर सरकार
1945: ब्रिटेन में लेबर सरकार सत्ता में आई और लॉर्ड वेवेल गवर्नर बने
1946: कैबिनेट मिशन योजना भारत यात्रा, 16 अगस्त को लीग द्वारा प्रत्यक्ष कार्रवाई दिवस घोषित किया गया। महात्मा गांधी ने सांप्रदायिक हिंसा को रोकने के लिए नोआखली और अन्य दंगा प्रभावित क्षेत्रों का दौरा किया
फरवरी, 1947: लॉर्ड माउंटबेटन वायसराय बने, पाकिस्तान और भारत की स्वतंत्रता की घोषणा की
1948: गांधीजी की मृत्यु 30 जनवरी को हुई थी।

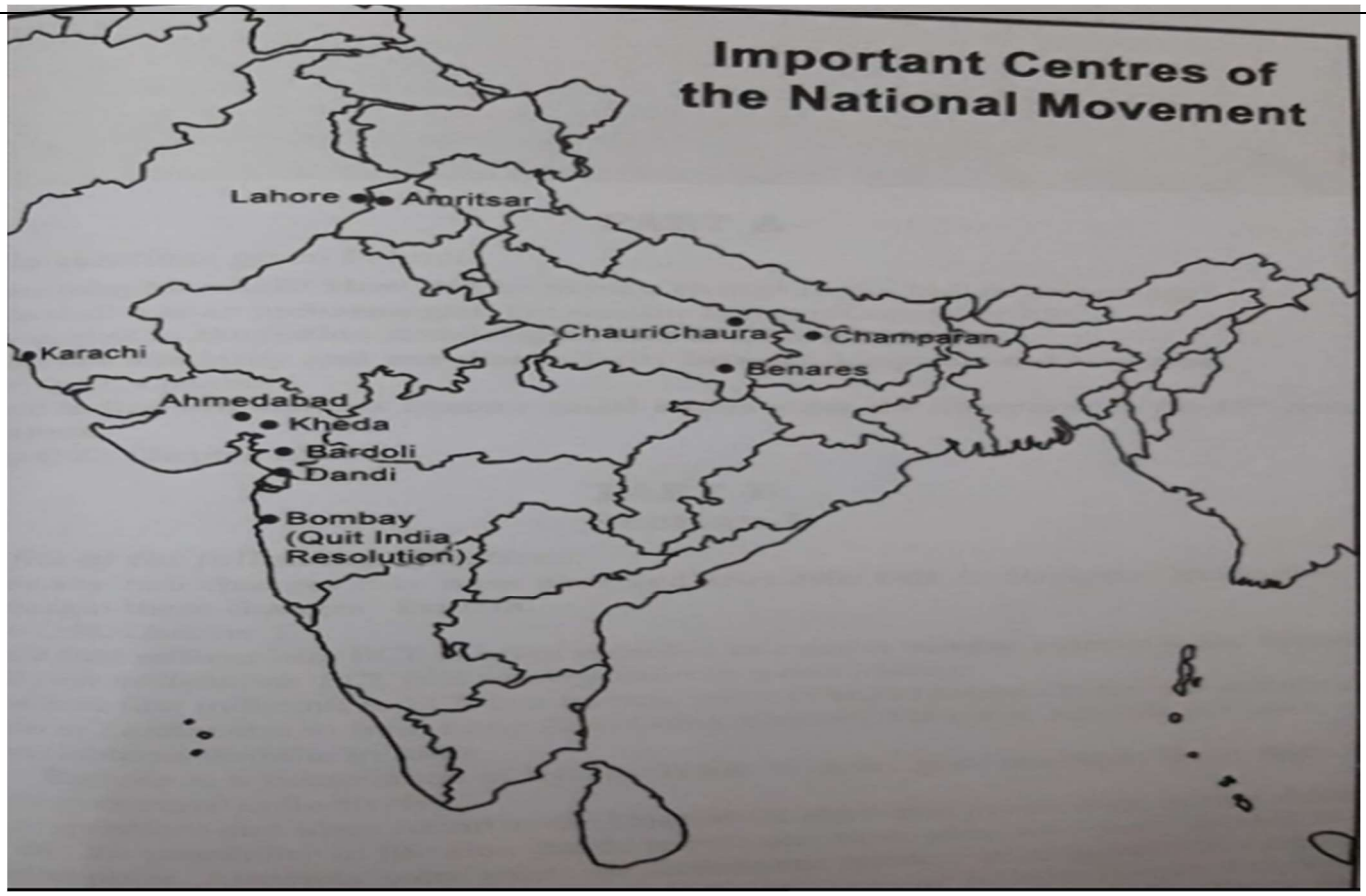
Important Centres of the National Movement
Lahore
Amritsar
Karachi
ChauriChaura
Champaran
Benares
Ahmedabad
Kheda
Bardoli
Dandi
Bombay
(Quit India
Resolution)

विषय-xv
संविधान का निर्माण

श्री नितेश कुमार बर्णवाल
स्ना. शि. (इतिहास) के. वि. धनबाद

संविधान का निर्माण

संक्षेप में मुख्य अवधारणाएँ

- भारतीय संविधान दिसंबर 1946 और नवम्बर 1949 के बीच बनाया गया था।
- भारतीय संविधान 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ।
- संविधान सभा के सदस्यों का चुनाव 1946 के प्रांतीय चुनावों के आधार पर किया गया था।
- संविधान सभा की कुल सदस्य संख्या 300 थी।
- डॉ. बी.आर. अम्बेडकर मसौदा समिति के अध्यक्ष थे, और उन्होंने संविधान सभा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- 13 दिसंबर 1946 को जे एल नेहरू ने संविधान सभा में "उद्देश्य प्रस्ताव" पेश किया।
- जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में अंतरिम सरकार बनाई गई।
- संविधान सभा में केंद्र सरकार और राज्य के विषय पर जोरदार बहस हुई।
- भाषा के मुद्दे पर संविधान सभा के भीतर कई महीनों तक बहस हुई।
- महात्मा गांधी का मानना था कि हर किसी को ऐसी भाषा बोलनी चाहिए जिसे आम आदमी भी समझ सके

<u>वस्तुनिष्ठ प्रश्नोतर (१ अंक)</u>

1. महत्वपूर्ण 'उद्देश्य संकल्प' किसने प्रस्तुत किया था?
   उत्तर. महत्वपूर्ण संकल्प जवाहरलाल नेहरू द्वारा पेश किया गया था।
2. स्वतंत्र भारत का नया संविधान 26 जनवरी 1950 को क्यों स्वीकृत किया गया?
   उत्तर. क्योंकि यह उस ऐतिहासिक दिन की 20वीं वर्षगांठ थी जिस दिन कांग्रेस ने पूर्ण स्वतंत्रता को अपना अंतिम लक्ष्य घोषित किया था।
3. भारतीय संविधान के दो मुख्य विरोध कौन से थे?
   उत्तर. i) यह मुख्य रूप से अंग्रेजी में लिखा जा रहा है।
   ii) इसमें प्रतिष्ठापित किसी भी पद के लिए किसी शैक्षिक योग्यता की आवश्यकता नहीं है।
4. प्रारूप समिति का गठन कब हुआ था? इसके अध्यक्ष कौन थे?
   उत्तर. प्रारूप समिति का गठन 29 अगस्त 1947 को हुआ था। डॉ. बी.आर. अम्बेडकर इसके अध्यक्ष थे।
5. संविधान सभा का गठन कब और किस योजना के तहत हुआ था?
   उत्तर. संविधान सभा का गठन अक्टूबर 1946 में हुआ था कैबिनेट मिशन योजना के अनुसार।
6. अखिल भारतीय राज्यों का प्रथम जनसम्मेलन अधिवेशन कब और किसकी अध्यक्षता में आयोजित किया गया था?

उत्तर. अखिल भारतीय रियासतों के जन सम्मेलन का प्रथम अधिवेशन 1927 में एलौर के प्रसिद्ध नेता दीवान बहादुर, एम रामचन रााय की अध्यक्षता में आयोजित किया गया था?

7. केंद्र में नेवी ब्लू में एक पहिया के साथ, भारत के राष्ट्रीय ध्वज को "केसरिया, सफेद और गहरे हरे रंग के समान अनुपात में क्षैतिज तिरंगा" प्रस्तावित करने का प्रस्ताव किसने रखा था?

उत्तर. जे एल नेहरू

8. बी. एन. राव ने संविधान सभा में किस हैसियत से काम किया?

उत्तर. भारत सरकार के संवैधानिक सलाहकार।

9. 27 अगस्त 1947 को _____ ने मुसलमानों के लिए अलग निर्वाचक मंडल जारी रखने के लिए एक शक्तिशाली दलील दी।

उत्तर. बी पोकर बहादुर

10. कौन चाहता था कि हिंदी को राजभाषा नहीं, बल्कि राष्ट्रभाषा घोषित किया जाए.?

उत्तर. आर वी धुलेकर

11. संविधान सभा के अध्यक्ष कौन थे ?

उत्तर. राजेन्द्र प्रसाद

12. वह समाजवादी नेता कौन था जो किसान नेता और संविधान सभा का सदस्य था?

उत्तर. एनजी रंगा

13. संविधान सभा में आदिवासियों के प्रतिनिधि थे-

उत्तर. जयपाल सिंह

14. कौन से नेता हिन्दी को राष्ट्रभाषा घोषित करने के विरुद्ध थे-

उत्तर. श्रीमती जी दुर्गाबाई और श्री शंकर राव देव

15. संविधान सभा का गठन किया गया था-

उत्तर. 1946

16. संविधान की प्रारूप समिति के अध्यक्ष कौन थे ?

उत्तर. बीआर अंबेडकर

17. संविधान सभा के सदस्य कौन थे:

उत्तर. विभिन्न प्रांतों के विधानमंडलों द्वारा चुने गए और देशी राज्यों के शासकों द्वारा मनोनीत

18. गांधीजी ने निम्नलिखित में से किस भाषा को राष्ट्रभाषा के रूप में पसंद किया?

उत्तर. हिंदुस्तानी

लघु प्रश्नोतर (3 अंक)

19. महात्मा गांधी ने क्यों सोचा कि हिंदुस्तानी राष्ट्रभाषा होनी चाहिए?***

उत्तर. 1950 के दशक तक, कांग्रेस ने स्वीकार कर लिया था कि हिंदुस्तानी को राष्ट्रभाषा होना चाहिए।

a) महात्मा गांधी का मानना था कि सभी को ऐसी भाषा बोलनी चाहिए जिसे आम लोग आसानी से समझ सकें।

b) हिंदुस्तानी - हिंदी और उर्दू का मिश्रण - भारत के लोगों के एक बड़े वर्ग की एक लोकप्रिय भाषा थी, और यह विविध संस्कृतियों की बातचीत से समृद्ध एक समग्र भाषा थी। वर्षों से इसमें बहुत से अलग-अलग स्रोतों से शब्दों और शब्दों को शामिल किया गया था, और इसलिए इसे विभिन्न क्षेत्रों के लोगों द्वारा समझा गया था।

c) यह बहु-सांस्कृतिक भाषा, महात्मा गांधी ने सोचा था कि विविध समुदायों के बीच संचार की आदर्श भाषा होगी।

d) यह हिंदुओं और मुसलमानों और उत्तर और दक्षिण के लोगों को एकजुट कर सकता है।

20. व्याख्या करें कि संविधान सभा ने भारत के लोगों की विविधता और उनकी राय को कैसे प्रतिबिंबित किया।***

उत्तर. संविधान सभा के सदस्यों का चुनाव 1946 में प्रांतीय चुनावों के आधार पर हुआ था। संविधान सभा में रियासतों के प्रतिनिधियों के अलावा ब्रिटिश प्रांतों के सदस्य भी शामिल थे। उन्हें शामिल किया गया था क्योंकि कई रियासतें एक-एक करके भारतीय संघ का हिस्सा बन गई थीं। मुस्लिम लीग, भारत की स्वतंत्रता से पहले, संविधान सभा की बैठकों का बहिष्कार करती थी। तो उस समय, संविधान सभा में केवल एक राजनीतिक दल का प्रभुत्व था जो कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस है। संविधान सभा के 82% सदस्य कांग्रेस-पुरुष थे। कांग्रेस अपने आप में एक बहुत बड़ी और व्यापक ताकत थी। इसके सदस्यों ने विभिन्न मुद्दों के बारे में अलग-अलग विचार रखे। उनमें से कई नास्तिक या धर्मनिरपेक्ष थे। संविधान सभा के कुछ सदस्य आर.एस.एस. या हिंदू महासभा। आर्थिक रूप से कहा जाए तो कुछ सदस्यों का समाजवादी झुकाव था और अन्य बड़े जमींदारों और जमींदारों के पक्षधर थे।

21. लोगों द्वारा व्यक्त किए गए मतों से संविधान सभा के भीतर की चर्चाएँ किस प्रकार प्रभावित हुईं? व्याख्या करना।***

उत्तर. संविधान सभा के भीतर की चर्चाएँ भी जनमत से प्रभावित थीं। अखबारों में अलग-अलग तबकों के तर्क छपे और सभी प्रस्तावों पर सार्वजनिक बहस हुई। इस तरह, प्रक्रिया में आलोचना और प्रति-आलोचना का उस आम सहमति पर बहुत प्रभाव पड़ा जो अंततः विशिष्ट मुद्दों पर पहुंची थी। सामूहिक भागीदारी की भावना पैदा करने के लिए जनता से भी निवेदन करने को कहा गया। सैकड़ों प्रतिक्रियाएं आईं। धार्मिक अल्पसंख्यकों ने विशेष सुरक्षा उपायों की भी मांग की।

22. पृथक निर्वाचक मंडल की समस्या एक जटिल समस्या थी जिसका सामना संविधान सभा को करना पड़ा। इस मुद्दे पर विधानसभा में हुई बहस पर चर्चा करें।**

उत्तर. पृथक निर्वाचक मंडल के पक्ष में तर्क

a) यह एक राजनीतिक ढांचा है जिसमें अल्पसंख्यक बहुसंख्यक लोगों के साथ सद्भाव से रह सकते हैं।

b) यह एक ऐसी व्यवस्था है जो विभिन्न समुदायों के बीच मतभेदों को कम कर सकती है।

c) यह देश की राजनीतिक व्यवस्था में अल्पसंख्यकों को अच्छा प्रतिनिधित्व प्रदान कर सकता है।

d) यह दूसरों को अल्पसंख्यक की आवाज सुनने और उसके विचारों और मतों को ध्यान में रखने में सक्षम बनाता है।

e) केवल अल्पसंख्यक लोग ही अपना सच्चा प्रतिनिधि चुन सकते हैं।

पृथक निर्वाचिका के विरुद्ध तर्क:-

a) यह लोगों को विभाजित करने के लिए विदेशी शासकों द्वारा जानबूझकर शुरू किया गया एक उपाय था।

b) इससे दंगे, हिंसा और गृहयुद्ध हो सकते हैं।

c) यह किसी भी राजनीतिक व्यवस्था में जहर है।

d) यह देश को विभाजित करता है और रक्तपात का कारण बनता है क्योंकि एक समुदाय दूसरे समुदाय के खिलाफ हो जाता है।

e) यह अंग्रेजों द्वारा छोड़ी गई शरारत है।

f) यह न केवल राष्ट्र के लिए बल्कि अल्पसंख्यकों के लिए भी हानिकारक है। यह अल्पसंख्यकों के लिए आत्मघाती है।

दीर्घ प्रश्नोतर (8 अंक)

23. संविधान सभा का गठन कैसे किया गया था? इस सभा ने पूरे देश का प्रतिनिधित्व किया, फिर यह एक दल का समूह क्यों बन गया?*

उत्तर. संविधान सभा के सदस्य 1946 में हुए प्रांतीय चुनावों के आधार पर चुने गए थे। इसमें न केवल ब्रिटिश प्रांतों से बल्कि भारत की रियासतों से भी सदस्य शामिल थे। रियासतों के सदस्यों को विधानसभा में शामिल किया गया था क्योंकि अधिकांश रियासतों का भारत में विलय हो चुका था।

a) संविधान सभा में पूरे देश के लोकप्रिय नेता शामिल थे। पं. जवाहरलाल नेहरू, डॉ राजिंदर प्रसाद, सरदार पटेल और मौलाना अबुल कलाम आज़ाद भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सदस्य थे। जो सदस्य अन्य राजनीतिक दलों से थे उनमें डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, डॉ श्यामा प्रसाद मुखर्जी और फ्रैंक एंथोनी। सरोजिनी नायडू और विजय लक्ष्मी पंडित जैसी कुछ महिला सदस्य भी थीं।

b) इस प्रकार, संविधान सभा ने मूल रूप से पूरे देश का प्रतिनिधित्व किया लेकिन मुस्लिम लीग ने अपनी शुरुआती बैठकों का बहिष्कार किया। मुस्लिम लीग के सदस्यों की अनुपस्थिति के कारण, संविधान सभा में मुख्य रूप से कांग्रेस पार्टी के सदस्य थे। संविधान सभा के 82% सदस्य कांग्रेस-पुरुष थे। इस प्रकार, यह कहना सही है कि यद्यपि संविधान सभा ने पूरे देश का प्रतिनिधित्व किया था, फिर भी इसमें ज्यादातर कांग्रेस पार्टी के सदस्य थे।

24. भारतीय संविधान के निर्माण में किन्हीं चार प्रमुख मुद्दों का परीक्षण करें।**

उत्तर. भारतीय संविधान का निर्माण कई विषयों या मुद्दों से बहुत प्रभावित था। ये मुद्दे ऐसे थे जिनके बिना वास्तविक लोकतंत्र की स्थापना संभव नहीं थी। इन महत्वपूर्ण मुद्दों में से प्रमुख इस प्रकार थे:

a) राजनीतिक समानता और सामाजिक-आर्थिक न्याय सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार का अधिकार राजनीतिक समानता का प्रतीक था। हालाँकि, यह राजनीतिक समानता सामाजिक और आर्थिक न्याय के बिना अधूरी थी। इसलिए, सामाजिक और आर्थिक भेदभाव को समाप्त करना आवश्यक था।

b) दलितों और अछूतों से संबंधित मुद्दे। दलितों और अछूतों के उत्थान के लिए विशेष संरक्षण देना आवश्यक था। अनुसूचित जनजातियों के लिए भी यही आवश्यक था।

c) केंद्रीकृत संघ: राष्ट्र की एकता और अखंडता को बनाए रखने के लिए एक मजबूत केंद्र वाली संघीय सरकार की स्थापना की गई थी। यह संघ अनेकता में एकता का प्रतीक था।

25. भारतीय संविधान आज भी भारतीय लोगों को क्यों स्वीकार्य है?**

उत्तर.

a) भारतीय संविधान सभी को स्वीकार्य है क्योंकि यह एक व्यापक सहमति पर आधारित था और केवल मसौदा समिति के विचारों को प्रतिबिंबित नहीं करता था।

b) भले ही उस समय कोई सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार नहीं था। संविधान सभा में सभी क्षेत्रों और समुदायों के लोग शामिल थे, जिसने इसे लघु भारत बना दिया।

c) मौलाना आज़ाद जैसे प्रतिष्ठित लोगों और सरोजिनी नायडू जैसी महिलाओं ने सभी जातियों और पंथों के लोगों की तरह संविधान सभा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

d) इसके अलावा, संविधान सभा ने व्यवस्थित और खुले तरीके से काम किया।

e) बुनियादी सिद्धांतों पर सहमति बनी, फिर चर्चा के लिए एक मसौदा संविधान तैयार किया गया।

f) संविधान के मसौदे को अंतिम रूप देने से पहले लगभग 3 वर्षों तक खंड दर खंड विस्तृत चर्चा की गई थी।

g) प्रत्येक व्यक्ति अनुसरण करने के लिए स्वतंत्र है। अपने स्वयं के धर्म का प्रचार, या प्रचार करें। कोई राज्य धर्म नहीं है।

26. अल्पसंख्यक शब्द को विभिन्न समूहों द्वारा कैसे परिभाषित किया गया?**

उत्तर. अल्पसंख्यक शब्द को विभिन्न समूहों द्वारा निम्नलिखित तरीकों से परिभाषित किया गया था:

a) अम्बेडकर ने अल्पसंख्यक जातियों के लिए अलग समूह की मांग की।

b) तथाकथित पाकिस्तान में रहने वाले हिंदुओं और सिखों को नहीं माना जाता था
अल्पसंख्यक जाति।

c) सदस्यों ने अल्पसंख्यक की ओर से प्रतिनिधित्व की मांग की
संविधान।

d) नागप्पा ने हरिजनों के लिए अल्पसंख्यक दर्जे की मांग की।

e) अम्बेडकर ने अल्पसंख्यकों के लिए अलग संविधान की मांग की।

27. संविधान सभा के समक्ष "भाषा विवाद क्या था और कैसे
क्या इसने विवाद को सुलझाना चाहा?***

उत्तर.

भाषा विवाद:

-हिंदुस्तानी (हिंदी+उर्दू) साम्प्रदायिक पार्टियों के कारण अलग होने लगी। सांप्रदायिक पहचान के लिए भाषा का राजनीतिकरण हो गया।

-आर.वी. धुलकर ने हिंदी को संविधान की भाषा बनाए जाने का समर्थन किया।

-इसने संविधान सभा में हंगामा खड़ा कर दिया जिसकी मध्यस्थता पं. जवाहर लाल नेहरू।

समाधान:

-हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए धीमी गति से आगे बढ़े।

-कुछ समर्थित आधिकारिक कार्य अंग्रेजी में 15 वर्षों तक जारी रहेंगे।

- संविधान और प्रांतों के लागू होने के बाद दैनिक कार्य के लिए क्षेत्रीय भाषा का चयन करना।

-संविधान सभा: मैं। हिंदी - राष्ट्रभाषा नहीं। द्वितीय। लेकिन राजभाषा

28. उद्देश्य संकल्प क्या था? उद्देश्य संकल्प में व्यक्त किए गए आदर्श क्या थे?***

उत्तर. यह जवाहरलाल नेहरू थे, जिन्होंने 13 दिसंबर, 1946 को संविधान सभा में उद्देश्य प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। उन्होंने प्रस्तावित किया कि भारत का राष्ट्रीय ध्वज "केसरिया, सफेद और गहरे हरे रंग का समान अनुपात में क्षैतिज तिरंगा" होना चाहिए, जिसमें गहरे नीले रंग का एक पहिया हो। केंद्र। इसने संविधान के आदर्शों और उद्देश्यों को रेखांकित और परिभाषित किया जो इस प्रकार हैं:

a) भारत को स्वतंत्र संप्रभु गणराज्य घोषित किया गया।

b) इसने अपने सभी नागरिकों को न्याय, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व का आश्वासन दिया।

c) इसने अल्पसंख्यकों को पर्याप्त सुरक्षा प्रदान की।

d) यह पिछड़े और दबे हुए वर्गों की भलाई के लिए संदर्भित है।

e) भारत लोकतंत्र के उदारवादी विचारों को आर्थिक न्याय के समाजवादी विचार के साथ जोड़ देगा।

f) भारत सरकार के उस रूप को अपनाएगा जो लोगों को स्वीकार्य होगा। अंग्रेजों का कोई भी प्रभाव भारतीय लोगों द्वारा स्वीकार नहीं किया जाएगा।

g) भारत एक संघ होगा।

h) भारत विश्व शांति और मानव कल्याण के लिए काम करेगा।

स्रोत आधारित प्रश्न –

29. दिए गए गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़िए और नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए –

"गोविंद बल्लभ पंत ने तर्क दिया कि एक वफादार नागरिक बनने के लिए। लोग केवल समुदाय और स्वयं पर ध्यान केंद्रित कर रहे थे। लोकतंत्र की सफलता के लिए आत्म-अनुशासन की कला में खुद को प्रशिक्षित करना चाहिए। लोकतंत्र में खुद की कम और दूसरों की ज्यादा परवाह करनी चाहिए। कोई विभाजित निष्ठा नहीं हो सकती। सभी वफादारी विशेष रूप से राज्य के आसपास केंद्रित होनी चाहिए। यदि लोकतंत्र में आप प्रतिद्वंद्वी वफादारी पैदा करते हैं, या आप एक ऐसी व्यवस्था बनाते हैं जिसमें कोई व्यक्ति या समूह अपनी फिजूलखर्ची को दबाने के बजाय बड़े या अन्य हितों की परवाह नहीं करता है, तो लोकतंत्र बर्बाद हो जाता है।''

a) जीबी पंत के अनुसार लोकतंत्र में एक वफादार नागरिक की तीन विशेषताएँ बताइए। 2

उत्तर. i) उसे स्वयं को आत्म अनुशासन की कला में प्रशिक्षित करना चाहिए।

ii) उसे अपनी कम और दूसरों की अधिक चिन्ता करनी चाहिए।

b) संविधान का मसौदा तैयार करते समय पृथक निर्वाचक मंडल की मांग क्यों की गई? संविधान? 2

उत्तर. संविधान सभा के कुछ सदस्यों ने महसूस किया कि की एक सार्थक भागीदारी शासन में अल्पसंख्यकों की व्यवस्था के द्वारा ही सुनिश्चित किया जा सकता है पृथक निर्वाचक मंडल। उन्होंने इस व्यवस्था को जारी रखने की पुरजोर अपील की।

30. **"ब्रिटिश तत्व चला गया है, लेकिन उन्होंने शरारत को पीछे छोड़ दिया है"**

सरदार वल्लभभाई पटेल ने कहा: यह कहने का कोई मतलब नहीं है कि हम अलग निर्वाचक मंडल की मांग करते हैं क्योंकि यह हमारे लिए अच्छा है। हमने इसे काफी देर तक सुना है। हमने इसे वर्षों से सुना है, और इस आंदोलन के परिणामस्वरूप अब हम एक अलग राष्ट्र हैं ... क्या आप मुझे एक स्वतंत्र देश दिखा सकते हैं जहां अलग निर्वाचन क्षेत्र हों? अगर ऐसा है तो मैं इसे स्वीकार करने के लिए तैयार हूं। लेकिन इस अभागे देश में यदि यह पृथक् निर्वाचक मंडल देश के बंटवारे के बाद भी बना रहेगा तो देश पर हाय! यह रहने योग्य नहीं है। इसलिए, मैं कहता हूं, यह केवल मेरे अच्छे के लिए नहीं है, यह आपके अपने भले के लिए है कि मैं इसे कहता हूं, अतीत को भूल जाओ। एक दिन, हम एकजुट हो सकते हैं...अंग्रेजों का तत्व चला गया है, लेकिन उन्होंने शरारत को पीछे छोड़ दिया है। हम उस शरारत को जारी नहीं रखना चाहते हैं। (सुन सुन)। जब अंग्रेजों ने इस तत्व को पेश किया तो उन्हें उम्मीद नहीं थी कि उन्हें इतनी जल्दी जाना पड़ेगा। वे इसे अपने आसान प्रशासन के लिए चाहते थे। वह सब ठीक है। लेकिन वे विरासत को पीछे छोड़ गए हैं। हमें इससे बाहर निकलना है या नहीं?

a) पृथक निर्वाचक मंडल के प्रावधान के विरोध में सरदार वल्लभ भाई पटेल ने क्या कहा था ?

उत्तर: सरदार पटेल ने कहा कि दुनिया के किसी भी स्वतंत्र देश में पृथक निर्वाचक मंडल का प्रावधान नहीं है।

b) पृथक निर्वाचक मंडल के दुष्परिणाम क्या थे?

उत्तर: पृथक निर्वाचक मंडल का प्रावधान देश के लिए अच्छा नहीं था। इसकी वजह से देश का बंटवारा हुआ है। इससे लोगों पर संकट आ गया है।

Sample Question Paper & Marking Scheme for Exam 2023-24 issued by CBSE

Q. No.	Value Points/Answer	Marks
	SECTION-A	
	OBJECTIVE TYPE QUESTIONS 1821=21	
1.	**Which one of the following was the main demand of the Khilafat movement?** a. Dominion status for India b. Self-rule to India c. Restoration of Caliphate of Turkey d. Revival of orthodox culture of Islam Ans – c. Restoration of Caliphate of Turkey	1
2.	**Which of the following issues did not contribute to the spread of the Revolt of 1857?** a. Issue of cartridges b. Conversion of Indians to Christianity c. Mixing of bone dust in flour d. Giving due right to the princely states Ans- d. Giving due right to the princely states	1
3.	**Who among the following was the best-known ruler of the Satavahana Dynasty?** a. Yagnasri Satakarni b. Simuka Satakarni c. Gotami-puta Siri- Satakarni d. Vashisthaputra Satakarni Ans - c. Gotami-puta Siri—Satakarni	1
4.	**Identify the picture from the given options.**	1

	 Options. a. Terracotta figure of a Satavahana ruler b. Ashoka fighting Kalinga war. c. Terracotta figure depicting a scene from Mahabharata (West Bengal) d. A sculpture depicting Krishna advising Arjuna. Ans -Terracotta figure depicting a scene from Mahabharata (West Bengal) (Pg-55) 1**NOTE: The following question is for the visually impaired candidates in lieu of Question number 4** The didactic (informative) sections of Mahabharata were added in 200- 400 CE. Which text do they largely resemble? a. Sutta Pitaka b. Manusmriti c. Rig Veda d. Upanishads Ans- b Manusmriti	
5.	**Fill in the blanks. Ashoka erected a pillar at ---------- to mark that he had visited** hat place. a. Sarnath b. Sanchi c. Bodh Gaya d. Lumbini. Ans - d. Lumbini	1
	Consider the following statements regarding Harappan Culture and choose the correct option. i. The most unique feature was the development of urban centres. ii. The settlements were divided into two sections i.e. the citadel and the lower town. iii. Drainage system was ordinary and unplanned. iv. Roads were not laid out along a grid pattern. Options a. Only (i) is correct. b. Only (i) and (ii) are correct. c. Only (ii) and (iii) are correct. d. Only (iii) and (iv) are correct. Ans- only (a) and (b) are correct	1
7	There are two statements marked as Assertion (A) and Reason (R), mark your answer as per the codes given below.	1

	Assertion (A): Asoka inscribed his messages to his subjects and officials on stone surfaces. Reason (R): He wanted to proclaim what religion should be followed by all. a. Both A and R are true and R is the correct explanation of A b. Both A and R are true but R is not the correct explanation of A c. A is true, but R is false d. A is false, but R is true Ans - c. A is true, but R is false	
8	**Identify the craft centres related to the Harapan civilization with the help of the given information.** Located near the coast. They were specialized for making shell objects. Options. a. Chanhudaro and Mahenjadaro b. Nageshwar and Balakot c. Harappa and Lothal. d. Bharuch and Dholavira Ans- b. Nageshwar and Balakot	1
9	**Who wrote the book Kitab-ul-Hind?** a. Ibn Battuta b. Al- Biruni c. Francois Bernier d. Abdur Razzaq Ans- b. Al-Biruni	1
10	**Choose the correct option from the following statements with reference to the Magadha empire.** a. Initially Pataliputra was the capital of Magadha. b. Chandra Gupta was one of the early rulers of Magadha who ruled in the 6 BCE. c. Magadha became the most powerful Mahajanapada between 6 th and 4 th BCE. d. Ashoka was the founder of Mauryan dynasty. Ans – c. Magadha became the most powerful Mahajanapada between 6 th and 4 th BCE.	1
11	**Read the following statements carefully and identify the place where this Dargah is located from the given options.** i. It is a Dargah of the Shaikh Moinuddin Chishti. ii. Akbar visited this place many times. a. Delhi b. Mehrauli c. Ajmer d. Fatehpur Sikri Ans- c. Ajmer	1
12	**Which one of the following countries was the source of cotton after the break of the American Civil War in 1861?**	1

	a. America b. Africa c. India d. Sri Lanka Ans- c. India	
13	**With reference to the role of the British officers in India, match Column-B with column-A, by using the codes given below.** **Column-A** / **Column-B** A. Lord Cornwallis / 1.Observer 14B. Augustus Cleveland / 2.Economist C. Francis Buchanan / 3.Governor General of Bengal D. David Ricardo / 4.Policy of Pacification Options a. 2, 1, 4, 3. b. 3, 1, 2, 4, c. 3, 4, 1, 2. D. 2, 3, 4, 1. Ans - c. 3, 4, 1, 2.	1
14	**Who among the following led the Flag of the Revolt 1857 against the British in Bihar?** a. Nana Sahib b. Maulvi Ahmadullah c. Kunwar Singh d .Birjis Qadr Ans – c. Kunwar Singh	1
15	**The _____was the amount assessed and _____ was the amount collected by the Mughal Kings as land revenue.** Choose the correct answer from the given options. a. Iqta and Jagir b. Jama and Hasil c. Naqdi and Iqta d. Zabti and Jama Ans- b. Jama, Hasil	1
16	**Who among the following travelled in the Vijayanagar empire in the 15th century and was greatly impressed by the fortification of the Vijayanagar?** Options a. Daurte Barbosa b. Colin Mackenzie c. Abdur Razzak d. Domingo Paes Ans - c. Abdur Razzak	1
17	**Abu'l Fazl was a court historian of which of the following Mughal emperor?** a. Humayun b. Akbar c. Babur d. Jahangir Ans – b. Akbar	1
18	**Choose the correct place from the given options.** Dussehra festival was held with great prestige and power at _____ the Vijayanagar empire. a. Hazara Rama Temple b. Virupaksha Temple c. Lotus Mahal d. Mahanavami Dibba. Ans – d. Mahanavami Dibba.	1

19	**Why was the task of defining minority rights in the Constituent Assembly difficult?** Choose the correct option from the following: - a. Different groups had different demands regarding rights. b. British did not want to include it in the constitutional frame work. c. Gandhiji opposed the idea of special rights for some sections. d. Rights of people in Princely states were ambiguous. Ans - a. Different groups had different demands regarding rights.	1
20	**Identify the name of the person from the information given below.** a. He was born at Tangier in one of the most respectable and educated family. b. He considered experience gained through travel as a source of knowledge than books. c. He had travelled extensively in middle east and few trading ports on the coast of East Africa. d. He wrote a book named Rihla Options a. Ibn Battuta b. Francois Bernier c. Al Biruni d. Domingo Paes Ans- a. Ibn Battuta	1
21	**Gandhiji asked for the remission of taxes for the peasants in which of the following movement?** a. Rowlatt satyagraha b. Champaran Satyagraha c. Kheda Satyagraha d. Salt Satyagraha Ans- c. Kheda Satyagraha	1
	SECTION B **SHORT ANSWER TYPE QUESTIONS (3*6=18)**	
22	**Describe any three features of the burial sites in Harappa.** Answer-- • Burial sites in Harappa were not so elaborate, generally they were laid in pits. • Sometimes there were hollowed out spaces lined with bricks. • Some graves contained pottery and ornaments perhaps indicating life after death. Findings in the Harappan burial site concludes that archaeologists could not trace enormous quantities of wealth buried along with the dead. Any three points to be described. **OR, Describe any three features of the 'Great Bath' used in the Harappan settlements.** Answer— The Great Bath was a large rectangular tank in a courtyard surrounded by a corridor on all four sides. • There were two flights of steps on the north and south leading into the tank, which was 3made watertight by setting bricks on edge. and using a mortar of gypsum.	3

	• There were rooms on three sides, in one of which was a large well. Water from the tank flowed into a huge drain. • Across a lane to the north lay a smaller building with eight bathrooms, four on each side of a corridor, with drains from each. bathroom connecting to a drain that ran along the corridor. • The uniqueness of the structure has led scholars to suggest that it was meant for a special ritual bath. Any three points to be described.	
23	**Critically examine the limitations of the inscriptional evidence in understanding political and economic history of India.** Answer- • Although several thousand inscriptions have been discovered, not all have been deciphered, published and translated. • Many more inscriptions must have existed, which have not survived the ravages of time. • The content of inscriptions almost invariably projects the perspective of the person(s) who, commissioned them. • Routine agricultural practices and the joys and sorrows of daily existence find no mention in inscriptions. • From the mid-twentieth century onwards, issues such as economic change, and the ways in which different social groups emerged have assumed far more importance for the historians which led to fresh investigations of old sources, and the development of new strategies of analysis. • Thus, the inscriptions had limitations in interpreting the political and economic history of India. Any three points to be examined	3
24	**"India had unique system of communication during the 14th century" Examine the statement made by Ibn Battuta**. Answer- • Ibn Battuta was amazed by the efficiency of the Communication system present in the Fourteenth century in India. • He described that the postal system which allowed merchants to not only send information and remit credit across long distances, but also to dispatch goods required at short notice. • According to him the India the postal system is of two kinds. The horse post, called uluq, is run by royal horses stationed at a short distance of every four miles, and the other was the foot-post which has three stations per mile; it is called dawa.	3

	• The postal system was so efficient that while it took fifty days to reach Delhi from Sind, the news reports of spies would reach the Sultan through the postal system in just five days. • At every third mile outside a village were three pavilions in which men used to sit with girded loins ready to start. Each of them carries a rod, two cubits in length, with copper bells at the top. When the courier starts from the city, the man holds the letter in one hand and the rod with its bells on the other; and he runs as fast as he can. When the men in the pavilion hear the ringing of the bell, they get ready. As soon as the courier reaches them, one of them takes the letter from his hand and runs at top speed shaking the rod all the while until he reaches the next dawa, the same process continues till the letter reaches its destination. This foot-post is quicker than the horse-post. Any three points to be examined	
25	**Analyse the main features of Amara nayaka system which was introduced in the Vijayanagar Empire.** Answer- • The Amara-nayaka system was a major political innovation of the Vijayanagar Empire. It is likely that many features of this system were derived from the iqta system of the Delhi Sultanate. • The Amara-nayakas were military commanders who were given territories to govern by the raya. • They collected taxes and other dues from peasants, crafts persons and traders in the area. They retained part of the revenue for personal use and for maintaining a stipulated contingent of horses and elephants. • These contingents provided the Vijayanagara kings with an effective fighting force with which they brought the entire southern peninsula under their control. Some of the revenue was also used for the maintenance of temples and irrigation works. • The Amara-nayakas sent tribute to the king annually and personally appeared in the royal court with gifts to express their loyalty. Kings occasionally asserted their control over them by transferring them from one place to another to prove their control over the Amara nayakas. Any three points to be described.	3
26	**"The Burdwan auction had a strange twist and was considered as a big public event in 1797", explain the statement.** Answer • The East India Company had fixed the revenue that each zamindar in their territories in India had to pay.	3

	• The estates of those who failed to pay the revenue, were auctioned. Raja of Burdwan had failed to pay the revenue. His estates had been put up for auction. • Numerous purchasers came to the auction and the estates were sold to the highest bidder. But the Collector soon discovered a strange twist to the tale. • A British collector had soon discovered that many of the purchasers were servants and agents of Raja who had bought the land on behalf of their master. • Over 95 per cent of the sales at the auction was fictitious. • The Raja's estates had been publicly sold, but he remained in control of his zamindari. This incident was a strange twist in the auction of estates of Raja of Burdwan Any three relevant points to be explained.	
27	**"The relationship of the sepoys with the superior white officers underwent a significant change in the years preceding the uprising of 1857", support the statement with examples.** Answer • The relationship of the sepoys with their superior white officers underwent a significant change in the years preceding the uprising of 1857. • In the 1820s, white officers made it a point to maintain friendly relations with the sepoys. They would take part in their leisure activities – they wrestled with them, fenced with them and went out hawking with them. Many of them were fluent in Hindustani and were familiar with the customs and culture of the country. These officers were disciplinarian and father figure rolled into one. • In the 1840s, this began to change. The officers developed a sense of superiority and started treating the sepoys as their racial inferiors, riding roughshod over their sensibilities. • Abuse and physical violence became common and thus the distance between sepoys and officers grew. • Trust was replaced by suspicion. The fears of the sepoys about the new cartridge, their grievances about leave, their grouse about the increasing misbehaviour and racial abuse on the part of their white officers were communicated back to the villages. Any three points to be explained. **OR "A cherry that will drop into our mouth one day", who made this remark? Explain the series of events that eventually led the cherry to fall into the mouth of the British** Answer "A cherry that will drop into our mouth one day", who made this remark?	

	(1) Explain the series of events that eventually led the cherry to fall into the mouth of the British (2) In 1851 Governor General Lord Dalhousie described the kingdom of Awadh as "a cherry that will drop into our mouth one day". • Five years later, in 1856, the kingdom was formally annexed to the British Empire. The conquest happened in stages. • The Subsidiary Alliance had been imposed on Awadh in 1801. • As per the terms of this alliance the Nawab had to disband his military force allowed the British to position their troops within the kingdom and act in accordance with the advice of the British Resident. 3 • Deprived of his armed forces the Nawab became increasingly dependent on the British to maintain law and order within the kingdom, Nawab Wajid Ali Shah was dethroned and exiled to Calcutta on the plea that the region was being misgoverned. Any other relevant points.	
SECTION C LONG ANSWER TYPE QUESTIONS 3x8=24		
28	**"The Mahabharata is an invaluable source available to historians to study social practices and norms in early societies", Justify the statement.** Answer- • Mahabharata a dynamic epic-contains vivid descriptions of battles, forests, palaces & settlements. • Its growth was not hindered by its language. • Over the centuries it has been written in many languages of the world. • It depicts an on-going dialogue between the people & communities on the one hand and the authors on the other hand. • It incorporated many stories that originated in different regions. • Main story of the epic was often retold in different ways. • Many episodes of this text had been depicted in sculptures and paintings. • They also provide a wide range of themes & performing arts like plays, dances, and narratives. Any eight points to be explained. **OR Examine the elements analysed by the historians on the text of Mahabharata.** Answer- • Historians often use textual traditions or content of text to understand the processes. Some texts lay down. Norms of social behaviour; others describe and occasionally comment on a wide range of social situations and practices.	8

	• They can also catch a glimpse of some social actors from the inscriptions. As each text and inscription was written from the perspective of specific social categories, we need to keep in mind who composed what and for whom and when (the authors, the time and period). • They also need to consider the language used, and the ways in which the text circulated. Used carefully, texts allow us to piece together attitudes and practices that shaped social histories. • Two things became apparent: there were several common elements in the Sanskrit versions of the story, evident in manuscripts found all over the subcontinent, also evident were enormous regional variations in the ways in which the text had been transmitted over the centuries. These variations were documented in footnotes and appendices to the main text. • The understanding of these processes is derived primarily from texts written in Sanskrit. • When issues of social history were explored for the first time by historians in the nineteenth and twentieth centuries, they tended to take these texts at face value – believing that everything that was laid down in these texts was practised. Subsequently, scholars began. studying other traditions, from works in Pali, Prakrit and Tamil. • These studies indicated that the ideas contained in normative Sanskrit texts were overall recognised as authoritative and important. These elements were considered by historians while examining the text for reconstructing the social histories. Any other relevant points	
29	**Examine the evidence that suggests land revenue was important for the Mughal Fiscal system.** Answer- • Revenue from the land was the economic mainstay of the Mughal Empire. It was therefore vital for the state to create an administrative apparatus to ensure control over agricultural production, and to fix and collect revenue from across the length and breadth of the rapidly expanding empire. • This apparatus included the office (daftar) of the diwan who was responsible for supervising the fiscal system of the empire. • Revenue officials and record keepers penetrated the agricultural domain and became a decisive agent in shaping agrarian relations. • The Mughal state tried to first acquire specific information about the extent of the agricultural lands in the empire and what these lands produced before fixing the burden of taxes on people.	8

• The land revenue arrangements consisted of two stages – first, assessment and then actual collection. The jama was the amount assessed, as opposed to hasil, the amount collected.

• Akbar decreed that while he should strive to make cultivators pay in cash, the option of payment in kind was also to be kept open. While fixing revenue, the attempt of the state was to maximise its claims.

• Both cultivated and cultivable lands were measured in each province. The Ain compiled the aggregates of such lands during Akbar's rule.

• Aurangzeb expressly instructed his revenue officials to prepare annual records of the number of cultivators in each village. Yet not all areas were measured successfully. Any eight points to be analysed.

OR Examine the condition of zamindars in Mughal agrarian society.

Answer-- • The zamindars who were landed proprietors who also enjoyed certain social and economic privileges by virtue of their superior status in rural society.

• Caste was one factor that accounted for the elevated status of zamindars, another factor was that they performed certain services (khidmat) for the state.

• The zamindars held extensive personal lands termed milkiyat, meaning property. Milkiyat lands were cultivated for the private use of zamindars, often with the help of hired or servile labour.

• The zamindars could sell, bequeath, or mortgage these lands at will. Zamindars also derived their power from the fact that they could often collect revenue on behalf of the state, a service for which they were compensated financially. Control over military resources was another source of power. Most zamindars had fortresses (qilachas) as well as an armed contingent comprising units of cavalry, artillery, and infantry.

• if we visualise social relations in the Mughal countryside as a pyramid, zamindars clearly constituted its very narrow apex. Abu'l Fazl's account indicates that an "upper-caste", Brahmana-Rajput combine had already established firm control over rural society. It also reflects a fairly large representation from the so-called intermediate castes, as well as a liberal sprinkling of Muslim zamindaris.

• Contemporary documents give the impression that conquest may have been the source of the origin of some zamindaris. The dispossession of weaker people by a powerful military chieftain was quite often a way of expanding a zamindari.

	• It is, however, unlikely that the state would have allowed such a show of aggression by a zamindar unless he had been confirmed by an imperial order (sanad). • More important were the slow processes of zamindari consolidation, which are also documented in sources. This involved colonisation of new lands, by transfer of rights, by order of the state and by purchase. These were the processes which perhaps permitted people belonging to the relatively "lower" castes to enter the rank of zamindars as zamindaris were bought and sold quite briskly in this period. (Any eight points)	
30	**'The Quit India Movement genuinely was a mass movement' justify the statement.** Answer: After the failure of the Cripps Mission, Mahatma Gandhi decided to launch his third major movement against British rule. "Quit India" was genuinely a mass movement, bringing into its ambit hundreds of thousands of ordinary Indians. It especially energised the young who, in very large numbers, left their colleges to go to jail. • Failure of Cripps Mission led to the launch of Quit India movement in August 1942 for the liquidation of British imperialism. • Dissatisfaction from the Govt. of India act 1935. • Gandhi ji and other important leaders were arrested and jailed. • The mass movement was left to the young people of India. • Younger activists organised strikes and acts of sabotage. • Brought into the movement hundreds of Indians. • Socialist members like Jayaprakash Narayan were very active in the underground resistance. • 'Independent' govt. Was proclaimed in many districts like Satara, Medinipur, etc. • British used force to suppress the movement but failed. • Thousands of ordinary citizens joined the Movement. • Young people participated in large numbers. • Muslim League was working on expanding its base. • In 1944, Gandhi was released from jail. Elaborate the points given above. Any eight points.	8

	OR Examine the different kinds of sources from which the political career of Gandhiji and the history of the National movement could be reconstructed. Answer: In the history of nationalism, a single individual is often identified with the making of a nation. Mahatma Gandhi has been regarded as the 'Father' of the Indian nation. In so far as Gandhiji was the most influential and revered of all the leaders who participated in the freedom struggle. Mahatma Gandhi's political career was shaped and constrained by the society in which he lived. There are many kinds of sources from which we can reconstruct the political career of Gandhiji and the history of the nationalist movement. The Sources to know about mahatma Gandhi and nationalist role are-- • Public voice and private scripts • Speeches of Gandhiji and his contemporaries on his political role. • Personnel and private letters on political & private thoughts about the country. • Journals published by the govt etc. • Autobiographies retrospective account • Records written by policemen & officials. • Newspapers on the conversion of political movement into mass movement. • Records prepared by home ministry department. • Information from the localities and common people. • Pictures of Gandhi reveal how he was perceived by the people. • Fortnightly reports of various provinces. Elaborate the points given above. Any eight points	
	SECTION -D **SORCE BASED QUESTIONS 3*4=12**	
31	**Read the following source carefully and answer the questions that follow.** **The world beyond the palace** Just as the Buddha's teachings were compiled by his followers, the teachings of Mahavira were also recorded by his disciples. These were often in the form of stories, which could appeal to ordinary people. Here is one example, from a Prakrit text known as the Uttaradhyayana Sutta, describing how a queen named Kamalavati tried to persuade her husband to renounce the world: If the whole world and all its treasures were yours, you would not be satisfied, nor would all this be able to save you. When you die, O king and leave all things behind, dhamma alone, and nothing else, will save you. As a bird dislikes the cage, so	4

	do I dislike (the world). I shall live as a nun without offspring, without desire, without the love of gain, and without hatred …Those who have enjoyed pleasures and renounced them, move about like the wind, and go wherever they please, unchecked like birds in their flight … Leave your large kingdom … abandon what pleases the senses, be without attachment and property, then practise severe penance, being firm of energy…. 31.1 Identify the person who persuaded the king to renounce the world. (1) 31.2 "Oh king, dhamma alone and nothing else will save you"-. What does the word "dhamma" signifies and whose teachings was followed by the disciple. (2) 31.3 Under which context the following statement "unchecked like birds in their flight……." was told by the disciple of Mahavira? (1) Answer- 31.1-The queen Kamalavati persuaded the king to renounce the world. 31.2- Dhamma refers to "the truth", that can save one, nothing else. The disciple was following the preaching's of Mahavira. 31.3 - One who has left the worldly pleasures, will flow like a wind and fly like a bird without any worries. He wanted people to Detach from everything, let go of what gives pleasures and creates desire.	
32.	**Read the source carefully and answer the questions that follow:** **A demon?** This is an excerpt from a poem by Karaikkal Ammaiyar in which she describes herself: The female Pey (demoness) with . . . bulging veins, protruding eyes, white teeth and shrunken stomach, red haired and jutting teeth lengthy shins extending till the ankles, shouts and wails while wandering in the forest. This is the forest of Alankatu, which is the home of our father (Shiva) who dances … with his matted hair thrown own in all eight directions, and with cool limbs. 32.1. How beauty has been personified by Karaikkal Ammaiyar? (1) 32.2. "Bulging veins, protruding eyes, white teeth and shrunken stomach", "Shouts and wails" State the reason behind the poet's condition in the excerpt given. (2) 32.3. Examine the phrase ".With his matted hair thrown in all eight directions" (1) Answer32.1. Karaikal Ammaiyar personified beauty as "Pey" or Demoness" 32.2 The poet was mad as she was shouting and wailing in the devotion of Lord Shiva and she was desperately searching for him in Alankadu and hence her appearance has become "Bulging veins, protruding eyes, white teeth and shrunken stomach."	4

	32.3. The Phrase infers Lord shiva dancing in Alankadu where in, his matted hair was thrown in all eight directions while dancing with his limbs freely moving in the air.	
33	Read the following source carefully and answer the questions that follow: "The British element is gone, but they have left the mischief behind". Sardar Vallabh Bhai Patel said: It is no use saying that we ask for separate electorates, because it is good for us. We have heard it long enough. We have heard it for years, and as a result of this agitation we are now a separate nation … Can you show me one free country where there are separate electorates? If so, I shall be prepared to accept it. But in this unfortunate country if this separate electorate is going to be persisted in, even after the division of the country, woe betide the country; it is not worth living in. Therefore, I say, it is not for my good alone, it is for your own good that I say it, forget the past. One day, we may be united … The British element is gone, but they have left the mischief behind. We do not want to perpetuate that mischief. (Hear, hear). When the British introduced this element, they had not expected that they will have to go so soon. They wanted it for their easy administration. That is all right. But they have left the legacy behind. Are we to get out of it or not? CAD, VOL.V 33.1. 'They have left a legacy behind "who is referred as' They' 'in this statement. (1) 33.2. What do you infer from the statement 'they have left the legacy behind Are we to get out of it or not'? (2) 33.3. Identify the ultimate message stressed by Sardar Valla Bhai Patel in his speech. (1) Answer33.1. The British 33.2. The British did not want Indians to be united, they applied divide and rule policy, for their easy administration and they created a division which had affected the life of the people/ entire nation and hence the need to get out of it was insisted. 33.3. He was urging the people of our country not to adopt the legacy left behind by the British called 'separation"/divide and rule policy.	4
34.	34.1 On the given political map of India, locate and label the following with appropriate symbols: (3) a. Kalibangan, a Harappan site b. Agra, a territory under Babur, Akbar, and Aurangzeb c. Sanchi, a Buddhist site OR d. Ajanta, a Buddhist site 34.2. On the same outline map, two places have been marked as A and B, which are centres of the National movement. Identify them and write their correct names on the lines drawn near them. (2)	3+2

34.2. - Ans- A- Amritsar B- Champaran

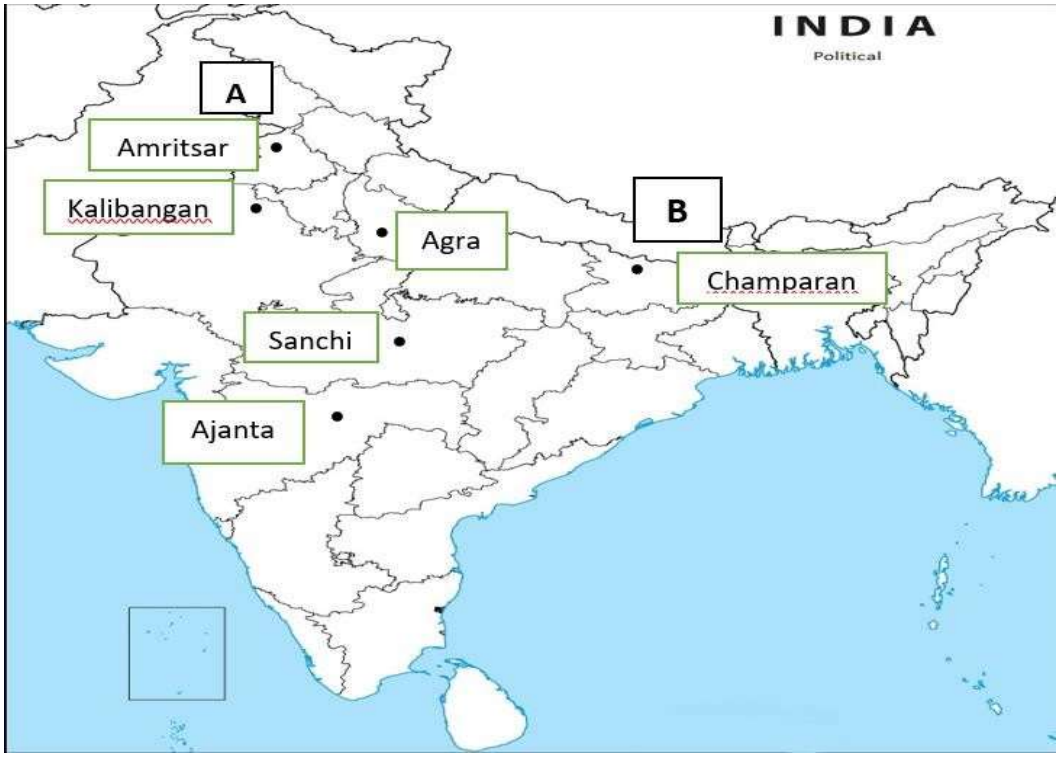

Note: The following questions are for the Visually Impaired Candidates only in lieu of Q.No.34

34.1. (a) Mention any two sites of Harrapan period.

34.2(a) Mention any one Territory under Ashokan empire.

OR

	(b)Where is Brihadishvara temple located? 34.3. Mention any two centres of the Gandhian movement. Ans- 34.1. (a)- Harappa, Banawali, Kalibangan, Balakot, Rakhigarhi, Dholavira, Nageswar, Lothal, Mohenjodaro, Chanhudaro, KotDiji (Any two) Ans- 34.2. (a)-Delhi, Agra, Panipat, Amber, Ajmer, Lahore, Goa. (Anyone) OR Ans- (b)---Thanjavur 34.4- Champaran, Kheda, Ahmedabad, Benaras, Amritsar, Chauri Chaura, Lahore, Bardoli, Dandi, Bombay, Karachi (Any two)	